अभिनंदन सेवौं जगदीश । जोरिहाथ चरनन धरि शीश ॥
सुमतिसुमतिमतिकरणमहंत ।कुमतवुद्धिनाशनशुभसंत ॥८॥
पदमप्रभ बंदौं जगसार । लहौं ज्ञान पाऊं शिवद्वार ॥
श्रीसुपार्श्व पूजों मनलाय । हरितवरण शोभै जिनकाय ॥९॥
चंद्रप्रभ बंदौं धरि ध्यान । करम काटि पहुँचे निरवान ॥
पुष्पदंत परमेश्वर देव । सुर नर सेव करैं खग एव ॥१०॥
नमौं नाथ शीतल जिनराय । पापहरण भव भव सुखदाय ॥
श्रीश्रेयांश नमों करजोरि । वरीमुक्तिं सब परिगहछोरि ॥११॥
बंदों बासुपूज्य भगवान । चंपापुरि पहुंचे शिवथान ॥
नमौ नमो जिनविमल जिनेश । हरौ सबहि संसारकलेश ॥१२॥
अनँतनाथ बंदौं जिनराज । विघनहरण सारन शिवकाज ॥
धरमनाथ सेवौं मनलाय । बाढ़ै धर्म असुभ क्षयजाय ॥१३॥
जय जय स्वामी शांति जिनंद । नामलेत भाजें दुखदंद ॥
कुंथुनाथ सेवौं अरहंत । कनक बरनतन अति सोभंत ॥१४॥
अरजिनवरकी सेवा करौं । मनवचकाय चित्तमैं धरों ॥
नमो देव श्री मल्लिजिनंद ।सुमरत होय सिद्ध आनंद ॥१५॥
मुनिसुव्रत बंदौं जिनराय । वंदत पाप दूरि सब जाय ॥
नमिजिनवर बंदौं विख्यात । स्वामी करो करमको घात ॥१६॥
बंदौं नेमिनाथ गिरिनारि । बरीमुकति, तजिं राजुलनारि ॥
पार्श्वनाथजिन त्रिभुवनचंद । सुमिरत कटैं पापके वृंद ॥१७॥
महावीर बंदौं जगसार । धर्मतनौं राख्यो व्यौहार ॥
अंतिम जिनवर जग आधार । पंचनाम जाके सुखकार ॥१८॥
तिनहींने उपदेश्यो धर्म । अबलौं व्यापि रह्यो जगपर्म ॥

सिद्धारथ कुंडलपुरपती । प्रियकारिनि जाके घर सती ॥१९॥
ताके उदरथकी जिनराज । उपजे तारन तरन जिहाज ॥
बालपनै जिन दीक्षा धरी । कीरति जिनकीजगविस्तरी ॥२०॥

दोहा ।

पंच नाम जिनके कहे, जग तारण सुखकार ।
सो सुनिये मनलायकें, भव्य जीव चितधार ॥२१॥

सोरठा ।

प्रथम नाम है वीर, वर्द्धमान जिन राज है ।
सन्माति अरु अतिवीर, महावीर पंचम कह्यो ॥२२॥

चौपाई ।

पंच नाम जिनके सुखकार । जपैं जीव पावैं शिवद्धार ॥
चारिबीस बंदौं जिनराय । बिहरमान बंदौं सुखदाय२३॥
जय जय सीमंधर भगवान । सुमिरत होय पापकी हान॥
अंतम अजितवीर्य जगदीश । द्वैकर जोरि नमौ धरशीश२४॥
काल चतुर्थ सदा जहँ रहै । भविजन मोक्ष सदाही लहै ॥
बीस तीर्थंकर जपि गुणमाल । प्रणमत होय दूर भ्रमजाल२५॥
दीप अढ़ाईमें मुनि भए । निर्भय अभय अगोचर ठए ॥
तिनके चरण नमौ करजोरि । जातैं कटै सकल भ्रमडोरि२६॥

पद्धड़ी छंद ।

पुनि पंच परम परमेष्टि देव । मनवचक्रमकरि नित करौं सेव ॥
जयनमौ देव अरहंत ईश । तसु गुण अनंत प्रगटे सुदीश ॥२७॥
जय नमौ सिद्धवर देवनाथ । जय अलखरूप त्रिभुवन सनाथ॥
जयजयआचारजगुणगहीर । पूजतसुरनरखगमुनिशरीर२८॥
जय नमौ परम उवझाय देव । तसु उद्दित गुण जगमैं सुएव॥

जयसाधुनमौ करजोरिवीर । अम्मृतसम वचनमहागहीर२९॥
तिनको बंदों कर जोरि जोरि । काटैं भवभव भ्रमजाल डोरि॥
अरु प्रणमौं गणधर गुणगहीर । चौदहसै त्रेपन धीर वीर॥३०॥
गुरदेव शास्त्र बंदौं महान । मति लहौं कुमतिकी होय हान॥
गुरुबंदौंनिजमनत्यागिमान । उपजैबुधितिनतैंबहुनिधान३१॥

दोहा ।

जिनमुखअम्बुजतैं कढ़ी, त्रिभुअनमें विख्यात ।
द्वादशांग भाषन कही, नमौं शारदा मात ॥ ३२ ॥

चौपाई ।

विमलवरण वेदनमें कही । स्यादवाद गुण लच्छन सही ॥
जासुप्रसाद विमलमाति लहैं । गुणकी खानिसुधीसव कहैं३३॥
षटदरशन मुखमंडन सार । गलैं सांकरी मुक्ताहार ॥
कानन कुंडल मणिमय सार । मुक्ता माणिक मांग सम्हार ३४॥
पग नेवर बाजें पैंजनी । लागे माणिक हीरा कनी ॥
पहिरे उज्वल वरण सुचीर । कनककांतिसम दिपै शरीर ३५॥
लिये बीन कर चढ़ी मराल । भारति शारद गुणह विशाल ॥
मूरख सुमिरे पंडित होय । पापपंकको डारै धोय ॥ ३६ ॥
बार बार प्रणमूं धरि भाउ । शारद मोपर करौ सहाउ ॥
हीनबुद्धि मेरी अतिमंद । करिनो चहों चौपईबंद ॥ ३७ ॥
चारुदत्त श्रेष्ठीकी कथा । सुनत भजै पातक सरबथा ॥
मूरख हौं अति अपढ़ अजान।लघुदीरघ जानौं नहिं वान ३८॥
भारति मोपर कर उपगार । उपजै बुद्धि होय विस्तार ॥
तुम प्रसाद कर लेखनि गहौं । सेठकथा बिधसेती कहौं ॥३९॥

कुंडलिया

माय शारदा सुमति दै, कहौं चरित्र बनाय ॥
हीनबुद्धि निज ध्याव हीं, कृपा करो बिहसाय ॥
कृपा करो बिहसाय माय तुम सब सुख करनी ॥
दीजै बुद्धि गणेश[1] शेश खग मुखतैं वरणी ॥
हाथ जोरि करि कहौं भाग्यतैं हमने पाई ॥
बुद्धि हमारी हीन सुमति दै शारद माई ॥ ४० ॥

सोरठा।

विद्या अरु भंडार, जो मांगै सो पाइये।
किमि आयो संसार, जापै वरु तेरो नहीं ॥ ४१ ॥

दोहा।

जोरि पाणि तुम चरनकों, नमत सु बारं बार।
करौ सुमति जनमल्लकौं, होय कथन विस्तार ॥ ४२ ॥
देवशास्त्र गुरु बंदना, करि मनमें सुखपाय।
चारुदत्त चारित्र इह, कहौं सुनौ भवि भाय ॥ ४३ ॥
आगैं आचारज भये, सोमकीर्ति गुणराशि।
तिन यह कीनौ चरितवर[2], स्वयं शक्ति परकाशि ॥४४॥

चौपाई।

ज्यौं उन रच्यो चरित सुखदाय। गुरुबुधि नाना भेद बताय॥
त्यौं उनकी सरबर नहिं होय। वेतौ ज्ञानवान बहु लोय।४५।
पर हौं तुच्छ बुद्धिधरिचित्त। निजबुधि माफक रचहुँ चरित्त॥
जैसें जल गंगाको लेय। फेरि धार गंगाको देय ॥४६॥
बड़े पुरुष जे जगमैं कोय। तिन सरवरि तुछ बात न होय॥

१ गणधर। २ श्रेष्ठ।

तौ बे आचारज गुणवान। कीनौ अनुपम चरित बखान॥४७॥
हौं पुनि निजबुधिके अनुसार । रचिहौं चारुदत्त गुण सार॥
मैं संक्षेप चरित अब कहौं । पूरवरचित अनुक्रम लहौं ॥४८॥
भव्यजीव सुनिये मनलाय । महापुण्य फलदाइक भाय ॥
सुनत चरित सुर शिव सुखहोय।महिमा और बतावै कोय॥४९॥

सोरठा ।

लोक तीनिपरकार, सुरपुर नरपुर नागपुर ।
तिनमैं है शिरदार, मध्यलोक महिमा अतुल ॥५०॥

अड़िल्ल ।

द्वीप अढ़ाई जासुमझार विराजहीं ।
उपजें जहँ सुभलोय मुकतिके काजहीं ॥
तिनके मध्य जु द्वीप होय शिरदार है ।
जंबू दीप जु सोय कहावे सार है ॥५१॥

चौपई ।

असंख्यात दीपनमैं जान । जंबूदीप मध्य परवान ॥
ज्यौं चक्री नृपगणमैं आय । त्यौं इह दीपनमैं सोभाय॥५२॥
जंबुदीप जाने सब कोय । सब दीपनमें उत्तम सोय ॥
ताके मध्य सुदर्शन मेर । ताहि रह्यो लवणोदधि घेर॥५३॥
सोभै जोजन लाख प्रमान । जोजन सहसदश मोटो जान ॥
षोड़श जिनपर बने अवास । सोभत चारौं वन चहुँपास ॥५४॥
भद्रशाल नंदन सुभ जान । अरु सौमानश पांडु बखान ॥
तिनकी महिमा अगम अपार। कबलग भाषौं सब विस्तार॥५५॥

दोहा ।

पूरब पश्चिम मेरुकी, क्षेत्र विदेह बखान ।

उत्तर ऐरावत कह्यो, दक्षिण भरत प्रमान ॥५६॥

पद्धड़ी छंद।

यह भरतक्षेत्र क्षेत्रनप्रधान। ता मधि षटखंड विराजमान॥
आरज इक पंच मलेच्छ जान। भाखेश्रीजिनवर गुणनिधान॥
जिनवर चौवीस जहाँ सु होय। चक्री हरि इत्यादिक जुलोय॥
अरुआरजअवरजुहोंयजीव। तसुआरजनामकहैंसदीव ॥५८॥
सो आरजखंड महाप्रधान। तामध्य देश नाना महान॥
जहँमुनिवरकरतविहारनित्त। उपदेशदेतभविजनसुचित्त॥५९॥

दोहा।

सुरग मुकति जहँतैं लहैं, भव्यजीव सुखकार।
पूजनीक तहँकी मही, सबदेशन शिरदार ॥६०॥

चौपाइ।

तामधि देश मगध शिरमौर। जहां बने बहु अदभुत ठौर॥
वापी कूप बने बहु बाग। करैं कोकिला पंचम राग ॥६१॥
ताल तोयानिरमलसों भरे। कमल कुसुमसों सोभित खरे॥
बन उपबन सर सोभा घनी। वृच्छजाति सो जाय न गनी॥
फल अरु फूल लगे बहु भाय। पंथीजनकी भूख पलाय॥
उपमा कहत न आवै पार। बाढ़ै कथा होय विस्तार ॥६३॥
बस्तु मनोहर दीखै भली। अरु सेवक मन उपजे रली॥
नगर बसहि राजग्रहि थान। सोभै जैसैं सुरग बिमान ॥६४॥
गढ़ मढ़ खाई कोट उतंग। तोरन चारौंदिशि सुभ रंग॥
मुनिवरनाथ धरहिं तहँ ध्यान। कंचनत्रण जिन एक समान॥
ऋद्धिवंत जोगीश्वर धीर। परिगहत्यागि बसे बन वीर॥
करैं घोर तप मनबचकाय। सहैं परीषह बाइस भाय ॥६६॥

केवल पाय मुकति सो जाय। फेरि न आवागमन कराय ॥
नगर मध्य सोभत जिनथान। कंचनकलश धरे असमान६७॥
चमर छत्र सिंहासन सार। सोभित तोरण बंदनवार ॥
जिनवरबिंब धरे तिनमाहिं। पूजत श्रावकजन हुलसाहिं६८॥
घर घर बिंबप्रतिष्ठा होय। खरचैं द्रव्य सबै भवि लोय ॥
ऊंचे मंदिर पौरि पगार। सात भूमि ऊपर विस्तार॥ ६९ ॥
और कहा महिमा बहु कहैं। देव जहांपर उतपति चहैं ॥
पुरकी महिमा है बहु घनी। सो मोपर सब जाय न भनी ७०॥
राज करै श्रेनिक नृप जहां। सुखकरि राजत हैं सुभतहां ॥
पालै परजा न्याय समान। सबकौं मनबांछित सुखदान॥७१॥
धर्म सुभावी श्रुत आचार। नीतिशास्त्रको जाननहार ॥
कल्पवृक्ष सम दाता जान। भोगी जानौ इंद्र समान ॥ ७२ ॥

दोहा।

सूरज सम परताप जस, रूप जिस्यौ वर काम।
बुद्धि जिसी शारद सुता, कांति जिसी शशिधाम ॥७३॥
पररमनी परद्रव्यको, जाकैं त्याग सदीव।
इत्यादिक गुण जाविषैं, कहि नहिं सकौं अतीव ॥७४॥
पुहमिपाल ऐसो नृपति, राज करै सुखकारि।
सती चेलना तासुघर, रानी है पटनारि ॥ ७५ ॥

अडिल्ल।

सर्व कला संयुक्त रूपगुण सोहनी।
चंद्रमुखी मृग नयनि सबन मन मोहनी ॥
सोभत चालिमराल बचनपिक चातुरी।
लक्षण सिंधुसमान शीलगुण गातुरी ॥७६॥

चौपाई।

कामदेवके ज्यौं रतिनारि। ज्यौं शशिके रोहिनि शिरदार॥
ज्यौं हरिके इंद्रानी कही। त्यौं नृपघर जु चेलना सही॥७७॥
शीलबती अरु गुणकी खानि। पतिकौं प्यारी अधिक सु जानि॥
धर्मध्यानमें राखे चित्त। जिनयात्रादि उछाह पवित्त॥७८॥
नितप्रति चारौं दान कराय। तासौं लहै सुरगपद जाय॥
ताके गुणको वरणन कहौं। बढ़ै कथन कछु अंत न लहौं॥७९॥
नगरीमाहिं बसैं बहु लोय। दीन दुखी दीखै नहिं कोय॥
ताके राज करैं सब भोग। पानफूल रस नाना जोग॥८०॥
सकल प्रजा निज सुखमें रहै। काहूकी भय नाहीं लहै॥
निरभय सर्व सुखीजन सदा। नृपआज्ञा मानै सर्वदा॥८१॥
एक दिना निजसभामझार। बैठे नृपति जोरि दरबार॥
सिंहासन बैठे विहसाय। ऊपर चँदवा छत्र तनाय॥८२॥

दोहा।

राजमंत्र सब करत जहँ, सोभित श्रेणिकराय।
बनपालक आयो तबै, शिरनायो बहु भाय॥८३॥

सोरठा।

षटऋतुके फल फूल, अवर हरी इत्यादि बहु।
धरेरायके कूल, हाथ जोरि लाग्यो कहन॥८४॥

चौपाई।

हे राजनके शिर राजान। विपुलाचल परवत सुभथान॥
आयो समवशरण भगवंत। बर्द्धमान स्वामी अरहंत॥८५॥
दर्शन करत पाप सबजाय। अमरलोक तिहठां रह्योआय॥
इंद्र चंद्र खग सेवत शेश। तिनकों नमत बहुत अमरेश॥८६॥

जिनथुति करत देव बहुभाय। खड्गासन सब सोभित राय॥
तिनकी महिमा कही न जाय। अतिशय और सुनौ हो राय॥८७॥
षटऋतुके फलफूल अपार। सब फूले नाना परकार॥
ताल तमाल भरे सब तोय। सोभा देखत बहुसुख होय॥८८॥

सोरठा।

गऊ सिंघ इकथान, बैठे बहुत सनेहसौं।
मंजारी अरु स्वान, मूषकादि बहु जीव तहँ॥ ८९॥

दोहा।

नेह सबनमैं परस्पर, बैरभाव नहिं कोय।
आनँद बहु राजैं सकल, निज निज कोठा सोय॥९०॥

गीता छन्द।

होत कौतूहल सु बहुविध बजत दुंदभि जोर हैं।
तहँ अमर खेचर नटत गंध्रब करत भक्ति जु घोर हैं।
जहँ तीनलोक विभूति राजत बंदने सब आवहीं।
महिमा बड़ाई कहत जिनकी पार को नर पावहीं॥९१॥

चाल छंद।

ऐसी सुनि श्रेणिकराई। आनंद्यो अंग न माई॥
तब ताऽहि पसाव जु कीनो। तसु दान ततक्षण दीनो॥९२॥
भूषण आभरण अपार। बहु दीने लागि न बार॥
आसन तैं उठि जब राई। उपज्यो सुख बहु मनमाहीं॥९३॥
आगें चाल्यो पद सात। कर जोर नम्यो जिननाथ॥
पुर आनँद भेरि दिवाई। चलियै पूजन जिनराई॥९४॥
राजा निज सैना साजी। जिन पूजन मन अहलादी॥
पटबंध चेलना रानी। परिवार सहित अगवानी॥९५॥

परजा लीनी सब साथ। पूजन चाले जिननाथ॥
सब द्रव्य सम्हार जु लीनी। जिनपूजन जोग भलीनी॥९६॥

चौपाई।

गुण बरनत सब पहुंचे तहां। समवशरण जिनवरको जहां॥
निजबाहनतें उतरे सबै। मानस्थंभ देखियो जबै॥ ९७॥
बारह कोठा सोभित खरे। कनक कुंभ तिन ऊपर धरे॥
धनपति आय आप निर्मयो। चहिये जहां तहां सो ठयो॥९८॥
मणि माणिकमय खचित अपार। तीनकोट सोभित दरबार॥
जाकी सोभा बरनि जु कहौं। बाढ़ैकथा अंत नहिं लहौं॥९९॥

दोहा।

जय जय जय सब करतनर, कीनो तहां प्रवेश।
बहु आनंद मनमें लयो, छबि अविलोक नरेश॥१००॥

सोरठा।

श्रीजिन अतिशय वंत, ज्ञान उपायो जगतमें।
प्रातहार्य वसु भंत, सोभित जिनसमवोशरण॥१०१॥
सिंहपीठ सोभंत, मणिमय कंचन जड़ितसो।
अतरीक्ष अरहंत, सोभित जिनमूरति सुभग॥१०२॥

अड़िल्ल।

चौसठि चमर ढुरंत सु भामंडल महा।
तनकी क्रांति निहारि कोटि रवि लुकि रहा॥
सर्व शोक अपहारि अशोक निहारिये।
कल्पवृक्ष के फूल सुवृष्टि अपारिये॥ १०३॥
साड़ेबारह कोटि जाति बाजे बजैं।
तिनके सोर अपार होत जगमें गजैं॥

सब संदेह निवारि जु भाषा देवकी।
बानी खिरै त्रिकाल जिनेश्वर देवकी ॥ १०४ ॥

दोहा।

निज निज कोठा जीव सब, बैठे आनंद रंग।
भाषा उछरे देवकी, समझै सबजिय अंग ॥ १०५ ॥

सोरठा।

दई प्रदक्षिण तीन, भूपधोक करजोरिके।
बहु आनंदमें भीनि, नृप अस्तुति लाग्यो करन ॥१०६॥

पद्धड़ी छंद।

जय जरामरणभौ हरण देव। जय मुक्तिबधू परमेश एव॥
जयउद्यतज्योति जु जगप्रचंड। जयगुणअनंत छ्यालीसमंड॥
अतिशय चौतीस विराजमान। जय केवलज्ञान प्रकाशभान॥
जयदोष अठारह रहितएव। जयमानरहित अरहंतदेव॥१०८॥
जयसहनपरीसह बीसदोय। जयनिराभरण मलरहित सोय॥
जयभवनाशनदुखकरमत्रास। जयमुकतिसुःखकरज्ञानभास॥
जय मोहमल्ल दलमलन ईस। वशकरन काम विश्वा जु बीस॥
जय धरमधुरंधर जगतराय। सुरअसुर शेषखग परैंपाय॥११०॥
जय तीनलोकशोभाधरंत। ताछबिलखिकोटिसुरविछिपंत॥
नृपअस्तुतिकरतनहींअघाय।करजोरिशीशनिजनायनाय १११

अडिल्ल।

गौतम गणधर स्वामि महा गुणआगरे।
तिनहिं नमो करजोरि नृपतिपग लागरे॥
और मुनिनके वृंद तिनहिं अवलोकिके।
नमस्कार करजोरि कियो नृप धोकिके ॥११२॥

चौपाई।

दिव्यध्वनि जिनवरकी भई। गणधर परखि ततक्षण लई ॥
मनुष देव खग पशु सबकोय। अमृतबानी पीवैं सोय ॥११३॥
उत्तम छमाआदि दशअंग। ते गणधर भाषे सरवंग ॥
चारित तेरहविध यतिधर्म। गणधर कह्यो सबै व्रतमर्म ॥११४॥
गृहवासी श्रावक आचार। गौतम कह्यो सबै विस्तार ॥
सुने बचन तिनके जु नरिंद। मनमैं लयो परमआनंद ॥११५॥
तब श्रेणिक निजशीशनमाय। बोले मनबचकर विहसाय ॥
हे! स्वामीगौतमजिनईश। वेश्यारतफलकहिजगदीश॥११६॥
गणिकाव्यसन गह्यो किनिचाहि। कहाभयोफल निश्चैताहि॥
किहप्रकार वेश्याघर गयो। किहप्रकार ताकों दुखभयो ११७॥
सो कहिये जगतारण देव। तब गणधर बोले स्वयमेव ॥
चारुदत्त इक सेठकुमार। तिन सेयो गणिका दरबार ॥११८॥
ताको कहौं सबै विरतंत। सुन भूपति तू मनधर संत ॥
वेश्याव्यसन फलभयोनिदान। सोसुनिये राजन देकान ११९॥
जम्बूद्वीप दीपन शिरदार। जोजनलाख जासु विस्तार ॥
चहूंफेरि तहँ सागर बहै। अति अथाह कोउ पार न लहै १२०॥
भरतक्षेत्र तामधि सुखकार। सबक्षेत्रनमें है शिरदार ॥
तामधि आरजखंड प्रधान। ताकी महिमा कही महान १२१॥
कालचतुर्थ होय शुभ जबै। पुरुष सलाका उपजे तबै ॥
तामधिदेशअनेकदिपंत। कहतसुनतजिनकोनहिअंत १२२॥
अंगदेश देशन शिरमौर। शोभा कहत बनैं नहिं और॥
चंपापुरि नगरी तहँ बसै। सुरगपुरी सम शोभा लसै॥१२३॥
गढ़ मढ़ खाई कोट उतंग। दरवाजे सोहैं नवरंग ॥

बन उपबन सरसी बहुबाग। देखत मनबाढै अनुराग ॥१२४॥
बरनों कहा तहांकी रीति। बहुत गुणीसों राखैं प्रीति॥
सबै लोग सेवैं जिनधर्म। पूजा दान करैं तजिभर्म ॥१२५॥
धन कन पूरण शोभित सोय। दीन दुखी दीषे नहिं कोय॥
घर घर आनंद मंगल करैं। भोग विलास सुक्ख विस्तरैं॥१२६॥
घर घर सब वेदध्वनि करैं। शास्त्र पुराण कंठ उच्चरैं॥
सामुद्रिक व्याकरण अपार। सबके अर्थ करैं निर्धार ॥१२७॥
कहूं विविध विद्याधर करैं। कहुं संगीत कला उच्चरैं॥
कहूं गुनीजन गावैंगीत। कहूं तमासे अदभुत कीर्त[1] ॥१२८॥
शोभैं शोभावंत बजार। महिमा बहुत न आवै पार॥
कहुं हीरा मुक्ता मणि धरे। कहुं गहने रतननसों जरे॥१२९॥
कहुं मेवा कहुं मधुर सुवास। लगत हृदय जन अधिकहुलास॥
अतिउतंग शोभित जहँधाम। तोरनपौरि बंधेअभिराम१३०॥
उज्वल अति शोभित सतखने। मानो स्वर्गपुरी तैं बने॥
चित्रलिखे सोभितहैं द्वार। घर घरहोत उछाहअपार ॥१३१॥
कहूं जिनेश्वरभवन उतंग। उज्वल वरन दिपैं सरबंग॥
कंचनकलश धरे असमान। फहराती तहँ धुजा महान १३२॥

दोहा।

रतनमई प्रतिमा सुभग, राजैं तिनमधि सोय।
मानो शक्रविमान यह, रच्यो विधाता कोय ॥१३३॥
जैनधर्ममें रत सबैं, दिनप्रति दान कराय॥
जिनपूजा उत्साह बहु, खरचत धन निजभाय ॥१३४॥

चौपाई।

तालतमाल बने चहुंपास। निर्मल जल कमलिनी विकाश॥

[1] कीर्त्तन।

पावसऋतु बरषै जलधार फूलै फलै लाखदश बार॥१३५॥
भोगभूमिके सुख हैं जहां। पौनि छतीस बसैं शुभ तहां॥
शोभाकहत न आवे पार। बाढ़ैकथा होय विस्तार॥१३६॥
राजकरै अबनीपति राय। नाम विमलबाहन सुखदाय॥
नीतिनिपुण नर राजहि करै। बैरी कोइ न धीरज धरै॥१३७॥
ताके राज करैं सबभोग। पान फूल आदिक संयोग॥
ताविभूति बरनीनहिं जाय। दलबलकरि शोभितअधिकाय॥

अडिल्ल।

महा गुणनकी धाम जासुघर कामिनी।
विमलमती पटनारि सबन मन भामिनी॥
रूपकला संयुक्त वदन शशि रोहिनी॥
कनकक्रांति समगात दिपै मृगलोचनी॥१३९॥

चौपाई।

विमलमती नृपके घर तिया। जैसे रामचंद्र घर सिया॥
जैसे शंकर गौरी नेह। तैसे नृपके रानी गेह॥१४०॥
ता सम रूप न दूजी बाम। निजपति प्रेम बढ़ावे काम॥
शीलादिकगुणजामेंसार। करहिकेलिसुखनिजभरतार१४१॥
पांचपुत्र ताके घर भये। तिनके नाम सुजन इम दये॥
प्रथम नंद हरिसिंह कुमार। गोमुख दूजो जान कुमार॥१४२॥
कहो बराहक तीजो बाल। चौथो परतप जानोलाल॥
पंचम नाम कह्यो मरुभूत। या विध सबके नाम सँजूत॥१४३॥
भूप लखे पांचौ निजनंद। मात पिता बहु पाय अनंद॥
विद्याभ्यास करैं ये तबै। शस्त्र शास्त्र छात्रिय विध सबै॥१४४॥
जिनके गुणको वर्णन कहों। बाढ़ै कथा खेद बहु लहों॥

ऐसी विध राजै भूपाल। सुखमैं जात न जान्यो काल॥१४५॥
ता पुर मध्य बणिक इक बसै। राज दुवार बड़ाई लसै।
भानुदत्त कोटी धुज साह। आदर बहुत करै नर नाह॥१४६॥
बनिजै हीरालाल दिनार। बेचै माणिक मुक्ताहार॥
मणि कंचन भूषन अभिराम। आदर बहुत रायघर ताम॥१४७॥

सोरठा।

सेठि महाधनवान, नारी देवल तासु गृह।
प्यारी प्रान समान, पति आज्ञामैं चलतिसो॥१४८॥
रतिरंभा उनहारि, रची विधाता रूप मय।
चंद्रमुखी सो नारि, निजपिय प्रेम बढ़ावही॥१४९॥

दोहा।

शशि रवि किरनि कपोलछबि, शुक नासा पिकबैन॥
अलि अलकै आनन कमल, मृगलोचन छवि ऐन॥१५०॥
उर उतंग कंचन कलश, नाभि गहिर कटि छीन॥
कंचन सम तन ज्योति है, सुंदर रति छबिछीन॥१५१॥

चौपाई।

सोई नारि सदा सुंदरी। पतिसौं प्रेम शीलगुन भरी॥
पतिके बचन लेयनिजमानि।सोईकामिनिगुनकीखानि॥१५२॥
शील सरूप नाथके नेह। विना पुण्य को पावै एह॥
जे उत्तम गुन नारिन तने। ते सबरे सेठिनिमैं घने॥१५३॥
पतिसों प्रेम आन सब तात। जानै नहीं रैनदिन जात॥
सेठिनि सेठ देखि सबलोग। विधना भलो कियो संयोग॥१५४॥
नारिपुरुष बहु सुखमैं रहैं। मुखतैं कटुकबचन नहिं कहैं॥
पुत्र नाहिं ताके घर कोय। पुत्र बियोग धरैं बहु सोय॥१५५॥

पुत्रअर्थ पूजै सु कुदेव। यक्ष यक्षणी मनबच एव॥
एकदिनाकी कहीनजाय। सुमति नाम आएमुनिराय॥१५७॥
पूजति सेठिनि यक्षबनाय। देखी पूजत तब मुनिराय॥
निरखि ताहि पूजत मिथ्यात। तव मुनिवर इमवचन कहात॥

दोहा।

मुनिवर बोले बचन तब, सुनि सेठिनि मनलाय।
क्यों पूजति मिथ्यात तू, कहु पुत्री समझाय॥१५९॥

चौपाई।

द्वैकरजोरि नई मुनिपाय। तब बोली सेठिनि शिरनाय॥
हे स्वामी! मै कैसे करौं। पुत्र वियोग बहुतदुख धरौं॥१६०॥
मेरे गेह पुत्र नहीं कोय। तातैं दुख मोकों बहु होय॥
पुत्रशोक मो भयोकुभाय। तब पूजति मिथ्यात अघाय॥१६१॥
फिरि बोले तब मुनिवर धीर। पुत्री दुखमति करौ सरीर॥
तेरे पुत्र होय परधान। पै कछुकाल गये दिनमान॥१६२॥
तेरे नंद होयसी एव। हे पुत्री! मति पूजि कुदेव॥
जे दुर्काज विचारैं कोय। बहु दुख लहैं अंतमें सोय॥१६३॥

दोहा।

पूजत सुता कुदेवकौं, जिय सम्यक्त विलाय।
धर्म कर्म सब बीसरै, जाप क्रिया सब जाय॥१६४॥
जिनके जिय समकित नहीं, ते सठ दुष्ट सुभाय॥
स्वप्न मात्र नहिंसुख लहैं, अंत नरक गति जाय॥१६५॥
ध्यावत जे मिथ्यातकौं, छोड़ि आपनो देव।
नरक तनौ ते दुख लहैं, नीच वास फिर एव॥१६६॥
तातैं श्रीजिनबिंबको, सेवौ मन बचकाय।
जैन धर्म सेवौ सदा, भव भव मैं सुखदाय॥१६७॥

चौपाई।

पुत्री मन राखो तुम धीर, तुमरे नंद होय बलवीर॥
मुनि बच सुनि सेठिनि तिहँबार। तबही उपज्योसुख अतिसार॥
मुनि वचकी परतीति उपाय। जानी जिनबच सत्तिबनाय॥
मुनिकौं नमस्कार करि भाय। तब मुनि गये शैल हरखाय॥

सोरठा।

मुनिवर बचन प्रमान, लिये गांठि तिन बांधिके।
पश्चिम ऊगे भान, झूठ न करैं बखान मुनि॥१७०॥

दोहा।

नितप्रति श्रीजिन बिंबकों, पूजै मनबच सोय।
धरै ध्यान दृढ़ चित्तकर, व्रत उपवाशक जोय॥१७१॥

अडिल्ल।

करै जु भोंग विलास सदा निजधाम जू।
सुखसौं बीतत काल रहै पति बाम जू॥
गर्भ देविला जोग रह्यो सुखदाय है।
लह्यो महा आनंद कह्यों नहिं जाय है॥१७२॥
जननी उर कछु कियो जनाव जु आनिके।
चलै पसेव जु देह सिथल तब जानिके॥
मंद मंद गति सोय चरण भूपर धरै।
चढ़त जु ऊचे ठौर अधिक तसु मन डरै॥१७३॥

चौपाई।

अधिक सुहाय फूलकी बास। मधुर सरस मुख दीजै ग्रास॥
दिन दिन गर्भ वृद्धि तब भई। कनक वरन ताकी छबि छई॥
नितप्रति आँनंद भोग विलास। पूरण गर्भ भये नवमास॥

नव मैं मास भयो सुतसार। सब लक्षण पूरन गुन धार॥१७५॥
सुतमुख लखि माता सुखि भई। सुनिकरि भानु खुसी अधिकई
पुत्र महोत्सव सेठि जु करैं। खरचैं धन बहुआनंद भरैं॥१७६॥
दुखी दरिद्रिनिकौं दे दान। सज्जन लोक करै सनमान॥
करे वधाई मंगलचार। पुत्र जनम को जो व्योहार॥१७७॥
जे जन आय बधाई देत। तिनकौं धन दे हरख समेत॥
जो मांगे ताकों सो देय। दान देत जगमें जस लेय॥१७८॥
दान समान न जगमें कोय। भोग भूमि दानहिं तैं होय॥
गावेंगीत नारि रस भरी। देय तमोल सेठितिस घरी॥१७९॥
बाजे बाजैं मंगल रूप। जनम-उछाह इत्यादि अनूप॥
दान साहने बहुविध दयो। सबही कों नाना सुखभयो॥१८०॥
बालक द्वादश दिनको भयो। सेठि तबै मनमें सुख लयो॥
ज्योतिष श्रुत के जानन हार। पंडित बुलवाये तिहँबार॥१८१॥
पंडितजन दीनो तब नाम। चारुदत्त सब गुण अभिराम॥
मात पिताकों बहु सुख भयो। स्वजन लोग बहुआनँद लयो॥
बाढ़े बालक कर संचरै। दिन दूनी तन शोभा धरै॥
अन्नपान रस पोखै बाल। द्वैज चंद्र सम बढ़ै विशाल।१८३॥
बालक बरष सात को भयो। पंडित आगें पढ़ने गयो॥
कियो महोच्छव जिनवर थान।सज्जन जन दीनों बहु दान१८४॥

सोरठा।

गुरुकी विनय कराय, त्यों त्यों बुधि अधिकी बढ़े।
पढ़ै शास्त्र अधिकाय, सब विद्यामें निपुण है॥१८५॥

दोहा।

अलंकार अरु छंद बहु, सामुद्रिक गुण लीन।
वेद न्याय अरु तरक शुभ, पढ़्यो कला परवीन॥१८६॥

नीति शास्त्र ज्योतिष गणित, नाद गीत ग्रंथिवान।
आगम वैद्यक वाद बहु, दूत शास्त्र गुणखान ॥१८७॥
कोक आदि लक्षण पुरुष, तिय लक्षण शुभसार।
शस्त्र आदि विद्या अतुल, पढ़ी सबै सुखकार ॥१८८॥
ग्रंथ आदि तिन व्याकरन, पढ़े सबै गुरु पास।
जैनशास्त्र सिद्धांतमें, निपुन भयो गुनरास ॥ १८९ ॥
नृपके पंच प्रधान सुत, तिन सँग खेले बाल।
शस्त्र शास्त्र विद्या सबै, सीखी सर्व रसाल ॥ १९० ॥

अडिल्ल।

सब विद्यामें निपुन सोय बहुविध भयो।
तर्क छन्द इत्यादि महाचातुर ठयो ॥
भूप सुतनके संग केलि निशिदिन करै।
परस्परस्पर नेह सबै निज उर धरै ॥ १९१ ॥
श्रीजिनवरकी भक्ति करै चितचावसों।
पूजा तीरथ जाय दान दे भावसों ॥
राखै मनमें सदा मंत्रनवकार है।
तातें इह सुख होय लहै शिवद्वार है ॥ १९२ ॥

चौपाई।

ऐसी विध बहु आनँद करै। भांति भांति क्रीड़ा विस्तरै ॥
अब इहकथा रही इसठौर। आगे कथनसुनौ अबऔर १९३॥
चंपापुरि नगरीके अंग। बाहिर परवत महाउतंग ॥
गिरिमंदार तासुको नाम। तापर बने जिनेश्वर धाम ॥१९४॥
ताऊपर जमधर मुनिराय। लही मुक्ति वसुकर्म खिपाय ॥
पूजनीक है जहँकी मही। जात निमित आवें सब लहीं ॥१९५॥

मंगसरमास पक्ष शशि भ्रात। हरिहरि बरस लगे तहँ जातं॥
आयोजबहीं मंगसरमास। तबसब परिजन हियेहुलास१९६॥
पूजन योग द्रव्यले सबै। निज निजवाहन चढ़िकरि तबै॥
राजादिक सब परजा लोग। गए सर्वजन जात्रा जोग॥१९७॥
चारुदत्तभी तिहठां गयो। करी जात बहु आनंद लयो॥
जात्राकरि फिर उतरयो सोय। मंत्रीसाथ और नहिं कोय॥
क्रीड़ानिमित. गयो सो तहां। सरिता तीर बाग इक जहां॥
देखि मनोहर बाग रसाल। चारुदत्त अतिभयो खुसाल १९९॥
तरुवर सबफूले अधिकार। शीतलछाया बहु सुखकार॥
फरे नारियर जहां अभंग। फरीं नरंगी बहुत सुरंग॥ २०० ॥
बहुत भांति अंमृतफल केर। सघन दाख दारों द्रुम बेर॥
नीबू हरे बिजौरा नेक। ताल खजूर सुपारी एक॥ २०१ ॥
फरे कदम तरुवर बहुताम। अनन्नास आडू अरु आम॥
कटहर बड़हर वर आचार। कैथ सदाफल तूत अनार॥२०२॥
फूली केतकि चंपोबेलि। रायचमेली खूजा केलि॥
दौना सदागुलाब निवारि। गुलहर कनइल हारसिंगार२०३॥
और फरे बहुभांतिन फूल। तरुसाखा गिनती नहिंमूल॥
पत्र पुहप फूले अधिकाय। ताकी शोभा कही न जाय॥२०४॥
सरबर नीर भरे चहुंपास। तिनमें कमलिनिधरे विकास॥
बोलैं कोकिल मधुरे बैन। बोलत सारो हरियल ऐन॥२०५॥
चकई चकवा और चकोर। बिच बिच बोलैं खुमरी मोर॥
जोसब शोभा वरनन कहौं। कहतकथा कछुअंत न लहौं२०६॥
बागबन्यो बहुतै अभिराम। सेठिकुमर करि क्रीड़ा ताम॥
भ्रमनकरत फिरतो तिहँठौर। देख्योतरु ऊंचो इकऔर२०७॥

१ यात्रा मला।

सोरठा।

ऊंची दृष्टि निहारि, चारुदत्त देखत भयो।
तरुकी साखालार, कील्यो एक पुरुष तहां॥ २०८॥
मूर्छावंत अघाय, खबरि नहीं तनकी तिसै।
दयाभई तसु आय, चढ्यो विरछ साखा तबै॥ २०९॥

दोहा।

देखिविमान रसाल तहँ, मनमैं चिंत्यो सोय।
इह विद्याधर है सही, वैर कियो किनि लोय॥ २१०॥
तिनयह कील्यो आनकर, जीवघातके भाय।
अबतक प्रान बचे सही, कीजे कछू उपाय॥ २११॥
तसु विमान ढूंढ्यो तबै, देखी गुटिका तीन।
तिसको गल्यो शरीर सब, पीड़ा बहु तनकीन॥२१२॥
कीलोद पाटनी प्रथमहै, द्वितिय संजीवनि नाम।
तीजी गुटिका है सही, व्रण सरोहिनी नाम॥ २१३॥

अड़िल्ल।

गुटिका लेकर सर्व चारुदत पानमें।
सुमिरिमंत्र जिननाम निरंतर ध्यानमें॥
कीलोदपाटनी गुटिका तासु प्रतापतैं।
तताछिन खगको गात उकील्यो आपतैं॥ २१४॥

चौपाई।

गुटिका द्वितिय संजीवनिनाम। ता समर्थता करिअभिराम॥
मूर्छादूरि भई तिहँबार। भयो सचेत सोय ततकार॥ २१५॥
तीजी व्रणसरोहिनी नाम। तासमर्थता करि छिन ताम॥
घावदेहको आछो कियो। तबातिन बहुसुख मनमेंलियो २१६॥

है सचेत उठिबैठ्यो सोय। देखे चारुदत्त दृग जोय॥
उठिकरि नमस्कार खग कियो। विनै भक्तिकरि इनहूंलियो॥
चारुदत्त बोले तब तासु। को तुम माततात कहँ वासु॥
आए कौनकाज इसठांय। पीड़ा बहुतकरी किनभाय॥२१८॥
तब बोल्यो नभचर शिरनाय। कहूं बात अपनी सुनभाय॥
विजयाधरपरबत शुभथान। ताकीदक्षिन श्रेनिबखान॥२१९॥
शिवमंदिरपुरि नगरी बसै। मानो सुरगपुरी छविलसै॥
भूप महेंद्रदत्त राजंत। विक्रम पटरानी को कंत॥ २२०॥
अमितवेग हौं तासुत जान। सुखसों रहों सदा निजथान
धूमशिखा खगपतिइकनाम। वसैसोय बिजयारध धाम॥२२१॥
सो खग मेरो मित्र महंत। मोऊपर अति नेह धरंत॥
निशिदिन दोनों क्रीड़ा करैं। भांतिभांतिके सुख विस्तरैं॥२२२॥

सोरठा।

एकदिवस दोउ मित्र, क्रीड़ा करिवेकौं चले।
रच्यो विमान विचित्र, ध्वजा पताका सहित सो॥२२३॥
दोनौ बैठिविमान, बहु प्रमोद आनंद भरे।
नभमें कियो पयान, अवनी सब देखत चले॥२२४॥

चौपाई।

चलतचलत पहुँचे हम तहां। हिमागिरि पर्वत राजे जहां॥
तहां बने बहु सुंदर ठौर। शोभा कहत बने नहिं और॥२२५॥
तहां करी क्रीड़ा बहुभाय। दोऊमित्र महासुख पाय॥
तहांमिल्योइकनरगुणलीय। नामहरीयजातिछत्रीय॥२२६॥
तिनके कन्या बहुगुणखानि। सुरकन्या जीती छवि मानि॥
सुरकुमारिका ताको नाम। तासम रूप न दूजी बाम॥२२७॥

अडिल्ल।

कनक वरन तसु देह दिपै बहु नागरी।
चंद्रबदन मृगनयन रूपगुण आगरी॥
हंसचालि गुनमाल कोकिला बैन है।
केहरिके सम लंक मनो रति ऐन है॥ २२८॥
ताकी छवि मैं देखि सुःख मनमें लह्यो।
बहुत विमोहित होय मैनसर[1] तन दह्यो॥
पर्‌यो प्रेमके फंद ताहि अवलोकि कैं।
मांगी तव तिहँ पास विनोकरि धोकिकैं॥ २२९॥
तिनहूं करि बहु नेह हमारे ऊपरें।
तिलक खांचि तिहँवार लियो जस भूपरें।
चौंरी मंडप साजि व्याहि हमकों दई॥
गए लेय निजधाम भये सव सुखमई॥ २३०॥
सुखसों बीतत काल रहें निजगेह हैं।
करें भोग उपभोग बहुत असनेह हैं॥
देखि नारिको रूप धूमशिख खगपती।
भयो वहुत आशक्त धरी खोटी मती॥ २३१॥

छंद।

मनमैं औरहि मति ठानी। हरिवेकी बांछा आनी॥
जान्यो नहींमैं कछु भेद। जाके मनमैं है क्या खेद॥२३२॥
इकदिनकी कहिय न जाई। रचियो विधि और उपाई॥
धूमाशिख हमरें आयो। हमहूं मनमैं सुख पायो॥२३३॥
क्रीड़ा करिवेकों चाले। निज नारि लई मैं लारे॥
रचियो अभिराम विमान। कीनौ नभ माहिं पयानं[2]॥२३४॥

१ कामवान २ गमन।

इस बाग माहिं जब आये। क्रीड़ा कीनी मन भाये॥
सु प्रमादअवस्था तामै। कील्यो तिन दुष्ट अयाने॥२३५॥

पद्धड़ी छंद।

ताको उपजी कछु दया नाहिं। मोप्रान बचैंके अबहिं जाहिं॥
मोतिय छिनमैं लेगयो सोय। हमपैं जु उपायनबन्यो कोय२३६॥
दुख सह्योइहां बहुतै जु घोर। देख्यो नहीं कोई सरन और॥
शुभदशा हमारी भईआय। तुमगमनभयो इसथानभाय२३७॥
मोप्राण बचे तुमही प्रसाद। पायो तुमतैं बहु सुख अगाद॥
पूरवविधि भाललिखी जु सोय। ताकौं नहिं मेटि सकै जु कोय॥
तुमदयावंत जगमैं सु धीर। परकारज कारन महगहीर॥
खगबोल्यो फिरशिरधारिहाथ। अबहुकमहोय घरजाउंनाथ॥

सोरठा।

तुरत आपनी नारि, लेउं छुड़ाय जु दुष्टतैं।
देहुँ तासमुख छार, काढ़ि देश बाहिर करौं॥ २४०॥

दोहा।

नमस्कार करके चल्यो, अमितवेग खगबाल।
बैठि विमान आनंदसौं, गयो गेह ततकाल॥ २४१॥

चौपाई।

धूमाशिखहि बांध्यो तिन जाय। भामिनि लीनी तुरतछुड़ाय॥
ततछिनमाहिं सबै गुनरास। आए चारुदत्तके पास॥२४२॥
हाथजोरि बोल्यो खग बात। हेस्वामी! सुनिये अवदात॥
लायो छीनि आपनी नारि। आन्यो पकरि दुष्ट तुमलार २४३॥
देहु दंड चाहौं सो धीर। इन मोकौं कीनी बहु पीर॥
तुम प्रसाद मो बचियो प्रान। मैं तुमरो चाकर गुनवान॥२४४॥

तुम मेरे साहिब सुखदैन। वहुत बात कह कहिये ऐन॥
चारुदत्त बोले सुन वीर। ऐसी वात कहौ मति धीर॥२४५॥
तुम मो भ्राता निहचैं जान। यही राखियो मनमैं आन॥
अब याको दीजै छुटकाय। यहो दुष्ट अपने घरजाय॥२४६॥
सुनी वात आनंदित भयो। ततखिन खगकौ छांड़ि जु दयो॥
अमितवेग तब आज्ञापाय। भामिनिसाहित गयोघरधाय२४७॥

दोहा।

बहु आनँद मनमैं लयो, चारुदत्त तिहँ ठाम।
मंत्री सहित जु बागतैं, गयो आपने धाम॥ २४८॥
रह्यौ गेह सो आपने, सुखसौं वीतत काल।
कथा रही इसठौर यह, आगे सुनो रसाल॥ २४९॥

चौपाई।

वाही नगर सेठि इक वसै। नाम सिद्धारथ धनकर लसै॥
देवल सेठिनि भ्राता जोय। चारुदत्तको मामा सोय॥२५०॥
ताके सदन सुमित्रा नारि। गुनलावन्य शचीउनहारि॥
सेठि सेठिनी भुंजै भोग। पुत्री भई करम संयोग॥ २५१॥
मित्रवती शुभ ताको नाम। वनी सवै सामुद्रक धाम॥
रूपकला अरु गुनसौं भरी। शोभै जिसी स्वर्ग किन्नरी॥२५२॥
जौबनवंत भई सो बाल। देखी मात पिता गुणमाल॥
तब मनमैं चिंता तसु ठई। पुत्री ब्याह जोग अब भई॥२५३॥
पुत्री पिता देखि बहु जोय। कुल शुभ दोय बराबर होय॥
घरवर देखि भलीविध चाहि। पुत्री पिता विवाहै ताहि॥२५४॥
सेठि बात मनमैं चिंतेय। पुत्री चारुदत्तकौं देय॥
कुलऊंचे लक्षण शुभसार। अरु भनेज भगनी सुतसार २५५॥

टीका चारुदत्तकैं कियो। दुहूँओर बहु आनंद लियो॥
ज्योतिषवन्तपुरुषतिहँघरी। लीनीशोधिलगनशुभधरी २५६॥
मित्रवती सुंदरि सुकुमारि। पाणिग्रहणको दिन शुभसार॥
लगनथापिज्योतिषिघरगयो।दोनोकुलकारजशुभठयो २५७॥
कामिनि गावैं मंगलचार। पूरहिं चौक ब्याह ब्योहार॥
बाजैं भेरि झांझ झालरी। ताल कँसाल ढोल डुम झुरी॥२५८॥
वीनउपंग और मुहचंग। बाजे बहुत वजैं नवरंग॥
जाचकजनकौं दीजत दान। करैं सुपरिजनको सनमान२५९॥

सोरठा।

कर कंकन शिर मौर, चारुदत्त ब्याहन चले।
बनी बराइत और, वरनौ तौ विस्तर वढ़े॥२६०॥
गए सेठि दरवार, आगौनी बहुविध करी॥
मंडप वेदी सार, रच्यो महा अभिराम सो॥२६१॥

अडिल्ल।

कामिनि गावैं गीत सबहिं निज रस भरीं।
वर कन्या शृंगार रचैं पट सुन्दरीं॥
बेदी पंडित आय बेदधुनि तहँ करैं।
भयो अग्निदै शाखि व्याह आनँद भरैं॥ २६२॥

चौपाई।

पुत्रीवरको दीनो दान। कंचन भरन वस्त्र सनमान॥
भई बिदा आए निजधाम। आनँद भयो सेठिनी ताम॥२६३॥
खरचै द्रव्य बधाई करी। अरु सबही मन पूरी ररी॥
लाय नारि राखी निजगेह। ताहीदिन तैं तज्यो सनेह॥२६४॥
चारुदत्त सुध लेय न तासु। छिन नहिं जाय नारिके पास॥
सखी एक दो साथ जु रहैं। सूने मंदिर बहुदुख लहैं॥ २६५॥

भई दुहागिल करै विलाप। पूरवलो आयो मो पाप॥
नाहवियोग बहुत दुख धरै। तज्यो तमोर[1] शिंगार न करै २६६॥
मस्तकधुनै जु लेय उसास। हे विधना! तैं करी निरास॥
नैनन झरै नीर असरारि। दुखसौं काल गमावै नारि॥२६७॥
चारुदत्त गुणमंडित बाल। सीखै विद्या सर्व रसाल॥
पढ़ै निरंतर काव्य पुराण। तरक छंदको करै बखान॥ २६८॥
नारि तनी सुधिलेय न सोय। पढ़िवा काल गमावै जोय॥
एकदिनाकी कही न जाय। रचियो विधना और उपाय२६९॥
चारुदत्तकी सास सु जान। नाम सुमित्रा कह्यौ वखान॥
भयो प्रात उग्यो नहिं भान। आई सो जु सुताके थान॥२७०॥

अडिल्ल।

देखि मातकों सुता बहुत आदर कियो।
कुशल क्षेम सब पूंछि उच्च आसन दियो॥
मित्रवतीकौं देखि सुमित्रामाय जू।
बहुत चिंत मनमाहिं भई अधिकाय जू॥ २७१॥

चौपाई।

अति दुर्बल देखी जु शरीर। पहिरें मैले अंग जु चीर॥
मैलोवदन दुःखकरि मंद। मानो श्यामघटामैं चंद॥२७२॥
द्वादशभूषण रहित जु नारि। रहित तमोर सोरह सिंगार॥
ऐसीविध देखी तिन धिया। पूंछति भई सुमित्रा तिया॥२७३॥
हे पुत्री! तू मैले भेष। रहै कहा मो कहो विशेष॥
सोवत नहीं संग भरतार। कै कछु चिंता करत अपार॥२७४॥
काहें रहै मलिन तुम गात। सांची कहु तू मोसौं बात॥
मायबात सुनि सकुची सोय। वदन रही नीचो करि जोय२७५॥

[1] ताम्बूल।

बात न आवै लेय उसास। फेरि सुमित्रा बोली तास॥
सुतावेगि निज सुखदुख कहौ। मेरे मनको संसौ दहौ॥२७६॥
तुम सुखतैं हमको सुखधिया। तुमदुखतैं हमबहुदुख जिया॥
कौनदुःख पुत्री है तोहि।रहैमलिन किमि कहि सबमोहि२७७॥
माताहठ जान्यो तिहँकाल। करि दृग नीचे बोली बाल॥
जादिनतैं तुम दीनी ब्याहि। आई गेहससुरके माहिं॥२७८॥
ताहीदिनतैं मो भरतार। हमसुधिलई न आयो लार॥
कबहूं ध्यादि करे मो नाहिं। रहौं अकेली इसघर माहिं॥२७९॥
पढ़िवेमें राखे सो चित्त। भोगविलास न जानै हित्त॥
कालगमावै इसविध सोय। तिय ब्योहार न जानैकोय॥२८०॥
यहदुख मो मनमैं है माय। नाहवियोग महा दुखदाय॥
तातैंमोकौं सब सुधि गई। भयो उदास चित्त अधिकई॥२८१॥
भाख्यो सब विरतंत कुमारि। सुताबचन सुनि सब तिहँवार॥
बोलीतबै सुमित्रा माय। हे पुत्री! मति मन अकुलाय॥२८२॥
विधना रचित न मेटै कोय। होनहार सो निहचैं होय॥
कुलकीरीति गहैं कुलनारि। नीचवंशकी नीच विचारि२८३॥
तातैं जपिये जिनके चरन। जिनको धर्म जीवके सरन॥
सबविध पुत्रीकौं समझाय। तामनमैं दुख भयो अघाय॥२८४॥
उठी तहांतैं सो तिहँवार। मनमैं क्रोध कियो अधिकार॥
क्रोधभरी पहुँची सो तहां। भानुदत्तकी भामिनि जहां॥२८५॥
चारुदत्तकी माता जबै। आदर विनय कियो अति तबै॥
आसनऊंचो बैठन दयो। तबै सुमित्रा बोल जु चयो॥२८६॥

सोरठा।

कहै सुमित्रा बैन, सेठिनि तेरो नंदवर।
पढ्यो मूढ़ है ऐन, निहचय करि जानो सही॥२८७॥

दोहा।

तियव्योहार न जानही, भोगविलास न कोय।
पढ्योमूढ़ जानो तिसै, तियढिग जाय न सोय ॥२८८॥

चौपाई।

तू जानति है याकी रीति। पढ़िवेमैं राखै बहुप्रीति ॥
तौ तुम टीका काहे लियो। काहेको ता व्याह जु कियो२८९॥
क्रोधवान हुइ बहुबच कहे। ते सब भानुतियाने सहे ॥
तबहि देवला बोली बात। अपनी विनती करि अवदात २९०
अरु कीनो ताको सनमान। अपनी लघुताई जु वखान ॥
ताको ततछिन क्रोधनिवारि। वेगपठाई घरकौं नारि ॥२९१॥
चारुदत्तकी माता तबै। मनमैं बहुदुख पायो जबै ॥
फेरि बिचारकरै मनलाय। वेगहिं कीजै कोइ उपाय ॥२९२॥

अडिल्ल।

चारुदत्तकी माता अपने धाम है।
निज देवरको टेर रुद्रदत्त नाम है ॥
लीनों ताहि बुलाय तासु मन पायकैं।
तासौं सब विरतंत कह्यो समुझायकैं ॥ २९३ ॥
चारुदत्तको आप कछू शिख दीजिये।
भोगलुब्ध जिहँभांति होय सो कीजिये ॥
और न दूजी बात सु मनहिं बिचारियै।
खरचो धन निजहात् काज यह सारियै ॥२९४॥

चौपाई।

भावजबचन सुने बहु भाय। तब मनमाहिं विचार कराय ॥
नगरमाहिं गणिकाको धाम। है वसंतमाला तसुनाम ॥२९५॥

ताकीपुत्री बहु गुणवान। वसंततिलका नाम सु जान॥
ताके रूप न दूजी वाम। तासम चतुर न दूजी वाम॥२९६॥
वह वश करिहै छिनमें जाहि। मंत्र तंत्रकर भाव बताय॥
तासों कहियैसब बचजाय। अरु कछुदीजै दाममंगाय॥२९७॥
गयो सोय वेश्या के थान। तासों जाय कही सब वानि॥
चारुदत्त ल्याऊं तोपास। ज्यों जाने त्यों वशकर तास॥२९८॥
कामबात जाने नहिं सोय। तू शिखरांव ताखुकों जोय॥
यहकहि रुद्रदत्त घरआय। मनमें सुखपायो अधिकाय॥२९९॥
एकदिनाकी कही न जाय। कुमर रुद्रने लियो बुलाय॥
लेकरसाथ नगर दिखराय। वेश्यागली सु पहुंच्योजाय ३००॥
लाग्यो कुमर बात तब कहन। गणिकागली नाहिं मो रहन॥
वेश्याके घर कामीजाय। सात व्यसन जो करै अघाय॥३०१॥
चल्यो चारुदत्त पहुंच्यो तहां। मातपिताको मंदिर जहां॥
फिरइन रचियो औरउपाय। हाथीवान लियो बुलवाय॥३०२॥
तिनकों देकर कछुजो दाम। तिनसौं बातकही सब ताम॥
दोनोंहाथी दोनों ओर। रहो झुकाय गलीके छोर॥ ३०३॥
हम गणिकाके द्वारे जांय। दुहुके दांत भिड़ैं तहँ आय॥
कहियो टेरि जु बारम्बार। हाथी खूनी हैं अधिकार॥३०४॥
ऐसीविध तिनकों समुझाय। मनमें सुखपायो अधिकाय॥
पीछे चारुदत्तकों टेरि। चाले नगर दिखावन फेरि॥३०५॥
चलत चलत सो पहुँचे तहां। वेश्याको मंदिर है जहां॥
पहुँचे गणिका मंदिरद्वार। आनिलगे दोनों गजलार॥३०६॥
कहैं पुकारि भजो तुम भाय। हाथी खूनी हैं अधिकाय॥
कहे हमारे मैं हैं नहीं। सब पर चोट करत हैं सही॥३०७॥

तातैं भजो बीर इस बार। नाहीं तो दुख होय अपार॥
भजिबेको नहिं देखें ठांय। तब बे लागे कहन सुभाय ३०८॥
जा मंदिरमैं चलिये बीर। चारुदत्त तुम साहस धीर॥
चलिये प्राण बचें हो भ्रात। हाथी बिगड़ि करैं जियघात॥३०९॥
बोलि ठोलि मैं मंदिर गये। घरकी शोभा देखत भये॥
उज्वल महाउतंग अवास। तोरण पौरि बंधे चहुँपास॥३१०॥
देखे रतनन खचित किवार। तिनकी जगमग ज्योति अपार
लगे थंभ बहु नाना बरन। झांकी टोड़ा शोभा धरन॥३११॥
आंगन शोभा बहुविध रची। कंचन बरन ताकी छबि सची॥
चित्र आदि बहु लिखे लिखाय। चीते मोर कोकिला भाय ३१२
चीते राग रागिनी संग। चौरासी आसन बहु रंग॥
और महल बहु नाना भांति। देखत तिनहिं भूप सब जाति३१३
भले बिछौना बिछे अनेक। परदा आदि चँदोवा नेक॥
देखत मोहि रहत नर नार। शोभा कहिये कहा अपार॥३१४॥
बनो जु ऐसो गनिका ठौर। तासम नाहिं नगरमैं और॥
बहुत उतंग महा अभिराम। उज्वल बरन दिपै सब धाम॥३१५॥
सब जन भीतर बैठे जाय। आदर बहुत कियो गणिकाय॥
तब गनिका चौपड़ि ले हाल। रुद्रदत्तसौं माड्यो ख्याल॥३१६॥
रुद्रदत्त तब बारम्बार। हारत भये बेर दुइ चार॥
चारुदत्त देखत तहँ बाल। हारत चचा द्यूत के ख्याल॥३१७॥

अडिल्ल।

चारुदत्त तब बात रुद्रदतसों कहैं।
हम खेलेंगे सारि जीति तुम्हरी लहैं॥
तब सुनिकरि सब बात बसंत जु माल है।
कहै लाल तुम रचौ कुमारिसों ख्याल है॥३१८॥

चौपाई।

जो तुम खेलो चाहों ख्याल। रचौ वसंततिलकासों लाल॥
मो सँग जुगति नहीं तुम वीर। तुम कुमार सुंदर गुनधीर॥३१९
मैं हों वृद्ध जानिये वीर। तुमहो यौवनवंत गहीर॥
जो खेलनको तुममन भाव। तौ बसंततिलकाढिग जाव॥३२०
जैसे तुम चातुर गुनलीन। तैसी कुमरि महापरवीन॥
तब बसंतमाला तिहँघरी। लई टेरि तिलकासुंदरी॥३२१॥
सेठिनंद तब देखत भये। गणिका लोचन तासौं ठये॥
चारुदत्त देख्यो तसुरूप। सुररंभातें अधिक अनूप॥३२२॥

सोरठा।

सरस श्याम शिरकेश, सींचे तेल फुलेलसौं।
नवल किशोरी वेश, तन शोभा कहिये कहा॥३२३॥

दोहा।

दृग हैं जिमि फूले कमल, खंजन मीन अधीन।
भौंह जु बंक बनी धनुष, सर्बकला परवीन॥३२४॥

चौपाई।

शुकनाशिका कामगढ़ रच्यो। कारीगर करता अतिपच्यो॥
वदन चंद्रसम तसु अभिराम। दसन चमक जिमि चपला धाम॥
अधर अरुन अधिकी छबिधरैं। मानो कूटे कामकी करैं॥
कुचउतंग मंदिरके भाय। विरम्यो आयकाम तिसठाँय ३२६॥
क्षीनलंक अहि अतिही खाम। जंघाजुगल केलि अभिराम॥
कोमल अरुण बने तसुपाय। चालमराल मंदगति जाय ३२७॥
भुजकोमल छीनो अतिअंग। मोतिनसौं जु सम्हारे मंग॥
पहिरेअंग कसूमी चीर। गढ़ी कंचुकी दिपै शरीर॥३२८॥

१ बराबरी।

सोरह भांति करै शिंगार। वारह आभूषन साजि सार ॥
मधुरबचन बोलै विहसाय। कोकिल कंठ श्रवनसुखदाय ३२९॥
रातदिवस लीलामें रहै। राग रंगमैं बहुविध बहै ॥
ताकी छबिको वरनि जुकहों। बाढ़ैकथा खेद बहुलहौं ३३०॥
नयनमिलाप तासुको भयो। मानो काम विरह विष दयो॥
तिलका कहै पुण्य हमकरयो। मेरेगेह कुमर संचरयो॥३३१॥
कछुकद्रव्य तापर तिन वार। गहि डारें अरु बकसे सार ॥
चौपड़िख्याल माड़ियो तबै। जाम एक दो खेले जबै ॥३३२॥
चारुदत्तकौं लागी प्यास। पानी तब मांग्यो तिन पास ॥
वेश्या मोहन चूरण डार। पानी प्यायो सेठिकुमार ॥३३३॥
तबसो अतिही विहवल होय। चारुदत्त जलपीवत सोय ॥
कामवान कर पीड़ित भयो। मोह विकलकरि अति तनहयो॥
जिहतिह भांति कियो वशसोय। वेश्यासहित रह्यो तहँ जोय॥
होनहार सो निहचै होय। विधिका लिखा न मेटै कोय ॥३३५॥
तबसो वेश्यावश यों भयो। ज्यों पतंग दीपक तन दह्यो॥
सुरति नाहिं ताकौं कछु और। रह्यो सोय रमि वेश्या पौर३३६॥
चारुदत्त तब बोले ऐन। सुन बसंततिलका मो बैन ॥
मोधन नाहिंसंख्या परवान। आभूषण गहने करथान॥३३७॥
चाहौ सो लीजे मँगवाय। खरचौ खाउ महासुख पाय ॥
तबगणिका ताकी सुनिबात। खुसीभई मनमाहिं सुगात ३३८
रंभासहित नृत्य जब करै। ज्यों विषधर बादीवश परै ॥
गनिकासहित महल ऊपरैं। रमिवा लाग्यो आनंदकरैं ॥३३९॥
रुद्रदत्त छोड्यो तिसथान। अपने गेह गये जनवान ॥
बोले सेठि तबै सतिभाय। मेरोपुत्र कहां छुटकाय ॥३४०॥

चारुदत्त हैगो तिस ठौर। रुद्रदत्त तब बोले और॥
तिनसौंकह्यो सबै व्योहार। तब सो सेठिदेय तसु गारि ३४१॥
अरे दुष्ट तैं कीनो कहा। अपने शीश पाप धरि लहा॥
तसु संगातितैं नरकहिं जाय। ताती पुतरी देहजराय॥३४२॥
अरु बहुविधसौं क्रीड़ा करैं। वेश्यादासी सो संचरैं॥
उत्तमघर ताको अवतार। बड़ेवंशको होय गमार॥३४३॥
धनबिन कामरूप जो धरै। तौ वेश्याघर पानी भरै॥
ऐसें कहिकहि मनपछिताय। कर्मदोषसो खोर लगाय॥३४४॥
वेश्यादासी आवे तहां। भानुदत्तको मंदिर जहां॥
तिनसौं बात कहै समुझाय। चारुदत्तने मोहि पठाय॥३४५॥
मांगी खरची विलसन काज। सो दीजे मोकों महाराज॥
जोकछु खरची मांगी आय। ततछिन ताकों दई बँधाय३४६॥
ऐसें कछु बीते दिनमास। सब घर सेठि करैं उसवास॥
.... ॥

दोहा।

खोटे व्यसन लग्यो सही, चारुदत्त करि नेह।
तातैं कछू उपायकर, जो आवै निजगेह॥ ३४८॥

चौपाई।

मोहविकल तसु भयो शरीर। ताकौं कछू और नहिं पीर॥
सबपरिजनकी सुधिविसराय। अपनेरंगरच्योमनभाय ३४९॥
तब इककिंकर लियो बुलाय। तासौं वचन कहे समुझाय॥
चारुदत्तके जावो पास। तासौं कहिये निज अरदास ३५०॥
अरु यह कहिये ताहिसुनाय। चालोलाल बुलाई माय॥
तुमबिन दुक्खकरत सबलोग। तुमबिन घरहिं शरीरहिं रोग॥

अरु कहिये जु बचन समुझाय। मोहविकल हूजे नहिं भाय॥
मोह जु शुभगति छेदनहार। मोह कुगतिको जानौद्वार ३५२॥
मोह जु वश कछुहोय न सिद्धि। मोहविनाशे केवलऋद्धि॥
मोही जिय भवमैंदुखसहे। मोहीजीव सुक्ख नहिं लहे॥३५३॥
मोह गहैं प्राणी जड़क्रूर। मोह जु सर्व पापका मूर॥
ऐसोमोह छांडि गुनरेह। रहसवंत हो! आवो गेह॥३५४॥
और जु तोमन आवैबात। सो कहिये सब अपनीभ्रात॥
जिहतिहभांति ताहि समुझाय। लेआवो अपनेघर भाय३५५॥
किंकर ऐसीविध समुझाय। चारुदत्तपै दयो पठाय॥
सोनर ततछिन पहुँच्योतहां। चारुदत्तबैठो है जहां॥३५६॥
देखिताहि कीनो परनाम। तासौं बचन चये अभिराम॥
अहोलाल मैं चाकर तोहि। पठयो भानुदत्तने मोहि॥३५७॥

अड़िल्ल।

कही बात सब तात कानदेकर सुनो।
मैं हूं करत बखान आपने जिय गुनो॥
चलोगेह ततकाल बुलाये मायने।
करत बहुत दुख सरब तुम्हारे लायने॥ ३५८॥

चौपाई।

जो जो बात कहींथीं भान। ते सब किंकर कहीं निदान॥
सुनकर चारुदत्त सबबात। उत्तर दयो न एकौभ्रात॥३५९॥
रह्यो मौनधर सो तिहँकाल। उत्तर दयो न कछु तसुहाल॥
तबसो किंकर विलखित भयो। ततछिन भानुदत्तपै गयो॥३६०॥
तिनसो बात कही सबजाय। चारुदत्त आवे नहिं भाय॥
टेरतैं बोलै नहिं बैन। पर्‌यो मोहकरि पीड़ित मैन॥३६१॥

सुनी सेठने किंकर बात । बहुत भयो दुख ताके गात ॥
चारुदत्त वेश्याके गेह । रहैसोय सुख परम सनेह ॥ ३६२ ॥
गनिका खरची लेय मंगाय । भानुदत्त तसु देय पठाय ॥
ऐसीविधबीत्यो कछुकाल । निघटन लग्यो द्रव्य घर माल३६३॥
तबसो सेठि विचार कराय ।अब कछु कीजै फेरि उपाय ॥
तातैं आवै गेह कुमार । सो अब कीजै कछू विचार॥३६४॥

सोरठा।

ततखिन चाकर टेरि, ताको समझावत भये।
बचन कहे तिन फेरि, चारुदत्तपै जाउ अब ॥३६५॥

दोहा।

तासौं यह कहियो अबै, हेकुमार ! तुमतात।
रोग भयो तिनकों अधिक, पीड़ित सो बहुगात ॥३६६॥
तुम देखनकी आस नित, रही नयन भरपूर।
तातैं चलिये अब सही, करि विभ्रम सब दूर ॥३६७॥
ऐसीविध समझाय सो, पठयो तिन ततकार।
आयो किंकर बेगि तहँ, राजै सेठिकुमार ॥३६८॥

चौपाई।

नमस्कारकर बोलत भयो । स्वामी मोहि सेठि पाठयो ॥
भानुदत्त बहु विकलशरीर।पीड़ितरोग महागंभीर ३६९॥
पीड़ाकरि पायो दुखगात । है संताप बहुत तुम तात ॥
तुमदेखनकी बहुतै आस । तातैं चलो तातके पास ॥३७०॥
बहुतभांतिकरि तिन बच चये । चारुदत्त बोलततब भये ॥
बड़े बड़े जो वैद्यमहान।राजवैद्य वैद्यन परधान ॥३७१॥
रस औषधके जाननहार । गुनकर लीन चतुर सरदार ॥
तिनहिंबुलाय लेहु करिनेह।तिनको मनवांछित धनदेहु३७२॥

विविधभांति औषध बनवाय। नीकीकरौ पिताकी काय॥
दूरहोय तासौं सबरोग। करौजाय सो ततखिन जोग ॥३७३॥
और विचारौ मनमाति भाव। द्रव्यखरचि गंद दूर कराव॥
हमकह आयकरैं उनतीर। आवत बनैं नाहिं मो वीर ॥३७४॥
यहकह रह्यौ मौनधरि सोय। उत्तर बहुर दयो नाहिंकोय॥
तबसो किंकर मनपछिताय। गयोसेठिपै बहुअनखाय॥३७५॥
जो जो बात चारुदत कही। सो सो सरब प्रकाशन ठई॥
सुनतबात विकलसो भयो। मानो बज्रवायुको दह्यो ॥३७६॥
मनमैं सोचै बहुपछिताय। कर्मदोषसो खोरि लगाय॥
दुखकरि सो राजै जिहँठौर। यहविध कालगयो कछुऔर३७७
फिर तामनमैं उपज्यो सोच। देखन बदन पुत्रको रोच॥
तब अकुलाय दासकोटेरि। गहभरि तासौं बोल्यो फेरि३७८॥
और जाहु तूं अबकी बार। ततखिन चारुदत्तकी सार॥
तासौं कहिये सबसमुझाय। अरेदुष्ट तूं छोड़कुभाय ॥३७९॥
अर तासौं कहियै यह साज। तेरोपिता गयोमरि आज॥
तिनको काजकरो चालि हाल। तुमहीं घरके हो रछपाल ३८०॥

सोरठा।

जिह तिहँ विध समझाय, लाव टेर घर नंदको।
किंकर दयो पठाय, भानुदत्तने तुरत ही ॥३८१॥
किंकर पहुंच्यो धाय, चारुदत्त बैठो जहां।
नम्यो तासुके पाय, हाथजोरि लाग्यो कहन ॥३८२॥

चौपाई।

हे कुमार! सुनिये मोबात। मरण भयो अबही तुमतात॥
तातैंचलियै घरमहाराज। तिनको बेगि सम्हारोकाज॥३८३॥

१ रोग।

दागदेहु किरिया चलिकरो। औरबात मति मनमैंधरो॥
औरबचन बहुकहे बखान। तेसब सुने चारुदतकान॥३८४॥
तवसुन बचन सेठिको नंद। किंकरसौं बोल्यो बचमंद॥
श्रीखंड चंदन घनसार। कुमकुम अगर सुगंध अपार॥३८५॥
इन्है आदि बहु वस्तु मंगाय। नानाभांतिन बसनउढ़ाय॥
अरु सबसज्जन मिलिपरिवार। करौपिताजीको सँस्कार३८६॥
आवत नाहिंबने मोवीर। सबसौं यह कहियो धरधीर॥
तब किंकर बहुविध समुझाय। मानीबात न एको भाय ३८७॥
तब किंकर बहुविलखित भयो। ततखिन भानुदत्तपै गयो॥
कहतभयो सुन स्वामीबात। चारुदत्त आवै नाहिंभ्रात॥३८८॥
तुम जो मोसैं बातैं कहीं। ते मैं सर्व प्रकाशी सही॥
अरुमैं बहुतभांति समुझाय। मानै बचन न एकौभाय॥३८९॥
चारुदत्त भाषीं जे बात। ते सब कहीं सेठिसौं गात॥
सुनतसेठिकौं अति दुखभयो। मानो बज्रघावसौं दह्यो॥३९०॥
पश्चाताप करै अत्यंत। विकल भयो सो तनमन संत॥
दुखकरिसेठि गेहनिजरहे। अबयह कथन कुमरपै बहे॥३९१॥
चारुदत्त वेश्याके धाम। भोग भोगवै सुखसौं ताम॥
गनिकादासी नितप्रति आय। मांगैधनसो लेयबंधाय॥३९२॥
ऐसीविध बरषैं छह भई। आधो धन ताको निघटई॥
सोरह कोड़ि तासुसौं खाय। ऊपर कछूलाख अधिकाय ३९३॥

अडिल।

पिता श्रेष्ठी भानु बहुत पछिताय है।
खोटे व्यसनमैं देखि नंद अधिकाय है॥
बहु विपरीति सु देखि तासु तब दुख भयो।
करै विचार जु सेठि सु कातर मन ठयो॥३९४॥

चौपाई।

सेठि विचारी मनमैं भाय। चारुदत्त हमको दुखदाय॥
अब नाहिंबनत और कछुवात। दीक्षाग्रहन करौं परभात ३९५॥
अब जाने धौं कैसी होय। कर्मरीति जाने नहिं कोय॥
असुर यक्ष अरु खगपति शेश। नारायण चक्रेश दिनेश ३९६॥
ए नवि पग आगे चलि धरैं। कर्म करावै सोई करैं॥
जो विधि अक्षर लिखे लिलार। ताकोकोइ न मेटनहार ३९७॥

अडिल्ल।

कर्म बली संसार लग्यो या जीवसौं।
दुख सुख ता परमान छुटत नहिं थीवसौं॥
कर्महिं जिय जगमाहिं भटक तु वायकैं।
कर्म लग्यो अव आय देखिये चायकैं॥ ३९८॥

चौपाई।

तातैं और न कछू विचार। जिन दीक्षा धरिये ततकार॥
यह दुखधाम महा संसार। भ्रमत जीव नाहिं पावै पार॥३९९॥
मनमैं निहचै करि आचरन। चलिये प्रात जिनेश्वर सरन॥
ततखिन नारी लई बुलाय। तासौं कहत भये समझाय॥४००॥
तबहीं बधू बुलावत भये। हृदय खोलि तासौं बच चये॥
संयम शील धरो दृढ़ चित्त। श्रावकके व्रत पालो नित्त॥४०१॥
हम तौ कहूँ जाय जिन शरन। नाशै जन्मजरा अरु मरन॥
चारुदत्त मागै दिन सार। दीजैताको धन नर नार॥४०२॥
सेठि जायकरि बनमें ठयो। गुरुके पास महाव्रत लयो॥
भानुदत्तने मुनिव्रत धरे। जन्म जन्मके पातिक हरे॥४०३॥
सुनिये कथा भविक अब और। चारुदत्त राजे तिहँ ठौर॥
निशिदिन बहु लीलामें रहै। राग रंगमें बहुविध बहै॥४०४॥

और खवरि ताकौं कछु नाहिं। भोग भोगवै करै उछाहिं॥
वेश्यादासी नितप्रति आय। जो मागै सो लेय वँधाय॥४०५॥
ऐसें करत रहे दिनमान। बीती और बरष छह थान॥
सोरह कोटि द्रव्य तिन और। खोयो रमि वेश्याकी पौर॥४०६॥
घरको द्रव्य सर्व ही गयो। पाछें सुनो और जो भयो॥
वारह सहस जानियो सार। सुवरन के लीने दीनार॥४०७॥
गहने धरी हवेली तवै। रह्यो नाहिं धन ताघर जवै॥
सो भी धन वेश्याके गयो। सासुवहूको बहु दुख भयो॥४०८॥
तव नारी अपने आभरन्। देय तासुको नाना बरन्॥
गहनोवहु गजमोंतिन हार। जो घरमैं सो देय अपार॥४०९॥
दुखकरि वहुत रहैं घर माहिं। कर्मदोष सो खोरि लगायं॥
एक दिवस इक भामिनि कोय। वोली सेठिबधूसौं जोय॥४१०॥
अब तूं देय कछू मति दाम। दासी भक्ति करो निज ताम॥
अरु तासौं अपना दुख जोय। कहिये मोपर कछू न होय॥४११॥
सूत वेचि आवै जो कोय। तव घरको प्रतिपालन होय॥
कहियो दासीतैं सव तोय। भामिनि मनमैं ऐसो जोय॥४१२॥
तौलों दासी आई तहां। सेठिवहू मनसोचै जहां॥
लागी कहन द्रव्य मो देहु। चारुदत्तने पठई एहु॥४१३॥
वोली चारुदत्त की नारि। दासीकी वहु करि मनुहारि॥
पटरस भोजन ताहि जिमाय। ताकी विनयकरी अधिकाय॥
अरु तासौं यह लागी कहन। रहटासूत विकानो जहन॥
जो पैं उनको कारज होय। बेचौ देह समपौं सोय॥४१५॥
दासी मिहरवान तव भई। हुइ प्रसन्न तासौं वच चई॥
तूं जिय दुख मति मानै कोय। अव तूं देखि कहा धौं होय४१६

दासी बहुरि गई तब तहां। चारुदत्त अरु गनिका जहां॥
तासौं बात कही समुझाय। पूनी रहँटा सूत बिकाय॥४१७॥
द्रव्य न रही तासुके धाम। भूखनमरैं मात अरु भाम॥
तिनको दुख अब कह्यो न जाय। धाम माल सब गयो बिकाय
गणिका सुनत विकल बहु भई। यह विभूति कहँ छिनमें गई॥
तब बसंतमाला हरषाय। बोली चारुदत्तसौं आय॥४१९॥
चारुदत्ततूं इहँतैं जाहु। तेरेघर दुख होत अथाहु॥
धन नहिं रह्यो जु एकहु दाम। तातैं अबहिं जाव निज धाम॥
जौलौं काल फिरै तुमगेह। तौलौं फिर मति आवौ एह॥
रह्यो मौन हुइ ज्वाब न देय। अरु नहिं घरकी खबरि करेय४२१
ऐसो भयो गरक तासंग। सुधिबुधि गई भई मति भंग॥
खबरि नाहिं ताकौं कछु और। रहै पर्‍यो वेश्याकी पौर॥४२२

सोरठा।

अरु वेश्याकी धीय, चारुदत्तसों नेह बहु।
राखै अपने जीय, पलक एक छोड़ै नहीं॥४२३॥
रात्रिदिवस निज गेह, रमै चारुदत संग सो।
नेक न छोड़ै नेह, तब बसंतमाला झुरै॥४२४॥

दोहा।

वंश विगोवै तासुको, छिन छिन गारी देय।
अरु बसंततिलका तिसै, छोड़ै नेक न नेह॥४२५॥
वह बसंतमाला तबै, देखि प्रीतिकी रीति।
तब बसंततिलका कनै, कहति भई सब नीति॥४२६॥

अडिल्ल।

हे पुत्री! सुनि मोहि शीख तोसौं कहौं।
हीनधनीसौं प्रीति छोड़िये यह कहौं॥

होय कोइ धनवान नेह तासौं करो।
वेश्यनकी यह रीतिजानि मनमें धरो ॥४२७॥
गनिकाकी यह रीति शास्त्रमें है कही।
द्रव्यहीन जो पुरुष ताहि सेवै नहीं॥
कामदेवसमरूप होय धनहीन है।
तौ भी प्रीति न करै तासु यह लीन है ॥४२८॥

चौपाई।

वेश्या धनियनकौं भोगवै। हीन पुरुष किनि कैसो अवै॥
द्रव्यहीन कामछबि धरै। अंगीकार कदापि न करै ॥४२९॥
गनिकाकी यह जानोरीति। तातैं छोड़ि जु यासौं प्रीति॥
जाकेगेह दुखितसब लोग। धनबिनकरत सरबही शोग४३०॥
भूखनमरत रातदिन जांय। खानपानको नाही पांय॥
तूनेकरी ताहिसौं प्रीति। गणिकनकी यहनाहीं रीति ॥४३१॥
तातैं तजहु सुता तुम नेह। चारुदत्त पहुंचे निजगेह॥
मिलै जाय अपने परिवार। बात हमारी मानो सार ॥४३२॥
ऐसैं कही बहुतसी बात। पुत्रीकौं समझावति मात॥
तब बसंततिलका निजकान। माताबचनसुने मनआन४३३॥
जो जो बातकही सबमाय। सुनी सरब तानै मनलाय॥
उत्तर तबहिं सु लागीदेन। मुखतैं बोलति मधुरेबैन॥४३४॥

दोहा।

तब बसंतातिलका कहै, मातबचन सुन सार।
इसभव तौ मेरै सही, चारुदत्त भरतार ॥४३५॥
और सरब जानो सही, भाई पिता समान।
चारुदत्त ही रमन मो, इसभव ठीक निदान ॥४३६॥

तब बसंतमाला बचन, सुने सुताके ऐन।
फेरि सुता समुझाइ है, माने एक न वैन ॥ ४३७॥
चारुदत्तको पलक इक, छोड़े नाहीं सोय।
तब बसंतमाला झुरै, मनमैं कोपित होय ॥४३८॥

चौपाई।

अधिको नेह लगायो जबै। करि थिरता मनमाहीं तबै ॥
जानी गनिका अधिकीप्रीति। छूटतिनाहिं नेहकी रीति ४३९॥
अरु जानै मन औरै ठई। जनमप्रीति अब छूटै नहीं ॥
तातैं कीजे कछू उपाय। चारुदत्त मोघरतैं जाय ॥४४०॥
ऐसो मनमैं कियो विचार। छिन छिन ताको देती गारि॥
एकदिवसकी कही न जाय। विधिने जैसोरच्यो उपाय ॥४४१॥
कर्मलिखी सो निह्चै होय। ताको मेटि सकै नहिं कोय ॥
तबगनिका यहकियो विचार। चारुदत्त घरजाय न सार॥४४२॥
अरु बसंततिलका सुंदरी। छोड़ति नाहिं ताहि पलघरी ॥
तातैंकीजे वेगिउपाय। चारुदत्तमो घरतैं जाय ॥४४३॥
तब गनिका करि चित्तविचार। दोनोंकों दीनो अहार ॥
तामैंदयो अमलकछु घोरि। दीरघभोजन दयोबहोरि ॥४४४॥
करि अहार दोनौ निशिमाहिं। गएसोय कछु खबरि जु नाहिं॥
रजनी गई एक दो जाम। मायबसंत विचारै ताम ॥४४५॥
अव तौ दाव बन्यो है आय। कीजे अबही वेग उपाय ॥
सोवे चारुदत्त तहँजाय। ततखिन लीनो कुमर उठाय ॥४४६॥
ताकौं निराभरण तिन कियो। ताके हातपांव बांधियो ॥
अरुसो ततखिन कंबललाय। तामैं गठरी बांधी आय ॥४४७॥
ताकौं खबरि नेकहू नाहिं। मदमैं छकित वहुत तिहँठाहिं॥
सो गठरी वेश्या ले आय। विष्टाधाम धरी तव जाय॥४४८॥

दोहा।

ततखिन गनिका पकरिकें, विष्टगृह के माहिं।
डारयो विष्टमध्य सो, संक करी कछु नाहिं ॥४४९॥
नरकघोर दुख तहँ सहै, विष्टगृह की सींव।
कै जानै करता सही, कै जानै वह जीव ॥४५०॥
सरवदेह ताकी बँधी, उठयोजाय नहिं तासु।
कछुयक मदमैं गहलजौ, सुधिबुधि नाहीं जासु ॥४५१॥

सोरठा।

विष्टगृह के माहिं, विष्टा भखिवा सूकरी।
आई मिथ्या नाहिं, ताको मुख चाटन लगी ॥४५२॥
चारुदत्त तिहँ थान, बोल्यो हातपसारि कें।
हे बसंततिलकान !, तूं मेरे सुन बचन अब ॥४५३॥
आवति नींद अपार, छायरही मो देहमैं।
अलग बैठ तूं नारि, जब जागों तब बोलियो ॥४५४॥

दोहा।

यही ताहि रटना लगी, हे बसंततिलकान !।
और विसरि सब सुधि गई, अपनी दशा निदान ॥४५५॥
अहो करमकी रीति यह, देखौ नर गुणवान।
कहां जु वे चतुराईयां, कहां जु यह अपमान ॥४५६॥

अडिल्ल।

चारुदत्त तिहँथान बहुत दुख ही सहै।
पर मनमैं यह ध्यान बसंततिलका कहै॥
और न दूजी बात कछू मन आनही
टेरि टेरि तसुनाम सुक्खकर मानहीं ॥४५७॥

१ पायखानेमे।

चौपाई।

चारुदत्त विष्टाके धाम। नरकघोर दुख देखत ताम॥
यहतौ कथा रही इहँठौर। आगे कथन सुनो अब और॥४५८॥
नगर मध्य पुरको रखवाल। चौकी देत फिरै कुतवाल॥
फिरत फिरत सो आयो तहां। गणिकाको मंदिरहै जहां॥४५९॥
चारुदत्त विष्टाके धाम। तिलका रटन लगी तिसठाम॥
तबसुनि कोतवाल इमकही। कौन पुरुष इहँ बोले सही॥४६०॥
तब बोल्यो किंकरसौं बात। विष्टाधाम कौन है भ्रात॥
देखौतौ नीकैं को लोय। लावो वेगि जु कोई होय॥४६१॥
तब किंकर देखै निज नैन। ताकों पूछै कहि कहि बैन॥
कोहै बोल कहा तो नाम। कौन जाति अरु कहँ तो धाम ४६२॥
कोहै तात मात कहँ थान। काहेकौं आयो इस ठाम॥
रजनीसमय डारिको गयो। काहेकौं दुखदेखत भयो॥४६३॥
वेगि बात कह अपनी वीर। कौनै वांध्यो तोहि शरीर॥
चारुदत्त तब बोल्यो ताम। याही नगरमाहिं मोधाम॥४६४॥
भानुदत्त श्रेष्ठीको नंद। चारुदत्त मोनाम गुनंद॥
गणिका डारिदियो इसठांय। अमल उतरि तबगयो बनाय॥
भयो सचेत सोय तिहँवार। कहत भयो बचसो ततकार॥
कोतवालसौं सब बिरतंत। कहोजासु पहिलो अरुअंत॥४६६॥
कोतवाल सुनि ये सब बैन। जानी चारुदत्त है ऐन॥
काढ़िलियौ ताकौं तिसकाल। ताके बंधन छोड़ेहाल॥४६७॥
अरु ताकी निंदा बहुकरी। सबमें अपकीरति उच्चरी॥
बुरीबात तासौं बहुकही। अरु तासौं बोल्यो इमसही॥४६८॥
धर्मवंत सज्जन तो तात। ताकेसुत उपज्यो दुखदात॥
कोटिबतीस द्रब्यको धनी। ताविभूति कछु जायनागिनी ४६९॥

सोधन तैनें दियो गमाय। लागो कुकरममैं अधिकाय ॥
जन्म जन्मको अपजशलयो।खोटे व्यसनमाहिं लगगयो॥४७०

कुंडलिया।

सुखरासी सज्जन सुनो, तजो पराई नारि।
कहि भारा यह बीनती, विहवल बुद्धि निवारि ॥
विहवल बुद्धि निवारि मारि मकरध्वज[1] भाई।
बारबार शिख तोहि छाँडि मूरख लरकाई ॥
हँसि हैं जगके लोग कानि पति सगरी जासी।
परकामिनि परिहरौ अहो! सज्जन सुखरासी ॥४७१॥
हा हा! करि बिनती करों, सीख कहों यह मूल।
जे नर परदारा रमें, तिनके मस्तक धूल ॥
तिनके मस्तकधूल और धृग जीवन तिनको।
करैं नेह पररमनि छांड़ि मूरख निज तियको ॥
प्रगट भयें पतिजाय सुजन यह कौन सलाहा।
परकामिनि परिहरौ करौं बिनती अरु हाहा ॥४७२॥

दोहा।

होसी यहगति तासुकी, चारुदत्त जिहँभांति।
जे नर निजधन देयकैं, परदारा जु रमात ॥४७३॥
अंतसमय दुरगति लहैं, महा दुखनको धाम।
जे नर शील गमावहीं, होय रहे वशकाम ॥४७४॥

चौपाई।

कोतवाल मनमैं दुखकारि। चारुदत्तकी दशा निहारि ॥
मनमैं विकलप बहुत उठाय।करमदोषसो खोरि लगाय॥४७५॥

---

१ कामदेव।

जोकछु विधिने लिख्यो लिलार। ताकौं कोइ न मेटनहार ॥
करमलिखी सो निहचै होय। ताकौंमेटि सकै नाहिंकोय ४७६॥
सवैया।
कबहूं नृपराज चढ़े गजराज चलें दलसाज सबे सुखजोई।
कबहूं फिर रंकभये बहुनेक सु मांगत भीख फिरै कनदोई॥
कबहूं फिर नर्क महादुख है कबहूं बहु इंद्रिनके वशहोई।
भारामल निहचै जान यही पर कर्मकरै सुकरै नहिंकोई४७७॥
सोरठा।
जो ढूंडो सब ठौर, सुरपुर नरपुर नागपुर।
यासम कोऊ न और, बली करम सो जीयरा ॥४७८॥
चौपाई।
यहकहि कोतवाल गयोकाम। चारुदत्त तब पठयो धाम ॥
चारुदत्त पाछैं सु कुमार। निजघरकों चाल्यो तिहँबार॥४७९॥
गयोसोय निज मंदिर तहां। लाग्यो भीतर पैठन जहां ॥
जाकें गहने मेल्यो धाम। ताके चाकर बैठे ताम ॥४८०॥
तिन दरवाजे रोक्यो सोय। घरमें जान न देशी कोय॥
चारुदत्त बोल्यो तिहँबार। भानुसेठको यह दरबार ॥४८१॥
तब किंकर बोल्यो तसुबात। गहने मेलि खाइयो भ्रात ॥
तिनकेबचन सुने बलबीर। भयोदुक्ख थरहरचो शरीर४८२॥
तिनसौं बात कुमर फिरि कहै। मेरी माता किसथल रहै ॥
अरु मेरीनारी किसठांय। मोसो बात कहौ समुझाय ॥४८३॥
और कहां निर्धन हैं वीर। बेगि बतावहु मोको धीर ॥
तब दरवानी तिनमैं कोय। चलोलिवाय कुमरकों सोय ॥४८४॥
चलत चलत सो पहुँच्यो तहां। माता नारि रहैं तसुजहां॥
एक झोपरी जीरन महा। सो दिखायदीनी बचकहा॥४८५॥

यामें रहैं मात तो वाम। काल वितीत करैं इस ठाम॥
चारुदत्त तब सुनिकर सबै। गयोपास माताके तबै॥४८६॥
देखि अवस्था ताकी सोय। ताके अंग बास बहु होय॥
माता नारि बहुत दुख लह्यो।सो मोपर सबजाय न कह्यो४८७॥
पाछैं माता नीर मंगाय। और सुगंध अनेक डराय॥
सुचि लेपनकर तन उवटाय। चारुदत्त असनान कराय॥४८८॥
पहिरनवसन दये ता योग। तब मनमैं बहु कियो वियोग॥
लागोकंठ मायके सोय। दईधाह तिन बहुतैरोय॥४८९॥
अरु अपनी बहुनिंदा करी। हाहाकार कियो तिहँघरी॥
माता हौं पापी परवान। अरु मैं हौं मतिहीन अयान॥४९०॥
अपयश सकललोकमें भयो। मातासौं इमि कहतो भयो॥
अरु दुखसुखकी बातैं जोय। कहतभयो मातासौं सोय४९१॥
तब माता सुनि ताके बैन। बोलति भई तोयभरि नैन॥
कोड़ि बतीस द्रव्य मोसार। सोतू लेय रम्यो तसुद्वार॥४९२॥
अरु तूने बहु अपयश लयो। तेरो तात तोहि दुख गयो॥
तबसुनि दुक्ख पाछिलो कियो।ततखिन नारिपास पहुंचियो॥
नारि बहुतदुख तासौंजोय। कहतिभई अपनो दुखरोय॥
नारिबचन सुनि यों अवदात। तब सो लाग्यो कहन जु बात॥
हे भामिनि तूं गुनन निधान। शील धुरंधर परम सुजान॥
तोसम तिया न दूजी कोय। देख बलभा मनमैं जोय॥४९५॥
हौं पापी पापनकी खानि। तोकौं बहुदुख दिये सुजान॥
कियोजाय गनिकासौं नेह। हे भामिनि तजि तेरोगेह॥४९६॥
ताने मेरो सबधन हर्‍यो। अरु मोको विष्टागृह धर्‍यो॥
तिनमोकों ऐसो दुखदयो।नरकसमान जाय नहींकह्यो॥४९७॥

पूरबकरम लिखी जो होय। ताको मेटि सकै नहिं कोय॥
करमवली जगमें सरदार। ताकौं कोऊ न मेटनहार॥४९८॥

कवित्त।

कबहूं रवि आन उगैदिशवारुनं, सागर थाह किनी जु धरै।
मेरुपै फूल कदाचित अंबुज, इन्दुकलाहुमें आग जरै॥
अंमृत वाश करै अहिकेमुख, तूल हुतासनमें न जरै।
कोड़िउपाय करो भारामल, करमलिखी कबहून टरै॥४९९॥

सोरठा।

अनहोनी नहिं होय, होनहार छूटे नहीं।
लाख करो जो कोय, चतुराई बुध कोटिहू॥५००॥

चौपाई।

याहीने मोकौं दुख दयो। पूरबकरम सु सांचो भयो।
अब हौं देखौं अवर जु कर्म। निकसिविदेश जु पाऊंपर्म ५०१॥
तहां करौं व्यापार अघाय। लाऊं जहतैं द्रव्य कमाय॥
देशांतर जाऊंमें प्रात। तब भामनि बोली सुनबात॥५०२॥

चाल भैरवी की।

बोली नारि सुलछनी पिय प्यारे हो।
कंथ सुनो मोबात लाल पिय प्यारे हो॥
हांत मोहि दुखगात लाल पिय प्यारे हो॥५०३॥
नामलेहु मति देशको, पिय प्यारे हो।
घरहिं करो व्योपार सुनो पिय प्यारे हो।
कहा विदेशहि जात लाल पिय प्यारे हो॥
सूत कातिहूं मैं सही, पिय प्यारे हो।
पोषो तुम निजगात लाल पिय प्यारे हो॥५०४॥

१ पश्चिमादेशा में।

मिहनत मेरे सूतकी पिय प्यारे हो।
आनंदसों विलसेय लाल पिय प्यारे हो॥
इह माति मनहिं विचार हो पिय प्यारे हो।
देशगमनको भेव, लाल पिय प्यारे हो॥५०५॥
दुखसुखसों निज सदनहीं पिय प्यारे हो।
काल गमाबो सार लाल पिय प्यारे हो॥
बाहिर क्याजाने सही पिय प्यारे हो।
दुखसुख परत अपार लाल पिय प्यारे हो॥५०६॥
तातैं दासीकी कही पिय प्यारे हो।
मानो मनबचकाय लाल पिय प्यारे हो॥
यह तुमको चाहिये नहीं पिय प्यारे हो।
तजि कर मोकों जाहु लाल पिय प्यारे हो॥५०७॥

दोहा।

चारुदत्त लाग्यो कहन, सुनो बल्लभा बात।
धनबिन एकौ काजहू, होय-नहीं तुछमात॥५०८॥

चौपाई।

धनबिन मानमहत नहिं होय। धनबिन बात न पूछै कोय॥
धनबिन महाकपूत कहाय। धनबिन सबही सुधि बुधिजाय॥
धनबिन सेवक सेव न करै। धनबिन भूपति नागो फिरै॥
धनबिन एकोकाज न होय। धनबिन शत्रु मिलापीसोय॥५१०॥
भूखमरै भोजन क्या करै। दुख पांऊ क्यों सुख संचरै॥
निकसिविदेश नहीं संदेह। द्रव्यकमाय आउं पुनिगेह॥५११॥
कहैनारि सुनकंत विचारि। चाचा पूंछि शीख अवधारि॥
माता चचापास तुम जाय। दैंयशीख सो करियो आय॥५१२॥

१ मात्र।

चारुदत्त गुण पूरनधीर। मातापास गयो बलबीर ॥
कहतभयो मातासों सोय। जाउंविदेश हुक्म जो होय॥५१३॥
तहां करौं उद्यम कछुजाय। तहँतैं लाऊं द्रव्य कमाय ॥
तब सबकाज होय सुनमात। तातैं चलौं दिशांतर प्रात॥५१४॥
सुनतबात मातहि दुख भयो। चारुदत्तसौं तब इम कह्यो॥
अहोपुत्र अजुगत कह कहो। मेरेमनको संशय दहो ॥५१५॥
बहुरो यहमति कहो गुणाल। मो मनमें दुख व्यापत लाल॥
कहाधरयो परदेश तुम्हार। करिये उद्यम गेह कुमार ॥५१६॥
बारहबरस पीछें मो मिले। देखत दुख मनके सबदले ॥
और बिसार दई सबबात। तुमदेखे नंदन कुसलात ॥५१७॥
तातैं गेह करो व्यापार। बात हमारी मानो सार ॥
जंपै चारुदत्त तब बाल। हे माता सुनिये ततकाल ॥५१८॥
मैं अपजस जगमें बहु लह्यो। अरु मो घरमें धन नहीं रह्यो॥
मोपर मुख न दिखायो जात। लज्जावान भयो बहु मात॥५१९॥
कैसें वदन दिखाऊं मात। तातैं जाउं दिसंतर मात ॥
जब कमाय ल्याऊं धनसार। तबही गेह करौं पैसार॥५२०॥
यह माता तूं निहचै जान। द्रव्य कमाय आय हौं थान॥
बहुतभांति समझाई माय। तबसुनि मात विचार कराय ५२१॥
माता चलत जानियो सोय। तब निजभ्रातहिं टेरयो जोय॥
तासौं बात कही समुझाय। चारुदत्त परदेशहिं जाय॥५२२॥
मैं समुझायो ताकों नेक। मानत नाहीं मो बच एक॥
तेरो सोइ जमाई भाय। ताकों तूले निज समुझाय ॥५२३॥
तबसुनि सिद्धारथ सुनि बैन। चारुदत्तसौं बोल्यौ ऐन॥
सुनियो कुमर मोहिवच धीर। क्यों परदेश जात हो वीर ५२४॥

१ फिर भी। २ गुणलय=गुण का घर। ३ कहे। ४ प्रवेश।

जोधन तुमको चहिये तात। लेहु द्रव्य तो मनहिं समात॥
मेरेघरमैं धन अत्यंत। सोरहकोटि द्रव्य गुणवंत ॥५२५॥
तुम धन लेकर मनवच सोय। कर व्योपार निसंकित होय॥
जबविढ़वो तबदीज्यो मोहि। छाड़त नारि लाज है तोहि ५२६॥

दोहा।

बहुत भांति समुझाइयो, चारुदत्तकों बात।
तब सुनि सेठकुमार फिर, कहत भयो अवदात॥५२७॥

अड़िल्ल।

सिद्धारथ मो वचन कान देकैं सुनो।
मैंहूं करौं बखान आपने जिय गुनो॥
अब हमको इस ठौर जोग रहनो नहीं।
चलूं दिसंतर वेगि बात निहचैं सही॥५२८॥
करिहौं तहँ व्योपार आपने चाव स्यौं।
द्रव्य कमाऊं सार तबहिं घर आव स्यौं॥
उद्यम या संसार माहिं सुखदाय है।
उद्यमतैं सबकाज सरै मनभाय है॥५२९॥

पद्धड़ी छंद।

बिनउद्यम कछुय न होइ जाम। उद्यमबिनु कहा करै जु काम॥
उद्यमबिन नरबहुदुख लहंत। उद्यमबिन दालिदनहिंदहंत५३१
उद्यमबिन नर बैठ जु खाय। अगलो तिन धन निहचै सु जाय॥
उद्यमबिन नाहीं होयमान। उद्यम है जगमैं गुरु प्रधान ५३१॥
बातैं बहु कौन करै बखान। निहचै चलिहौं परदेश थान॥
यहसुनि सिद्धारथ रह्योचाय। तबदीनो ज्वाब न फेरि ताय॥

चौपाई।

सुनकरि बचन मात दुखलह्यो। भरिलोचन तासौं इम कह्यो॥
तैं वेश्या घर कीनो वास। तो बिनमैं कीनो दुख त्रास॥५३३॥
किम किम करि जु देखियो नैन। अबतैं बुरे सुनाये वैन॥
काहेकौं परदेशहिं बहै। बार बार माता यौं कहै॥५३४॥
चारुदत्त इम कहैं पयासि। मातासौं निजकरि अरदास॥
रहतबनै मोसौं नहिं माय। बहुतबचन मो कहा कहाय॥५३५॥
मातासेव बहूके पास। करवइयो सो बचन पयास॥
यहकहि नमसकार तबकियो। भामानि वाहि माय सौंपियौ॥
बोलि ज्योतिषी उत्तम कोइ। सगुन विदेश पूंछियो सोय॥
सोधिदिवस तिन नीकीधरी। गमनविदेश कियो मनररी ५३७॥
खरचीलई नारिके पास। मारग गमन चलनकी आस॥
घरतैं चल्यो महा गुनवंत। मनमैं सुमरन करि अरहंत॥५३८॥
तस मामा सिद्धारथ नाम। सुन्योकुमार गमन तिहँठाम॥
ताकेमन उपज्यो बहुमोह। अतिही भयो तासकौं छोह ५३९॥
सोघरतैं निकस्यो अकुलाय। चारुदत्तके पीछैं जाय॥
दोऊवीर भये तब संग। चले विदेश आपने रंग॥५४०॥
तजत चले पुरगाम सुदेश। नांघत परबत नाहिं कलेश॥
मारगमाहिं चले सोजाहिं। देखत कौतुक महा उछाह॥५४१॥

दोहा।

देश बलाकाके विषैं, पहुँचे दोऊवीर।
सीमावति सरिता तहां, टिके तासुके तीर॥५४२॥

१ प्रकाश करके। २ बुलाकर।

चौपाई।

दोऊ मनमैं चकित भये। कारज कहा विधाता ठये॥
खरचीतुच्छ बनज नहिंहोय। तातैं करौ उपाय जु कोय ५४३॥
तबदोनों मिल कियो विचार। जैसो धन तैसो व्योपार॥
तब तिन मूरा करे खरीद। बांधगाठरी तहां धरीदि॥५४४॥
निजनिज शीश धरी स्वयमेव। चले तहांतैं दोनों एव॥
चलत चलत सो पहुँचे तहां। नगर पलासपुर राजेजहां ५४५॥
पूरन धनकरि ऋद्धिअपार। शोभित नीके हाट बजार॥
मंदिरधवल उतंग अपार। बहुत दिपै छवि तिनके द्वार ५४६॥
कनककलश तिन सीसदिपंत। कुंरीछतीस बसै धनवंत॥
दोनोंवीर कियो परवेस। नगरमध्य सुख कियोअसेस ५४७॥
ताही नगर सेठ इक बसै। धनकन करि शोभा बहुलसै॥
बृषभध्वज है ताको नाम। ताकेगेह गये दोऊ ताम॥५४८॥
तासौं अपनो सब विरतंत। कहत भये दोनों नरसंत॥
चारुदत्तके सुन सो बैन। मनमें अधिकलियो तिनचैन॥५४९॥
आदरकरि घरमें लेगयो। षटरस भोजन जीमन दयो॥
रहिबेजोग्य दियो निजधाम। तब दोन्यौं लीनौ विसराम ५५०॥
तिसही घरके कोने थान। मूरनकी तिन करी दुकान॥
दिनप्रति मूरे बेचत रहै। आठपहर धंधेमें बहै॥ ५५१॥
इहविध कछुदिन बीते ताम। मसकतिकरि कछु विढ़ये दाम॥
तिनदामनकी लई कपास। दोऊवीर नफाकी आस॥५५२॥

दोहा।

इमि देवा लेई करैं, द्रव्य कमावैं सार।
अवर कथा आगे सुनौ, भव्य जीव चितधारि॥५५३॥

१ जाति। २ मिहनत करके।

चौपाई ।

ताही नगर एक बनिजोंर । कंजननाम कह्यो सिरदार ॥
चाल्यो सोइ दिशांतर धीर । नाना वस्तु लेय गुनवीर ॥५५४॥
ताके संग बहुत अवंवेस । वस्तु मनोहर भरी असेस ॥
ताकेचलत भयो कुहरांव । बजतभये वाजे अधिकाउ ५५५॥
चारुदत्त सुनियो सब भेवँ । कहत भयो मामासौं एव ॥
नायक एकजातु परदेस । वस्तु मनोहर भरत असेस ॥५५६॥
ताकेसंग साथमैं वीर । चलिये वेगि वस्तु ले धीर ॥
तब दोनोंने कियो विचार । करें खरीद बैल तिन चार ५५७॥
भरी कपास लादिये बैल । चलत भये देशांतर गैल ॥
टांड़ेसंग चले सो जाहिं । करत मुकाम पंथके माहिं ॥५५८॥
एकदिनोंकी कही न जाय । विधना जैसो रच्यो उपाय ॥
मारगमाहिं चलेसो जाहिं । भीलनगन आयो तिहँठांय ५५९॥
तिनसब लूटलये जनंबान । चारुदत्त सिद्धारथ जानँ ॥
अबर कपास बारि तिनदई । होत भये सबही दुखमई ॥५६०॥
तब सिद्धारथ मन पछिताय । द्रव्य न रही गांठमें भाय ॥
फिर विचार दोनो मन करयो । धीर मांडि आगे पगुधरयो ॥

सोरठा ।

भ्रमन करत दोऊ वीर, बन उजाड़ सरिता अतुल ।
पहुँचे इक थल तीर, देख्यो एक पहार तहँ ॥५६२॥
मलयागिर तसु नाम, परवत महा उतंग है ।
चढे तासु सिर ताम, ऊपर सों पहुँचत भये ॥५६३॥

---

१ बिनजारा । २ माल लेजाने के लिये बैल अथवा गाड़िये । ३ हल्ला । ४ भेद । ५ दिन । ६ मनुष्यों और बैलो को । ७ यान=सवारी बैल ।

दोहा।

रतन खानि तहँ देखियो, मनमै भये खुशाल।
तताखिन दोनो खानतैं, लये पदारथ लाल॥५६४॥
उतरे तबहि पहारतैं, चले जात पथमाहिं।
तहां भील आए तुरत, निडर शंक कछुनाहिं॥५६५॥

अडिल्ल।

लीने रतन छुराय तुरत तिन पासतैं।
बहुत संक दिखराय गये निज वासतैं॥
चारुदत्त तिहँठौर बहुत दुखही लयो।
करम दोष बहु देइ मतो औरै ठयो॥५६६॥

चौपाई।

दोनों चिंतकरि फेरि विचार। चलत भये सो राह मझार॥
मनमैं जपत पंच नवकार। नांघत कानन महाउजार॥५६७॥
चलत चलत कछु वांसर भये। प्रियंगुबेला पट्टनगये॥
तिहँपुरमें कीनो परवेस। दूरिभयो मन सबहि कलेस॥५६८॥
पट्टन शोभा देखि अपार। मनमैं सुख पायो अधिकार॥
देखत चाले हाट बजार। नाना वस्तु दिपै तहँ सार॥५६९॥
देखत महा उतंग अँवास। उज्वलबरन धरे छवि पास॥
देखत कौतुक चालेजात। आगे अवर सुनो अब बात॥५७०॥
तिहँ प्रियंगु पट्टनमें जान। वसैं जु एक सेठ धनवान॥
चारुदत्तको पिता सुमित्र। भानुदत्त ताको है मित्र॥५७१॥
सुरिंद्रदत्त शुभ ताको नाम। पट्टन रहै सोई गुनधाम॥
ताके ग्रेह गये दोऊ वीर। चारुदत्त सिद्धारथ धीर॥५७२॥
देख सेठको कियो जुहार। तब तिन वरनन कियो विचार॥

१ बन। २ दिन। ३ घर।

जानी चारुदत्त है यही। मोयमित्रको सुत है सही ॥५७३॥
तब सो सेठ मिल्यो उठिधाय। कुशलछेम पूंछी बहु आय ॥
मुखतैं मधुरे बचन कहात। हेसुत कुशलछेम तुमगात ५७४॥
चारुदत्त तब बोलत भयो। सब विरतंत पाछलो चयो ॥
तबतिन बहु कीनो सनमान। मंजन करवायो असनान ५७५॥
षठरस भोजन दीनो असन। पहिरनजोग दिये तिन बसन ॥
सेठ जु बनिज गमन तबठयो। बहुजलजंत[2] भरावत भयो ५७६॥
वस्तुअनूपम बहुतै घनी। जाकी गिनती जाय न गनी ॥
लीनो लसकर संग असेस। जोधा बाहन वस्तुविसेस ५७७॥
इंधन अन्न नीर बहु लयो। निहचौ बरषबारहको ठयो ॥
बाजे तहँ बाजंत अपार। पटह भेरि तुरही सहनार ॥५७८॥
पूजे तब जलदेव अनंत। सुरिंद्रदत्त तब चल्यो तुरंत ॥
चारुदत्त सिद्धारथ दोय। लयेचढाय परोहन सोय ॥५७९॥
लहर झकोरन चले जहाज। सागरमधि सब एक समाज ॥
मनमैं जपत पंचपरमेठि। चारुदत्त आदिक सब सेठि ५८०॥
चाले बहुतदिवस बलबीर। नांघत देस घाट बहु तीर ॥
चलत चलत कछु वासर भये। काहू दीप मध्य सब गये॥५८१॥
उतरे सागरतट गुनधाम। दीपमांहिं लीनो बिसराम ॥
वस्तुभरी निजदेश मझार। सो बेची नाना परकार ॥५८२॥
ऐसैं बनिज कियो तिहँदेस। द्रव्य कमाई तहां असेस ॥
ऐसैं रहत बहुतादिन भये। बारहबरस तहां बीतये ॥५८३॥
तहां खरीदी वस्तु अपार। भरे परोहन धनकरि सार ॥
रतनआदि जे नाना वस्तु। भरे परोहन लेय समस्त॥५८४॥

१ कहा। २ जहाज।

चारुदत्त बहुद्रव्य कमाय। ताकी गनती गनी न जाय॥
लेयद्रव्य सब चढ़े जहाज। चाले सेर्व देशे सजि साज५८५॥
पवन जोर चाले जलजंत। पहुँचे सागर वीच तुरंत॥
लहरि झकोरनि हालै जबै। सबरे जन दुख पावैं तबै॥५८६॥
एक दिनाकी कही न जाय। विधना जैसो रच्यो उपाय॥
करमलिखी सो निहचै होय। ताकों मेटि सकै नहिंकोय५८७॥
करम अशुभ कछु आयो तासु। मारयो पोतै मच्छने जासु॥
मारत फाटगये जलैंजंत। खंड खंड हुइ गये तुरंत॥५८८॥
काहू एक खंडके सीस। चारुदत्त रहगयो गुणीस॥
एक लाकड़ी ऊपर सोय। रह्यो सिद्धारथ निहचै जोय ५८९॥
बहत बहत लाग्यो जब तीर। निकस्यो सागरतैं गुणधीर॥
चारुदत्तको दुख तिन कियो। हाहा करि रोवत मन भियो॥
तब सिद्धारथ बहुदुख पाय। अपनेगह गयो अकुलाय॥
देशवृतांत सबनसौं कह्यो। परिजन मनमैं बहुदुख लह्यो५९१॥

दोहा।

सिद्धारथ दुचितो बहुत, रहे आपने थलें।
और कथा आगे सुनो, भाषै भारामल्ल॥५९२॥

चौपाई।

चारुदत्त सागरके माहिं। निकस्यो लकड़ा चढ़ि तिहँठांय॥
खवर नहीं मामाकी ताहि। चारुदत्तकी खवर न वाहि॥५९३॥
चारुदत्त दुख कियो असेस। मामा खबर न पाई लेस॥
तबसो चल्यो तहांतैं धीर। मनमैं मंत्र जपत गुनवीर॥५९४॥
उदंवरावति नगर जु गयो। देख नगर मनमैं सुख भयो॥
तहां खवर पाई तिन तंतै। सिद्धारथ घर गयो तुरंत॥५९५॥

१ सब जने। २ अपने देशको। ३-४ जहाज। ५ आम। ६ ठीक २, चौकस।

घर जैवेकी पाई खवर। मनमैं बहुसुख लीनो कुमर॥
तब सो वीर अकेलो होइ। चल्यो तहांतैं मनवच सोय५९६॥
मनमैं और विचार जु ठयो। तव सो सिंधु देशमैं गयो॥
संवर गाम तहां सो वसै। इंद्रपुरी सम शोभा लसै॥५९७॥
चारुदत्त नगरीमैं गयो। महिमा देखत बहु सुख भयो॥
चारुदत्तको पिता सुजान। भानुदत्त श्रेष्ठी गुनवान॥५९८॥
ताको मेल्यो द्रव्य अपार। कोड़ि अठारहको भंडार॥
सोधन चारुदत्त सब लयो। तसु मनमाहिं बहुत सुखभयो ५९९॥
तब बनवायो जिनको धाम[1]। तिसपर कलश धरे अभिराम॥
नानाभांति रचे उपकरन। खरचै द्रव्य सोइ निज करन॥६००॥
चार प्रकार देय सो दान। सज्जन जनको राखै मान॥
औरहु दुखित भुखित जे जीव। तिनको लछमी देइ अतीव॥
जाचकजन जो मांगै आय। तिनकौं देय द्रव्य अधिकाय॥
इहविध दान जु देने लग्यो। अरु समिकतमैं तसु मन पग्यो॥
भयो प्रसिद्ध सोइ दातार। देशदेशमैं नाम अपार॥
पूजा दान करै धरचित्त। गुरुकी भक्ति जु करै पवित्त॥६०३॥
मनगंभीर उदार अपार। सुंदरता अतिही सुकुमार॥
सरब गुननिको सोइ निधान। धरमसुभावी मधुरबखान६०४॥
लज्जावंत दयाजुत सही। छमा सत्य जोरी उरलही॥
महादान देतो जस लहै। बंदीजन मुखतैं गुनकहै॥६०५॥
दुखीदीन लखि करुना लाय। तिनकौं पोखै मनबचकाय॥
इहविध काल वितीत जु करै। पुण्यदान करि सुख विस्तरै॥
दानदेत जगमैं जस लयो। नाम प्रसिद्ध पुहमि[2] पर भयो॥
चारुदत्त सम अवर न दान। देश देश सब करै बखान ६०७॥

1 जिनमंदिर। 2 पृथिवीपर।

जो मांगै ताकौं सो देय। काहू विमुख न जान सु देय॥
इहविध दान करै अत्यंत। आगें अवर सुनो विरतंत॥६०८॥

सोरठा।

सुनिकरि दान प्रसिद्धि, एक जक्ष भुविपर अतुल।
तिन रचि मनमैं बुद्धि, देखन चाल्यो कुमरकों॥६०९॥
नाम वीर प्रनतेश, दान परीक्षाके निमित।
करि मानुषको भेष, आयो सो ता नगरमें॥६१०॥

दोहा।

महारंकको भेषधर, अरु पीड़ित बहुगात।
दुखितदेह बहु सिथलकर, आयो जक्ष सु प्रात॥६११॥
वस्तीमें मांगत फिरै, टेरि टेरि करि बैन।
आगें अवर कथा सुनो, भवजीव सुखदैन॥६१२॥

अडिल्ल।

चारुदत्त जिहँबार जातु जिनधामकों।
दरसन प्रभुको करन जपत जिननामकौं॥
ताही अवसर जक्ष समुँहिं[1] आवत भयौ।
दुखित देख तसु कुमर तबहिं पूंछत भयौ॥६१३॥
तू दुख काहे करै बिथा कह तोहि रे!।
कैकछु चांहत द्रव्य बात कहि मोहि रे!॥
तबही सुनि सब बात जक्ष इम कहत है।
मोहि पेटमैं पीर सूलकी बहुत है॥६१४॥

चौपाई।

काहू तरह न नीकी होइ। तब इक वैद्य मिल्यो मो सोइ॥
तानै दारुन रोग बताय। मानुषकी पसुरी मँगवाय॥६१५॥

[1] संमुख।

ताको सेंक बतायो मोहि। उदरपीर तब नीकी होय॥
रंकमह्ना मैं स्वामि अनाथ। पसुरी प्रापति होय न नाथ ६१६॥
तबमैं सुन्यो तुमारो नाम। अरु तोदान सुन्यो अभिराम॥
महिमा सुनि आयो इह ठौर। तू कहिये सबमें शिरमौर ६१७॥
अवर तु त्यागी महासुजान। जो तू देतौ दे गुनवान॥
अवरकछू चाहिये नहिंमोहि। अपनी बात प्रकाशी तोहि६१८॥
चारुदत्त तब सुन सब बात। तासौं मुखतैं वचन कहात॥
मैं तोकौं देहौं बलवीर। तू कछु दुख मत करै शरीर॥६१९॥
छुरी हाथमैं ततछिन लई। पसुरी काटि काढि तिस दई॥
तबसो देव सु देखि चरित्त। अचिरजवान भयो निजचित्त६२०॥
मानुषरूप कियो तिन दूर। प्रगट भयो तत्र देव हजूर॥
चारुदत्तकी पूजाकरी। अरु ताकी बहु थुति उच्चरी॥६२१॥
धन्यतात जाकैं अवतरयो। धनि तोमाय गरभ जिहँ धरयो॥
धनिसो वंश जहां तूभयो। धनि वहगेह जन्म जहँ लयो ६२२॥
धनि वहघटी धन्य तिथिवार। धनि रंजनी[1] धनि वासर[2] सार॥
धन्यधन्य तो नाम मुखार। धन्यधन्य तू जगमैं सार॥६२३॥
तोसम अवर न दूजो कोय। सबकौं सुखकारी शुभलोय॥
इहविध बहुत करी थुति तास। फिर बैठो सो ताके पास॥६२४॥
घाव छुरीको आछो कियो। निरमल देह तासु देखियो॥
जोकछु द्रव्य रह्यो भंडार। सोभी सबदीनो ततकार॥६२५॥
रह्यो जु फेर अकेलो होइ। चल्यो तहांतैं मनवच सोय॥
भ्रमनकरत पुहमीपर भयो। चलत चलत राजगृहि गयो६२६॥
चारुदत्त पुर कियो प्रवेस। देखी शोभा नगर अशेस॥
काहूथान कियो विसराम। दंडी एक मिल्यो तिहँठाम॥६२७॥

१ रात्रि। २ दिन।

विष्णुदत्त ताको पुनि नाम। दुष्ट महा पापनको धाम॥
ताकी विनयभक्ति बहु करी। ताकूं अपनी विधि उच्चरी॥६२८॥
आदिअंत सबरो विरतंत। दुखसुख बात कही सबतंत॥
तब दंडी बोल्यो हरषाइ। चारुदत्त मो बचन सुनाय॥६२९॥
मेरेसंग चलौ तुम वीर। धन चाहौ तौ साहस धीर॥
रसको कूप जहां है भाय। रसपाये मनबांछित थाय॥६३०॥
होइ रसाइन ताकी वीर। तासौं द्रव्य होय गंभीर॥
चारुदत्त सुनि हरषित भयो। तासो फेर बचन इमचयो[1]॥६३१॥

अाडिल्ल।

बेगि चलौ तिहँठौर बार मति ल्यावहू।
कै मोहि देहु बताय ईखें ले आवहू॥
सुनि तब दंडी बैन चैन मनमें लयो।
ततखिन चाल्यो संग वनीमें लेगयो॥६३२॥

चौपाई।

गये जु कानन महा उजार। जहां मनुषको नहिं संचार॥
दोनों बीर पहूंचे तहां। बन उजार कूप इक जहां॥६३३॥
दोनौं बैठि कूपकी पार। विष्णुदत्त तब करै विचार॥
चौकीसौं इक रसरी बांधि। चारौं कोन एकसे सांधि॥६३४॥
तापर चारुदत्त बैठार। तूंबी दीनी हाथ मझार॥
अरु तासों लाग्यो इम कहन। विष्णुदत्त पापी अघगहन॥६३५॥
अहो चारुदत्त गुनरासि। तुमसौं बचन कहौं परकासि॥
जब तुम पहुँचौ कूप मझार। यह तूंबी भरलीजे सार[2]॥६३६॥
धरदीजे चौकी ऊपरैं। तूं टिकियो तन निरभय करै॥
अरु दीजे तूं रसरी तान। तबहौं खैंच लेहुंगो जान॥६३७॥

१ कहा। २ रस।

पाछैं फेरि फांसिहौं डोरि। तापर तूं बैठियो बहोरि॥
तब हम तोकौं लेहैं काढ़ि। चारुदत्त बोल्यो मनबाढ़ि॥६३८॥
जोतुम कही बात बलबीर। सो सब करिहौं साहस धीर॥
यह मनमैं भोरो अधिकाय। जानैं नहीं दुष्टको भाय॥६३९॥
तब दंडी ततखिन तिहँबार। फांसदियो तिन लगी न बार॥
चारुदत्त तब भीतर कूप। पहुँच्यो ततखिन जाय अनूप॥६४०॥
देखी तहां एक पटकुई। बैठो जाय तहां तट सुई॥
चारुदत्त लेतूंबी करन। लाग्यो सोइ तबै रसभरन॥६४१॥
तहां एक नर राजै और। डारयो बहुतदिनको तिस ठौर॥
बोलि उठ्यो सोई तिहँबार। चारुदत्तकौं तबै निहार॥६४२॥

सोरठा।

हे परदेशी मित्र, सुनो बचन मेरे सरब।
कहौं बात धरि चित्त, हे सुजान गुन आगरे॥६४३॥
यह मैं जानतु बीर, विष्णुदत्त तोकौं मिल्यो।
तिहँ डारयो इस तीर, निहचैं करि जानी सही॥६४४॥

दोहा।

चारुदत्त तिस बचन सुनि, पूंछत भयो सुजान।
अहो भ्रात तुम कौन हो, कहां तुम्हारो थान॥६४५॥
तुम आये इहठौर किम, कहो मोहि परकासि।
किम जानो दंडी मिल्यो, हमैं महा गुनरासि॥६४६॥

चौपाई।

तब मानुष तस बचन सुनाय। कहत भयो तासों समुझाय॥
मेरे बचन सुनो दे कान। नीके करि हौं करों बखान॥६४७॥
नगर उजैनी अदभुत बसै। शोभा इंदपुरी सम लसै॥

१ भोला। २ भाव-परणाम। ३ सुधी = ज्ञानी।

तहां हमारो बास सुजान। बनिकपुत्र निहचै करिजान॥६४८॥
सो हम अशुभ करमके जोग। निरधन रहैं सदा करि सोग[1]॥
तहां दुष्ट वह तपसी जाय। मिलत भयो मोकों पुर भाय॥६४९॥
मधुरवचन तिन मोहिसुनाय। अरु मोकों बहुलोभ दिखाय॥
तबमैं लोभ धर्‍यो मनमाहिं। दुष्टभाव तसु जाने नाहिं॥६५०॥
मोहि संगले आयो सोइ। महाउजार संग नहिं कोय॥
तव आए इस विलकी पार। मोसौं सरब कह्यो ब्योहार॥६५१॥
तव दीनी तूंबी मो पान[2]। बेगि फांसि दीनो इह थान॥
तब तूंबीमैं रसभरि सोय। दई गहाय तासुकों जोय॥६५२॥
पाछैं फिर तिन फांसी डोरि। तापरि मैं बैठियो बहोरि॥
आधी दूर खैंचि मो जवहि। रसरी काटि दई तिन तवहि॥६५३॥
गिर्‍यो तहांतैं तबमैं भ्रात। चोटलगी मेरे बहु गात॥
यह तापसी महा निरदई। दया नहीं ताकैं कछु रही॥६५४॥
तिनि मोकों रसकी बलि दयो। आपन दुष्ट ईखं[3] लेगयो॥
सो अबमैं या रसकरि भ्रात[4]। अर्द्धदग्ध मेरो भयो गात॥६५५॥
अबमो प्रान कंठगत जान। रहे होहि निहचै तुम जान॥
चारुदत्त सुनिकैं यह बैन। बोलत फेरि भयो सुखदैन॥६५६॥
मेरे बचन सुनो हो भायैं। अब हम कैसो करैं उपाय॥
सो हमसौं कहिहो बलबीर। तव वह नर बोल्यो धरि धीर॥६५७॥

अडिल।

सुनो बात तुम नाथ कहौं परकास मैं।
तूंबी रसभरि लेहु देहु धरि पास मैं॥
पाछैं अपनी ठौर जु पाथर डारियो।
रहियो बगल जु तिष्टि[5] मतो यह धारियो॥६५८॥

१ शोक। २ हाथमैं। ३ रस। ४ भाई। ५ मनसूबा।

चौपाई।

तब तुम प्रान बचैंगे वीर। निहचै करि जानौं यह धीर ॥
चारुदत्त सुनिकरि यह बात। हरख्यो चित्त सु विगस्यो गात ॥
तूंबी तब रससौं भरलई। चौकी माहिं तबहि धरदई ॥
अरु तिन दीनी रसरी तानि। तपसी खैंचलई तब जानि॥६६०॥
तूंबी ले निज हाथ मझार। फांसी डोरि दूसरी बार ॥
चारुदत्त तब अपनी ठौर। धरदीनो इक पाथर और ॥६६१॥
रसरी तानदई तिन[1] जबै। आपुन बगल रह्यो टिक तबै[2] ॥
रसरी खैंची तपसी तामें। अधबिच कूप आइयो जामें ॥६६२॥
तब तिन दुष्ट छुरी ले पान। दईकाटि रसरी अज्ञान ॥
चौकी जाय कूपमैं परी। आपन तूंबी ले तिन धरी ॥६६३॥
गयो तहांतैं दुष्ट गमार। आगैं अवर सुनो विस्तार ॥
चारुदत्त तब भीतर कूप। जपै जिनेश्वरनाम अनूप ॥६६४॥
कायर नेक न होइ शरीर। मनमैं हरख धरे बलबीर ॥
कहै बली सबतैं विधि[3]कार। करता पास न कहूं उबार॥६६५॥
जैसो उदय करम है आय। सोई सहै जीव अधिकाय ॥
ताको कहा सोच कीजियै। जैसो उदय तैसो लीजियै॥६६६॥

सोरठा।

चारुदत्त तिहँ थान, वा नरसौं बोलत भये।
सुनियो मित्र सुजान, मोहि बचन तुम कान दे ॥६६७॥

दोहा।

ऐसी कठिन जु ठौर तैं, कोई बनै उपाव।
मोहि निकसिबेको सही, कहो तुरत सो दाव ॥६६८॥

---

१ तिस समय। २ जिस समय। ३ कर्म।

चौपाई।

तब सुनि बचन सु बोलतु भयो। चारुदत्तसों तिन इम चयो॥
हे परदेसी मित्र सुभाइ। एक गोहै[1] आवै इह ठांइ॥६६९॥
कूपमाहिं रस पीवन पान। आवतु निहचै बेर मध्यान॥
ताकी पूंछ पकरि नीकरो। अवर उपाय नहीं दूसरो॥६७०॥
चारुदत्त तब बोलत भयो। सुनियो मित्र बचन मो कह्यो॥
निकसनकी विधि कहीप्रकासि। तुम क्योंनहिं निकसेगुनरासि॥
सुनि परदेसी मेरी बात। मेरे चोट लगी बहु गात॥
तातैं पीर बहुत है सही। शक्ति नहिं निकसनकी रही॥६७२॥
यहसुनि चारुदत्त गुनमाल। मनमैं बहुत जु भयो खुशाल॥
फिर बान्यों[2] बोल्यो तिहँ बार। हे परदेसी सुनिहो यार॥६७३॥
छिनमैं कढ़त हमारे प्रान। यह मनमैं निहचै तुम जान॥
तबसो चारुदत्त तिहँबार। दीनो ताहि पंचनवकार॥६७४॥
पद हैं पांच बरन पैंतीस। ताहि सुनाये मनबचईस॥
सोहू मनमैं बहु हरषाय। जपियो मंत्र महा सुखदाय॥६७५॥
चारप्रकार लियो सन्यास। जातैं लहिये पद अविनास॥
हिरदेमाहिं पंचनवकार। विसरयो नाहिं सोय तिहँबार ६७६॥
तब तिन उपसम करि परिनाम। प्रान तजे मानुष तिहँठाम॥
मंत्रप्रभाव तुरतही सोइ। पहिले सुरगदेव भयो जोय॥६७७॥
मंत्रप्रभाव कहा नहिं होय। पापपंककों डालै धोय॥
तातैं भविजन जपिये मंत्र। त्रिभुवनमैं जो सार महंत॥६७८॥
मंत्रप्रभाव लहै सबसिद्धि। मंत्रप्रभाव होय बहुऋद्धि॥
महामंत्रफल सुरसेवंत। महामंत्रफल भवदुख हंत॥६७९॥

---

१ चंदनगोह अथवा पाटड़ा गोह ऐसी बलवान होती है कि वह एक आदमीका बोझ उठाकर दीवार पर चढ़ सकती है। २ बनियां।

तातैं जपिये मंत्र गँभीर। शुभगतिकर नाशन भवपीर॥
जगमैं महामंत्र सिरदार। तातैं जपिये मंत्र जु सार॥६८०॥
आगैं कथा सुनो अब और। चारुदत्त राजै तिहँ ठौर॥
ताही समय जु आई गोह। देखी चारुदत्तने सोह॥६८१॥
बैठि कुईतट तिन रस पियो। बहुरि चलनको उद्यम कियो॥
चारुदत्त तसु पकरीपुच्छ। चलत भयो तासँग गुणगुच्छ६८२॥
ज्यों ज्यों गोहचलै ऊपरै। त्यों त्यों चारुदत्त नीकरै॥
चलत चलत सो पहुंच्यो तहां। रही कछूमनि ऊपरजहां६८३॥
हाथ एक ऊपर रहिपार। जहां बिराजे एक कुंलारि॥
तामैं गोह गई धसि जबै। चारुदत्तभी पहुंच्यो तबै॥६८४॥
तहां एक छिद्र भूपरै। तामैं गोह चली ऊपरै॥
हाथप्रमान तहां है राह। मानुषपै निकस्यो नहिंजाह॥६८५॥
तब तिन पूंछ गोहकी छांड़। रह्यो तिष्ठ जिननामहिंमांड़॥
द्वादश अनुप्रेक्षा जो सार। तिन चितवन कीनो तिहँबार६८६॥
जपै मंत्र बैठो तिहँ ठौर। आगैं कथा सुनो अब और॥
ताहीबार अजागन तहां। चरन जात सो तिसबन महा६८७॥
कूपपारि सब निकसी आइ। तहां एक छेरीको पाइ॥
वाही छिद्रमाहिं गिर पर्‌यो। चारुदत्त ततछिन पाकर्‌यो६८८॥

अडिल्ल।

राख्यो भीतर पकरि छागको पांवजू।
तब अजिया इकबार मिमानी सावजू॥
सुनकर ताकी टेर ग्वाल आयो तहीं।
देखि छिद्र तसुपांव लग्यो खोदन मही॥६८९॥

१ बिल—मट्टा। २ बकरियों—समूह।

चारुदत्त तिसबार बचन बोलत भये।
होले होलै खोदि वीर सुनि गुनमये॥
तब सुनिं बचन रसाल ग्वाल निज कानजू।
बहुत भयो तिहँकाल सु अचरजवानजू॥६९०॥

चौपाई।

पूंछत भयो जु तबइ अहीर। बोलत कौन भूमितें वीर॥
कोहै निहचै कह निजबात। चारुदत्त तब ब्रचन कहात६९१॥
हमहैं निहचै मानुष भाय। हमे बेगि काढो गुनराय॥
तबही ग्वाल सुने तस बैन। हिरदै बहुत लियो तिहँचैन६९२॥
ताही समय खोदियो थान। चारुदत्त काढ्यो गुनखान॥
तब सो सेठ नंद नीकल्यो। फेरि तबै आगेकों चल्यो॥६९३॥
महासघन काननके माहिं। इकलो वीर चल्यो तिहँ जाय॥
बनमें भीत अधिक असुरारि। फिरें सुअर तहँ रोझ सियार ६९४
चीता सिंह डकारें घना। बांदर[1] रीछ महिष माकैना॥
गजमदमत्त फिरइ असराल। सारदूल सिंहनके लाल॥६९५॥
हिरना अजगर अहि संचरें। चारुदत्त तिहँ बनमें फिरें॥
इहबिध कुमर चल्यो तहँजाहि। आरणमहिष मिल्यो इक ताहि॥
महाभयानक बलकरि मंत। मारन ताहि दौरियो तंत॥
चारुदत्त समुहानो[2] देख। भयो बहुत भयभीत विशेष॥६९७॥
भजतुभयो आगेकों सोय। भैंसा पर्‍यो पिछारी जोय॥
भजत भजत सो पहुँच्यो तहां। गुफाएक परवतकी जहां ६९८॥
देखगुफा चाल्यो समुहाय[3]। तहां एक अजगर दिखराय॥
गुफाद्वार सोवै जु निशंक। मानो कालगेह बहुबंक॥६९९॥

१ लंगूर। २-३ सामने।

भ्यानक सोय महाविकराल। सोवै सोय गुफा दरवार ॥
चारु जु दत्त चरित यह देखि। पाछे भैंसा क्रोध विशेष॥७००॥
तब तिहिं कछुनहीं कियो विचार।ततखिन चल्यो गुफाके द्वार॥
तब निजपग धर अहिके भाल। जायपर्‌यो सु गुफा दरहाल॥
कुमर कंदरा भीतर गयो। अजगर तबही जागतु भयो॥
क्रोधवंत है इसपर जर्‌यो। मानो तेल हुतासन पर्‌यो ॥७०२॥
समुहें आरणमहिष जु देखि। अजगर जानी चित्त विशेष ॥
जाही मोशिर धार्‌यो पांउं। अवर न कोऊ है इस ठाउं ॥७०३॥
तब अहि ततखिन उठ्यो रिसाइ। कोपारूढ़ चल्यो समुहाय॥
भैंसा सहित लग्यो जुधकरन।आगे कथा सुनो दुख हरन७०४॥

दोहा।

गुहावीचतैं चारुदत, देखत भयो निहारि ।
अजगर महिषा जुद्ध बहु, करैं पुकारि पुकारि ॥७०५॥
बलकरि दोनों जुक्तवर, करहिं अखारो गाजि ।
हारजीत नहिं को लहैं, भिरैं पराक्रम साजि ॥७०६॥
भ्यानक महा डरावने, जुद्ध करैं विकराल ॥
चारुदत्त जुध देखिकरि, निकस भज्यो ततकाल ॥७०७॥

सोरठा।

चल्यो अगारूं वीर, कानन महा उजारमैं ।
जपत मंत्र गंभीर, मनतैं नेक न विसरतो ॥७०८॥
आगे महिषा दोय, और ताहि सनमुख मिले ।
मारन दौरे सोय, चारुदत्त तब भाजियो ॥ ७०९ ॥

चौपाई।

अरणा जाके पीछैं परे। क्रोध अधिक करि तनमन भरे ॥
सेठनंद तिनको भयमान। आगे भाजतु भयो सुजान ७१०॥

बिरख एक देख्यो तिहिबार। महासघन ऊंचो असरार ॥
तापर गयो तबहिं चढ़ि सोय। आये महिषा तरें बहोय ॥७११॥
झींकझांक जात सब रहे। चारुदत्त मन थिरता लहे ॥
तरुशाखातैं उतर्‌यो सोय। चल्यो फेरि आगेकों जोय ॥७१२॥
चलत चलत सो पहुँच्यो तहां। सरिता एक बहे शुभ जहां ॥
ताकेतट लीनो विसराम। आगे कथा सुनो अभिराम ॥७१३॥
रुद्रदत्त, पांचों नृपनंद। हरिसिखे, गोमुख, सुखके कंद ॥
बाराहक परतेप मरुभूत। चारुदतके मित्र सँजूत ॥७१४॥
तेसब याको ढूंढत फिरैं। पावैं नहीं न थिरता धरैं ॥
चलत चलत सब आये तहां। चारुदत्त सरितातट जहां ७१५॥
देखि कुमरकों हरषित भये। मिले नेहकरि मस्तक नये ॥
पूंछी सबनि छेम कुशलात। चारुदत्त तुम नीके गात ॥७१६॥
चारुदत्त तब निज विरतंत। भाख्यो सकल आदि लौं अंत ॥
सातोवीर फेरि तिसथान। नदीमाहिं कीनो असनान ॥७१७॥
तिष्टि सबनि तहँ भोजनकियो। छान जु नीर आचमन लियो॥
पाछैं सातौ बीर अभंग। चले तहांतैं करि इकसंग ॥७१८॥
एक नगर देख्यो शुभ सार। शोभा कहत न आवे पार ॥
श्रीपुर ताहि नगरको नाम।गढ़ मठ तहां बने अभिराम ७१९॥
तापुरमें कीनो परवेश। देखी शोभा नगर असेश ॥
ताही नगर बानिक इकबसे। धनकन करि सो पूरनलसे ७२०॥
नाम प्रियादत तिहँ गुणवान। भानुदत्तको मित्र सुजान ॥
ताकेगेह गये सबबीर। चारुदत्त आदिक तब धीर ॥७२१॥
निज बिरतंत तासुप्रति चयो। तिन सुनकर मनमैं सुखलयो॥
अरु सबको कीनों सनमान। लेयगयो तब अपनेथान ॥७२२॥

पंचामृत दीनी ज्योंनार। विनय भक्ति तिन करी अपार॥
बनिजजोग तिन खरचीदई। होतभये तबही सुखमई ७२३॥

अडिल्ल।

तब विचार करि सरब आपने मनमहीं।
वहै लेय सो द्रव्य गये हाटन सही॥
चुरियां करीं खरीद काचकी एव हैं।
बांधि गांठ शिर धरी सबनि स्वयमेव हैं॥७२४॥
चले तहांतैं सोय बनिज के कारने।
गये देश गंधारमाहिं सब यारने॥
चुड़ियां बेची जहां सबनि मनभावसों।
लियो तहां विसराम आपने चावसों॥७२५॥

चौपाई।

मिल्यो एक नर कोई और। रुद्रदत्तकों सो तिसठौर॥
देखि रुद्रकों बोल्यो बात। कोहे बीर कहांतैं आत॥७२६॥
काहें हीन बानिज तुम करो। छाजतु नाहिं तुम्हे चितधरो॥
तुम अतिरूपवंत गुनधाम। अरु तुमरो शुभ उत्तमनाम७२७॥
अरु तुम दीखत साहसधीर। उत्तमकुल अरु गुनगंभीर॥
काहें भूमिविषें तुमफिरो। गुनकरि लीन बहुतदुख करौ७२८॥
सो मोसों कहिये परकास। कहा फिरो तुम चित्त उदास॥
रुद्रदत्त सुन ताके बैन। पायो मनमाहीं बहु चैन॥७२९॥
तब निजमुखतैं लाग्यो कहन। दुखसुख बात सबै विधतहन॥
आदिअंतलौं जो जो भयो। सो सब ताहिपुरुषसों चयो७३०॥
जाकारन फिरते भूमाहिं। सो सब भाख्यो ततखिन ताहिं॥
तबतिन सुनी हृदयकी बात। बोलतु भयो फेरि अवदात७३१॥

सुनियो मित्र मोरवच कान। नीके करिहौं करौं बखान॥
इसजागातैं आगें बीर। परबत एक महा गंभीर॥७३२॥
राजतुहै सो महा उतंग। मारग तासु बहुत है तंग॥
बकराही को गैलो जहां। और न विध जानेकी तहां॥७३३॥
बकरा पीठि होय असवार। क्रमक्रम करि चढ़िजाय पहार॥
तब तहँ छाग मारिकर बीर। मसक बनावो ताकी धीर७३४॥
तामैं बैठरहै मनलाय। मुहरी सीमदेय तस भाय॥
थिरकर तिष्टिरहा सो तहां। भेरँडपक्षी आवतजहां॥७३५॥
मांसपिंड बे पक्षी जान। लेत उठाय चोंचकरि आन॥
तहँतें उढ़कर पक्षीभ्रात। रतनदीप माहीं लेजात॥७३६॥
जब बे मसक भूमिपर धरैँ। भखिबेको उद्यम तब करैँ॥
तबसो छुरी लेय करमाहिं।ततखिन मसक बिदारे ताहि७३७॥
आवै निकरि तासुतैं तबै। पक्षी मानुष देखैं जबै॥
है भयभीत सोय उढ़िजाय। निहचै करि जानो मोबाय७३८॥
तब सो रतनदीपतैं बीर। चाहो सो नग ल्यावो धीर॥
यहसुनि नरमुखतैं विरतंत। रुद्रदत्त मनअति हरषंत॥७३९॥
फिर तब रुद्र विचार कराइ। चारुदत्तसों कहिये जाय॥
चढ़िपहार मारैंगे छेल। रतनदीप तब पहुंचें गैल॥७४०॥
जो चालैगो नाहिं कुमार। याके मनमैं दया अपार॥
अरु जामनमैं जिनवरसेव। पाले करुणा सामिकित एव७४१॥
तातैं कहिये एबच ताम। इस पहारपै जिनके धाम॥
तिनको बंदन चालिये वीर। तबसो चलिहै निहचैधीर॥७४२॥
आयो रुद्र तुरतही जहां। चारुदत्त शुभ तिष्टै तहां॥
तासों लाग्यो कहन जुबात। चारुदत्त बचसुनि मो भ्रात ७४३॥

१ रस्ता। २ भातड़ी। ३ बचन।

इस परबतके ऊपर अंगे। बने जिनेश्वरभवन उतंग॥
तहां जातरा अदभुत वीर। बंदन तिनहिं चलो गुणधीर७४४॥
चारुदत्त कछु जानै नाहिं। यानै कहा रच्यो मनमाहिं॥
कुमर रुद्रके सुनि ये बैन। तब मनमैं पायो अतिचैन॥७४५॥
कहत भयो अबही चल बीर। करैं वंदना जिनकी धीर॥
रुद्रदत्त सुनि तसु बच तबै। बकरा सात ल्याइयो जबै॥७४६॥

सोरठा।

चढ़ि छैला सब बीर, कढ़त भये तिहँ नगर तैं।
एक मतो धर धीर, चलत चलत पहुंचे जहां॥७४७॥
परबतके मगपास, खड़े भये सातों पुरुष।
देखि राहको फांस, चँउरी अंगुर चारकी॥७४८॥

दोहा।

दोनों तरफ पताल सम, नीची अंत न ताहि।
अवर सहारो तहँ नहीं, टिकि रहने को आहि॥७४९॥
महातंग मारग निरखि, बोल्यो सेठिकुमार।
सुनहु वीर मेरे बचन, अपने चित्त विचार॥७५०॥
खड़े रहो इसठौर तुम, छहों वीर हरषाइ।
आगें सकरी गैल यह, देख आउं अब जाय॥७५१॥
यह मारग कहलौं गयो, सकरो बहु भयभीत।
मैं आऊं तिहि देखकरि, तबलग तिष्ठौ मीत॥७५२॥

पद्धड़ी छंद।

तब सब नर बोले एमवात। हमहूं देखैंगे गैल भ्रात॥
तुमही तिष्ठो अव थानएह। यहतौ कारज सबको गिनेह७५३॥

१ हे अंग, हे तात ये छोटे भ्राता के लिये भी संबोधन है।

अरु हम गिरहैं तौ कहा वीर। तुमजीवो जगमैं गुनगहीर॥
तुमतैं सबको सम्हरै जुकाज।तुमपुण्यवंत करता समाज ७५४॥
तिनके सुनि बचन जु सेठिनंद। बोलत फिर सबसों बचनमंद॥
यहबात कहातुम कहोसंत। तुम साहिबहो हम सेववंत ७५५॥
मैं एक मुयो तौकहा भाय। तुम षट जीवो तौ भलीआय॥
अब औरबात मतकहो भ्रात।मैं गैलदेख अबही अवात ७५६॥

चौपाई।

यहकहि चारुदत्त चढ़ि छैल। चलत भयो सो सकरी गैल॥
अंगुलचार गैलहै जहां। औरसहारो कोउ न तहां॥७५७॥
दोनों तरफ पताल समान। नीची जागहै बहुत भयान॥
चढतो जाय तहां सो बीर। नेक न शंक धरै मन धीर॥७५८॥
चल्यो जाय जपतो जिन नाम। और न कोइ सहाई ताम॥
क्रमक्रम करि चढ़ि ऊपर गयो। आछो थल जहँ देखत भयो॥
तब मनमाहिं बिचार कराय। अब सबकौं लीजे बुलवाय॥
तब बकरा चढ़ि फेरि सुजान। अरु नीचैंको कियो पयान७६०॥
वह उतरत आवै मन रली। आगें कथा सुनौ जो चली॥
रुद्रदत्त आदिक सब बीर। नीचैं तिष्ठत साहस धीर॥७६१॥
ते सब लागे करन बिचार। चारुदत्त आयो नहिं यार॥
बड़ी बार लागी पुनि ताहि। कारण कहा मित्र नहिं आहि॥
उपजत है यह मनमैं बीर। कछू ताहि तन व्यापी पीर॥
तातैं चलिये अबही भाइ। निज लोचन दखैं तसु जाय॥७६३॥
तब वे करि मन छहों बिचार। छेलनि चढ़ि चाले तिहँबार॥
अधबिच राह पहूँचे जबै। चारुदत्त तहँ मिलियो तबै॥७६४॥
देखि सेठिसुत सबको तहां। हाहाकार कियो तिनि जहाँ॥
और कही तिनसौं यह बात। अरे अयाने मूरख गात॥७६५॥

काहें नहिं तिष्टे उस थान। मैं जबलौं आवतहौं जान॥
तुमने बुरी करी बहु भाइ। सरब फसे इस थानक आइ॥७६६॥
गैलो बहुत तंग इस ठाँय। फिरवेको नहिं कछू उपाय॥
हम बहुरैं तो नास हमार। तुम जो फिरो तौ मरन तुमार॥
अब इस ठौर कीजिये कहा। तब वे छहौं मित्र बोलहा॥
कहा करैं हम सुनिये वीर। तुमको देर लगी बहुधीर॥७६८॥
तब हमको दुख भयो अत्यंत। तुम बिन सब मित्रन को संत॥
सोई दुख सुनिये गुणरेह। आन भयो दुख प्रापति एह॥७६९॥
अब तौ हम आये गुणवंत। अब इक बचन सुनो हम संत॥
हीनपुण्य हम हैं सब वीर। मरिहैं तौं कहा होसी धीर॥७७०॥
चिरंजीव तुम होहु सुखार। हम ही फिरहैं गे इसबार॥
चारुदत्त सुनि सबके वाय[1]। बोलत भयो तबहि हरषाय॥७७१॥

अडिल्ल।

यहै फेरि मति कहो मित्रजी बात हो।
एक मरै तौ कहा सुनीजे भ्रात हो॥
सबरे ही कहा मरै एकके कारने।
चिरंजीव तुम होहु जीव सब यारने॥ ७७२॥
मित्र कहा तुम करो हती जहँ इसतरैं।
जैसी जहँ लहनाति होय सो तिस तरैं॥
होनहार जो होय बसइ जिय आन है।
अवर बिसरि सब जाइ चित्ततैं बान है॥७७३॥

चौपाई।

शुभ अरु अशुभ उपायो होय। ताको फल नर भुंजे सोय॥
करम बिना नहिं कोऊ दातार। करम बिना नाहिं लहै लगार॥

1 वचन।

जैसो करम उदय है आइ। तैसो ही तहँ जीव सहाइ॥
सुख दुख दाता को नहिं जान। दीखै विधिकौ सरब बिनान॥
चहुँगति मध्य जीव संचरै। पाप पुण्य ता साथहि फिरै॥
भावी होनहार जो होइ। ताकौं मेट सकै नहिं कोय॥७७६॥
जो कछू जीव उदय हो आइ। तैसौ सहिये मन बचकाय॥
जे कहि वचन तबइ बलबीर। जपियो चित्त मंत्र धरि धीर॥

दोहा।

अपने पगकी आँगुरी, मारग माहिं टिकाइ।
साधि देह निज शक्ति करि, फेर्यो व्योर्क तहाँइ॥७७८॥
सातौ मित्र पहार पैं, गये तुरित चढ़ि तब्ब।
बहु आनँद मनमैं लह्यो, टिके एक थल सब्ब॥७७९॥

सोरठा।

चारुदत्त तिहँ ठाम, रुद्रदत्तसौं इम चयो।
कहां जिनेसुर धाम, चलौ तिनहिं बंदन करैं॥७८०॥
रुद्रदत्त मनमाहिं, इम बिचारि तब ही करैं।
जो हम इन्है कहाहिं, ए बकरे सब मारि हैं॥७८१॥

छन्द चाल।

तौ यह मनमैं दुख लेसी। बकरा नहिं मारन देसी॥
याके मन दया समाज। यह करन न देसी काज॥७८२॥
तातैं कछू करि हैं उपाई। बकरा मारैं इस ठाँई॥
बोल्यो सो तब तिहँबार। सुनिये मो बैन कुमार॥७८३॥
इस थानकतैं कछु अन्त। सोहैं जिनमन्दिर संत॥
सकरे मग चलतैं भ्रात। कछु सिथल भयो हम गात॥७८४॥
तातैं इक छिनभर बीर। रहिहौं निद्रा करि धीर॥

१ बकरा।

पाछैं चलिहैं उसठाम। वंदन जिनवरको धाम ॥७८५॥
तब चारुदत्त सुनिबात। मनमैं लीनो शुभ सात॥
द्रुमतलैं देख इक थान। तिष्ठे तहँ सबहि जवान ॥७८६॥

दोहा।

सोवत भयो कुमार तब, मनमैं हरष उपाय।
अवर कथा आगें सुनो, भई जु सो तिहठांय ॥७८७॥
रुद्र आदि जे षट पुरुष, महा अधर्मी सब्ब।
अपने अपने बोक तिन, मार डारिये तब्ब ॥७८८॥
जीवघात तिनने क्रियो, खालवासतैं वीर।
कछु न दया उपजी तिनै, मोहत भयो शरीर ॥७८९॥

चौपाई।

लोभअंध जो मानुष होय। पापपुण्य नहीं देखे सोय॥
लोभअंधके दया न चित्त। लोभअंधके कुकरमहित्त॥७९०॥
लोभअंधके क्रिया न कर्म। लोभअंधके बुद्धि न मर्म॥
लोभअंधके धर्म न ध्यान। लोभअंधके सत्य न ज्ञान॥७९१॥
लोभअंध जीवनको हनै। लोभअंध नहिं सुखदुख गिनै॥
तैसै लोभ रुद्रमन धर्‍यो। मारतजीव न शंका कर्‍यो॥७९२॥
छह छेलाको कीनो घात। चारुदत्तको बोक रहात॥
ताकों लेइ रुद्र निजपान। धरी छुरी ताके गलवान ॥७९३॥
आधो गलो ताहि कटिगयो। तब बकरो मिमियातो भयो॥
तब निजबकराकी सुनिटेर। चारुदत्त जाग्यो तिहिंबेर ७९४॥
देख सु बकराको यहहाल। निंदा बहुत करी तिहँकाल॥
और तबै निजबकरा देख। रहे कंठगत प्रान विशेष॥७९५॥

१ अंत.करन।

चारुदत्तने तब तिहँवार। बकराकों दीनो नवकार॥
महामंत्रके सो परभाव। ततखिन लीनो उत्तमठांव॥७९६॥
पहिले सुरगदेवता ठयो। बहुत ऋद्धिधारी सो भयो॥
मंत्रमहा जगमैं सिरदार। मंत्रप्रभाव होइ भवपार॥७९७॥

अड़िल्ल।

महामंत्र नवकार जपत बहु दुख टरै।
महामंत्र नवकार जपत बहु सुख करै॥
महामंत्र नवकार जपत जग जस लहै।
महामंत्र नवकार जपत पातक दहै॥७९८॥
महामंत्र नवकार पार नहिं जासको।
आदि अंत नहिं करता कोउ न तासको॥
भौजल प्रोहन तरन महा शुभ जानियो।
कर्म काठ गन दहन अगनिसम मानियो॥७९९॥

चौपाई।

तातैं जपिये श्रीजिनमंत्र। जासम अवर न दूजो तंत्र॥
सुरग मुकति को दाता जान। चौदह पूरब माहिं महान॥८००॥
श्रीअरहंत सिद्ध परमेस। आचारज उवझाय जिनेस॥
साधु सुगुरु हैं शिव सुखदान। जेई पूज्य महा परधान॥८०१॥
कीजे इनको सुमरन हिये। तातैं भव भव सुख हूजिये॥
यातैं जपिबो जोग्य जु सार। भव्यजीव सुमिरो चितधार॥८०२॥
चारुदत्त परबतके थान। निंदा करत भयो नरवान॥
रुद्रदत्त तब बोलत भयो। वा नर बचन तेजसों चयो॥८०३॥
तब ये सगरे नर तिसठाम। लीनो ततछिन छेलनिचाम॥
ता चमड़ाकी मसक बनाय। उलटी करी सबन तिहँठांय॥८०४॥

सोरठा।

भीतर रोंमा कीय, ऊपर रक्त समान है।
तिनमैं तब बैठीय, चारुदत्त आदिक सरब ॥८०५॥

दोहा।

मसकनि मुहरी मूंदकरि, तिष्टे सब तिहँ थान।
तबलग ताहि पहारपैं, ताही समय सुजान ॥८०६॥
भेरँडपक्षी गमनकरि, आये सात पहार।
तिनमैं कानों एक है, षट जुगनैन निहार ॥८०७॥
तिनने देखी भातड़ी, पड़ी सैलपर खास।
तब तिन मनमैं जानियो, निहचै पिंडामास ॥८०८॥
एक एक निजचोंचसौं, छह लीने सु उठाय।
पाछे पंछी कानियो, चारुदत्त ढिगजाय ॥८०९॥
सेठनंदकी मसक तिन, ततखिन लई उठाय।
चलेदेश उड़ि आपने, सातों मन हरषाय ॥८१०॥

चौपाई।

तिन अंवरमैं कियो पयान। समुदबीच जब गये सुजान ॥
तहँ इक पंछी भेरँड और। चल्यो जात सो नभमैं ठौर ॥८११॥
देखत भरे सातोंके सोय। खालीमुख नहिं देख्यो कोय ॥
और छुधा उपजी तिहँआय। तातें चल्यो तिनहिं समुहाय ८१२॥
अवर सबै देखे बलवंत। काने पास सु गयो तुरंत ॥
तासों लरतभयो तिहँवार। तबसो कानो भज्यो विचार॥८१३॥
जान्यो पाछैं बहुत दवाव। मसक छोड़दीनी तिहँठांव ॥
सागरमाहिं मसक छिटकाय। लीनी मुखसों फेर उठाय॥८१४॥
पाछें आन पंछी फिर लग्यो। तब सो फिर आगेकों भग्यो॥
ऐसीतरह सोइ त्रयबार। आनलग्यो पंछी तालार ॥८१५॥

तब तिहँ सेठनंदकी मसक। डार डार दीनी दधि तलक॥
चौथीबार सु लेय उठाय। उड़त भयो सुखमैं दे ताय॥८१६॥
चलत चलत सो रतनहि दीप। गयो रत्नपरबतहि समीप॥
गिरिकी शिखरऊपरैं जाय। मसक धरी पक्षी तिहँठाँय॥८१७॥
भखिवेको उद्यम तिहँ थान। करन लग्यो पंछी सो कान॥
तब सो चारुदत्त गुनरास। छुरी लई निज करमैं तास॥८१८॥
मसक फार डारी तिहँबार। ततखिन निकस्यो सेठ कुमार॥
भेरुँड पक्षी ताकौं देख। मनुषरूप भय कियो बिशेख॥८१९॥
भयकर सो ततखिन उढ़िगयो। चारुदत्त तहँ तिष्ठत भयो॥
अब तौ कथा गई यह तहां। छहौं मित्र भेरुँड मुख जहां८२०॥
भेरुँड छहौं मित्रको लेइ। गये जु औरहि थानक लेइ॥
छहौं मसक धारीं तिन जाय। भखिबेकौं मन कियो बनाय८२१॥
तब तिन छुरी लई कर माहिं। मसक बिदार दई तिह ठाँहिं॥
छहौं निकस आये बलबीर। चारुदत्त नहिं देख्यो तीर॥८२२॥
तबतिन दुख कीनों अति घनों। हाहाकार कियो शिर धुनो॥
रुद्रदत्त आदिक सब मित्र। फिरैं पहार दुःख कर चित्त॥८२३॥
इनकी खबर न बाकौं भाय। बाकी खबर न इन्हें सुनाय॥
क्षुधावंत तब बनफल तोरि। करै असन सब मित्र बहोरि ८२४॥
मन मन सोचत छिन न बिहाइ। चारुदत्त को शोग कराइ॥
कबहूं सब लोचन भरि लेइ। कबहूं दोष करमकौं देइ॥८२५॥

दोहा।

या विध दुखकर सब मनुष, राजैं एकहि ठाँइ।
अवर कथा आगें सुनो, चारुदत्त पै जाय॥ ८२६॥
रतन शिखर के शैलतैं, उठ्यो सेठ को नंद।
मंद मंद पग धारतो, चलत भयो सुख कंद॥ ८२७॥

देखि रत्नराशी तहां, बरन बरन तिन जोत ॥
जगमगाट तिनको अधिक, रबि किरनानि सम होत ॥८२८॥

चौपाई ।

इह विध शोभा निरखत वीर । चल्यो जाय आगे कों धीर ॥
तहां एक देख्यो जिनधाम । सुरनर मनमोहन अभिराम ८२९ ॥
कंचन भीत बनी शुभ वास । जड़े रतन मणि करैं प्रकास ॥
पन्ना लाल भले नग लसैं । तिहँ उद्योतकिरन तम नसै ॥८३०॥
मुक्ता फल की बंदनवार । लसैं सोइ नाना परकार ॥
शोभा बहु बरनी नहिं जाय । तुच्छ बुद्धि मोमैं सुनभाय ॥८३१॥

दोहा ।

चारुदत्त दर्शन निमित, मंदिर कियो प्रवेस ।
शोभा भीतर की निरखि, पायो सुक्ख अशेस ॥८३२॥
चारुदत्त अवलोकि जिन, रोम रोम हरषंत ।
जैसे सूरजके उदय, कमल जूथ बिकसंत ॥८३३॥
अति मनोज्ञ प्रतिमा निरखि, मनमैं बहु सुख पाय ।
शीश नम्यो कर जोरि कैं, जय जय शब्द कहांय ॥८३४॥

सोरठा ।

दई प्रदक्षण तीन, जनम सफल कर मानियो ।
बहु आनँद मैं भीन, तब थुति करनेको लग्यो ॥८३५॥

पद्धड़ि ।

जय जय परमेश्वर परमदेव । मनबचतन करि नित करौं सेव ॥
कीनो छिनमें अघकरम नाशि । जीते अष्टादश दोषराशि ८३६
शुभ समवशरन शोभा अपार । जिन इन्द्रनमतकर सीसधार ॥
देवाधिदेव अरहंत देव । बंदौं मनबच तन करौं सेव ॥८३७॥

जय जय मिथ्यातम हरन सूर। जयजय शिव तरुवरके अँकूर
जय काम विनाशनहार देव। जय मोहमल्ल मलदलन देव८३८॥
तुम दर्शनतैं सुख है अनंत। तातैं बंदौ शिवरमनि कंत॥
जयसुरगमुकतिदाताजिनेश। जयकुगतिहरनभवभवकलेश॥
जयजय कंचनसम तनदिपंत। जयकोट दिवाकर मलिनकांत॥
ऐसे श्रीजिनके दरश पाय। अघवृंद दूर छिनमैं पलाय॥८४०॥
ऐसे श्रीजिनको वदन देख। मो गयो आज पातक विशेख॥
तुम धन्य जिनेश्वर देव आय। तिनके सुरनर खग परत पाय॥
धन आज मोहि लोचन विचार। तुम मूरत देखी हम निहार॥
धन मस्तक आज पवित्र मोहि। नमियों पदकमलनि देव तोहि
धनि धन्य आज मेरे जु पाँय। तुमलौं प्रभु पहुंच्यो आजु आय॥
धन मेरे आज पवित्र हाथ। तुम परसे त्रिभुवन के सुनाथ८४३
धन आनन मोहि पवित्र आज। रसनाकर गुन गाये समाज॥
प्रभु आजहि गयो कलंक मोय। देखी मूरत सुखकार तोय॥
अतिमुदित भयोसुझाहियोसंत। बहुविधअस्तुतिजिनकीकरंत॥
अस्तुति करतैं नहिं उर अघाय। करजोरि भाल निज नाय नाय

दोहा।

जिन पूजा बहुविध करी, मनमैं हर्ष उपाय।
कछू काल तहँ तिष्टिकरि, उठियो फेरि सुभाय॥८४६॥
जिनमंदिरतैं निकसि करि, चल्यो अगारूं वीर।
और न कोई पुरुष तहँ, परै दिखाई तीर॥८४७॥

अडिल्ल।

जपत मंत्र जिननाम चल्यो आगैं जहाँ।
देखी गुफा पहार जती तिष्टै तहाँ॥

देखि मुनीश्वर दरश कुमर हरषित भयो।
मंद मंद पग धरत गुफा भीतर गयो ॥८४८॥

छंदचाल।

कर जोरि नमौं मुनि पाईं। लाग्यो अस्तुति करनाईं॥
जय जय गुरु भव अघहरना। जय जय सुख संपति करना
जय जय कंदर्प जु दलना। जय मोह महामद मलना॥
जय जय इंद्री दे दंड। जय पंच महाव्रत मंड ॥८५०॥
जय परिग्रहतैं सु उदासी। जय सप्त तत्वारथ भासी॥
जय समता राखन चित्त। देखत इकसे अरि मित्त॥८५१॥
अठ बीस मूलगुण धारी। पुनि सहन परीषह भारी।
जिनके बच हैं सुखखानी। जिनसंग कुगतिकी हानी॥८५२॥
तजिकुमति सुमति चित गहिये। तुम संगति शिवसुख लहिये॥
गुरु बिन नहिं और सहाई। तुमहीं परमारथ भाई॥८५३॥

जय जय जन आनँदकारी। जयजय करुनानिधि धारी ८५४॥

सोरठा।

इत्यादिक थुति गाय, रोम रोम आनँद भयो।
तब ही श्रीमुनिराय, धर्मबृद्धि दीनी तिसै॥ ८५५॥

चौपाई।

अरु मुनिवर बोले इम बात। चारुदत्त तूं है कुशलात॥
अरु तो आमन कैसे भयो। काहें काज गमन इहँ ठयो८५६॥
चारुदत्त सुनि मुनिके बाय। अचिरजवान भयो अधिकाय॥
तब फिर बोल्यो सेठ कुमार। हे मुनिनाथ जगत आधार८५७॥
हे प्रभु मुझकों आगें कहां। देख्यो है मुनिवर किस ठहां॥
सो मोसौं कहिये मुनिराय। मेरे जियको संशय जाय॥८५८॥

तब मुनिवर बोले गुणखान। चारुदत्त तूं सुनि दै कान॥
मैं हों वह विद्याधर वीर। मेरो नाम अमित गति धीर॥८५९॥
चंपापुर के बागमझार। मैं कील्यो थो तरुकी डार॥
तब तुम छोड़ि दियो तोआय। दूर करी मोबाधा धाइ॥८६०॥
तुम प्रसाद मो बाचिये प्रान। तब मैं नारि छुड़ाई आन॥
तुमप्रसाद हमने सुख लयो। तुमप्रसाद बहु आनँद भयो८६१॥
तुम प्रसाद मिलियो परिवार। तुम प्रसाद कीनो दुख छार॥
बहुतकाल कीनो तबराज। हयगय दलबल बहुत समाज८६२॥
और जु पुत्रपौत्र घरभये। तिनके सुखबहु देखत भये॥
फेरितबै कछु कारनपाय। मन वैराग्य ऊपनो आय॥८६३॥
तबही सगरो परिगृह छांडि। जती भयोदिढ़ जिनव्रतमांडि॥
इहविध मुनि आपनो सरूप। कह्यो कुमरसों सरब अनूप ८६४॥
फेरि ताहाँ हीं अवसरपाय। मुनिवरके जुगपुत्र जु आय॥
सिंघग्रीव ग्रीवबाराह। आये चढ़ि विमान उत्साह॥८६५॥
वंदनश्रीजिन मुनिबर जोग। आये दोनों पुरुष मनोग॥
तिनशिर मुकुट जु करैंप्रकास। उतरे सो चैत्यालय पास॥८६६॥

अड़िल्ल।

श्री भगवंत जु चरन जोरि कर सीस हैं।
नमे तबै ततकाल खगनके ईस हैं॥
करी भगति थुति बहुत जिनेश्वर पायहैं।
कर्‌यो नृत्य अत्यंत चित्त विगसाय हैं॥८६७॥
पूजाकरि शुभचित्त जिनेश्वरकी तबै।
हर्षवंत बहु होय चले दोनों जबै॥
मंदमंद पगधरत गये मुनिपास हैं।
जोरिहाथ धरि सीस करैं अरदास हैं॥८६८॥

चालछंद।

खग कहैं धन्य मुनिराज। भवसागर तरन जहाज ॥
तुम चरनों जेजन लागैं। ततकाल अशुभ तजिभागैं८६९॥
तुम जपहि जोइ निसदीस। निहचैं होवै जगदीस ॥
यामैं कछु धोखो नाहीं। तुमसाहिब हो जगमाहीं॥८७०॥
तुमसेवा पाप विनासै। सुर मुकति पंथको भासै ॥
जगमैं तुमकरुना सागर। गुरुबुद्धि गुननिके आगर ८७१॥
मद रागदोष करि रहित। द्वावीस परीषह सहित ॥
समभाव सहजसुख लीनो। बसुकर्म जीत रजकीनो॥८७२॥
गिरशिखर कंदरावासी। मुनिवर सुख जगत उदासी ॥
तारक तुमबिन कोऊनाहीं। सुखकारक सबजगमाहीं८७३॥

दोहा।

इहविध अस्तुति भगति बहु, कीनी जुग खगबाल।
मुनिवर धरमुपदेश दिय, सुखकारन तिहँकाल॥८७४॥
करि तपसीकी वंदना, दोनों बैठे पास।
तब मुनिवर बोले बचन, निजनंदनसों भास॥८७५॥

चौपाई।

अहोपुत्र सुनियो मोबात। चारुदत्तजी इह गुनगात ॥
इनकी इच्छा पूरन करौ। कहैं सोइ ये निजचित धरौ ८७६॥
तब सुनिखग मुनिवरकी बात। बोलतभये बचन अवदात ॥
हे प्रभु चारुदत्त इहकौन। को इन मातापिता कहँ भौन८७७॥
कौनकाज आये इस ठांइ। तुम किमि जानो इन्हैं बनाइ ॥
सो हमसों कहिये गुनगेह। तातैं हम भाजै संदेह ॥८७८॥
तब मुनिवर सबरो विरतंत। कह्यो प्रगटकरि तिनहिं तुरंत ॥
तब सुनि सिंघग्रीव बाराह। मनमैं हर्षकियो खगनाह॥८७९॥

यह तो कथन रह्यो इह ठौर। आगें कथन सुनौ अब और
मानुष अर बकराको जीव। पहिले सुरग गमन तिन कीव८८०॥
देव भये दोनौं इक ठौर। पहिले स्वर्गमाहिं शिरमौर॥
अवधिज्ञानतैं पूरब बात। परताछि जानी सब उतपात॥८८१॥
ते मनमैं बहुतै सुख पाय। देखि संपदा मनबच काय॥
जानी चारुदत्त परसाद। लही संपदा सुख अहलाद॥८८२।
तातैं उनके देखैं चरन। वेई हमरेहैं दुख हरन॥
सार विमान रच्योततकार। कनकरतनमयि शोभ अपार८८३॥
जाके घंटागन सोहंत। रुनझुनकार सु नाद करंत॥
लहकति धुजामाल बहु पासि ऐसोरचि विमान सुखराशि८८४
जिनकी करि असवारी देव। आये रतनशैल स्वयमेव॥
जिनवर पूजा भक्ति उपाय। चले तहांतैं मन हरषाय॥८८५॥
जहां जतीखग कुमर दिपंत। गये तहां सो देव तुरंत॥
पहिले चारुदत्तकों ताम। हाथ जोरि तिन कियो प्रणाम॥८८६॥
पाछैं श्रीमुनिवरके पांय। कीनों नमस्कार तिहठांय॥
सिंघग्रीव देखि तब नैन। बोलत भयो बचन मुख ऐन॥८८७॥

अडिल्ल।

सुनो स्वामि मुझ बात देव हौ तौ कहा।
परि कछु सुरगमझार विवेक न तुम लहा॥
तब सुनि खगके बैन देव बोलत भये।
किमि तुम जानी बीर विवेक न हम लये॥८८८॥

चौपाई।

सो हमसौं कहिये समुझाय। कहा जानि तुम कही गुणाहि॥
सिंघग्रीव तब बोलत भयो। अपने मुखतैं खग इम चयो॥८८९॥

पहिले तुम गृहस्थकौं वीर। कियो प्रणाम जोरि कर धीर॥
पाछैं गुरुकौं कियो प्रणाम। तिनसेये पावै सुरधाम ॥८९०॥
यातैं तुमसौं हमने कही। नाहिं विवेक तुमै है सही॥
कारन कौन सोय बलबीर। पाछैं मुनिकौं नमे सुधीर ॥८९१॥
सो हमसौं कहियै समुझाय। हमरे जियको संशय जाय॥
देव कहै खग सुनि दे कान। नीके करि हम करत बखान॥८९२॥

सोरठा।

जो बकराको जीव, देव भयो थो सुरगमें।
सो खगजुग सौं ईव अपने भव लाग्यो कहन ॥८९३॥

चौपाई।

नगर बनारस अदभुत बसै। धनकन करि सो पूरन लसै॥
पौनि छतीस बसै शुभ जहाँ।राति दिवस सुख भोगैं तहाँ८९४॥
ताही पुर इक ब्राह्मण वसै। नाम सोमशर्मा तसु लसै॥
ताके गेह सुमिल्या बाम। सुखसौं रहै सदा निज धाम॥८९५॥
पुत्री दोय भई ता गेह। प्रथम सुभद्रा सुलसा तेह॥
दोनौं सुता बड़ी जब भई।पाड़े तबै पढावन लई॥८९६॥
विद्या पढि बहु भई प्रवीन। लागी वाद करन गुणलीन॥
सो विद्या मद गर्वित भई। कुंवारेही सन्यासिनि ठई॥८९७॥
लई प्रतिज्ञा इह मन माहि। जीतै वाद विवाहैं ताहि॥
तिन प्रसिद्धिता महि पर भई।तब इक तपसीने सुन लई॥८९८॥
याज्ञवल्क्य ता तपसी नाम। विद्याधर बहु गुण अभिराम॥
तर्क छंद वेदादिक लीन। जीतनवाद बहुत परवीन॥८९९॥
सो तपसी जु बनारस गयो। ब्राह्मणसुता वाद तहँ ठयो॥
जीती वाद माहिं इक नारि।ब्याही सुलसा नाम कुमारि॥९००॥

दोनों रहैं सदा इक धाम। भोग भोगवैं सुखसों ताम॥
ताके घर इक बालक भयो। तब तपसी मनमें चिंतयो॥१०१॥
सो बालक लेकरि तिहिंकाल। पीपर नीचें दीनो डाल॥
आपुन नारि पुरिस रमिगये। काहू देश बिषैं तिष्ठये॥१०२॥
दूजी बहिनि सुभद्रा नाम। सुलसा की जानौं अभिराम॥
सो पीपरके नीचैं गई। बालक डरयो जु देखति भई॥१०३॥
तब तिन निजकर लियो उठाइ। अपने घर लाई हरषाइ॥
पीपर नीचैं डरयो सु देखि। पिपलादित्य सु नाम बिशेखि॥१०४
अरु ताकों पाल्यो बहु भाइ। बड़ो कियो बहु सुख दिखराइ॥
तब तिन नारि पढ़ायो बाल। तरक छंद बहु वेद रसाल॥१०५॥

सोरठा।

मिथ्या शास्त्र अनेक, होम जज्ञ तिन बहु पढ़े।
वाद करनकी टेक, सब विद्यामैं निपुण है॥१०६॥
एक दिना तिन बाल, कह्यो सुभद्रासों बचन।
इह मो नाम गुणाल, हे माता किहविध धरयो॥१०७॥
मोसों कहि समुझाइ, तब मेरो संशय भजे।
तबै सुभद्रा वाहि, पिपलादितसों बोलई॥ १०८॥

दोहा।

ज्यौं ब्योरा पूरब भयो, आदि अंत लौ बीर।
सो जु सुभद्रा नारि ने, कह्यो बालके तीर॥१०९॥
तब जु सुभद्रावचन सुनि, चल्यो तहांतैं बाल।
जहाँ मात अरु तात थे, गयो तहाँ ततकाल॥११०॥
तिनसौं कीनों वाद बहु, जीत्यो तब सो बाल॥
तब स्वरूप तिन आपनो, सब सौं कह्यो रसाल॥१११॥

अपनी विद्या प्रगट बहु, करी जगतमैं सार।
सो प्रसिद्ध सब जगतमैं, भयो सबनि सिरदार ॥९१२॥

अडिल्ल।

हौं तो वाको शिष्य जाज्ञवलि नाम है।
विद्या बहुत पढ़ाइ कियो बुधिधाम है॥
तबमैं मिथ्या जज्ञ जगतमैं बहु कर्यो।
बहुत बोक अरु जीव होममैं हत कर्यो ॥९१३॥
मिथ्या शास्त्र जु प्रघट जगतमैं बहु कर्यो।
रुद्रध्यान करि वाद पापधरि मैं मर्यो॥
तिन पापनके जोग नरककौं गम कियो।
गये श्वभ्रगतिमाहिं तहां बहु दुख लियो ॥९१४॥

चालछंद।

छेदनि भेदनि आताप। सूली रोहन संताप।
शस्त्रनि करि देहविदारैं। दुख देहिं तहां अति मारैं ॥९१५॥
तातो करि तेल कराहीं। डारत गहि तन तामाहीं॥
पावक सीसो औटावैं। जल मांगे ताहि पियावैं ॥९१६॥
तन छेदि करैं बहु पीरा। छिरकैं तब खारी नीरा॥
तिस ठौर नहीं सुखलेस। उपजै जिय अधिक कलेस॥९१७॥
करुणा नहिं हिरदै धारैं। मिलि नारकि सबरे मारैं॥
इत्यादि महा दुख भारी। सहे दीरघकाल अपारी ॥९१८॥
तब कष्ट पाय तहँ भारी। निकस्यो मो जीव दुखारी॥
तब बोक भयो भुवि आनी। दुख सह्यो छुधा अरुपानी॥९१९॥

चौपाई।

तहाँ जज्ञमैं होम्यो गयो। फेरि आनि बकरा ही भयो॥

१ नरक गति।

फेरि जज्ञमैं होम्यो सोय। फिरि यह देह छागही होइ ॥९२०॥
ऐसी भांति भयो छै बार। होम्यो गयो सु जज्ञमझार ॥
फेरि जु मर्‍यो सातमीबार। जनम्यो प्राटक देश मझार ॥९२१॥
तहां जाय मैं बकरा भयो। चारुदत्त तहँ आमन ठयो ॥
कछुक पुण्य करि सुनिये नाथ। रुद्रदत्तके परियोहाथ ॥९२२॥
तिन पहारके ऊपरि मोह। मार्‍यो छाग बहुत करि कोह[1] ॥
चारुदत्त देख्यो तिहँ बार। दीनो ताहि पंचनवकार ॥९२३।
मंत्रप्रभाव देव मैं भयो। बहुत ऋद्धिधारक तहँ ठयो ॥
उपजी अवधि मोहि तब आइ। तब तताखिन आयो इस ठांइ॥
प्रथम हमारो गुरु है यही। तातैं करी बंदना सही॥
तब फिर दूजो देव तुरंत। कहन लग्यो अपनो बिरतंत ॥९२५॥
मंत्रप्रभाव सुनो हो भाइ। पहिले सुरग भयो सुर जाइ ॥
बहुतऋद्धि पाई तहँ सार। चारुदत्त ही के उपकार ॥९२६॥
तातैं हम दोनौंके बीर। पहिले गुरु हैं इहै सु धीर ॥
तातैं हम उपकार सुजान। नमस्कार कीनो धरि पान॥९२७॥

दोहा।

अरु तिननैं हमको सही, इतने बड़े सु कीन।
तिनकों हम क्यों नहिं नवैं, पहिले सुनि परबीन ॥९२८॥

चौपाई।

एक जु अक्षरको सुनि जोय। आधे पदको दाता होय॥
अथवा एकहि पदको सोइ। तिह नहीं भूल्यो पापी कोइ ॥९२९॥

दोहा।

और धरम उपदेशको, देबावालो होइ।
ताकौं भूलै चित्तमैं, पापी कहिये सोय ॥९३०॥

---

१ क्रोध।

तातैं हमकौं नाथजी, जापिवो जोग जु मंत्र।
और न दूजी बात को, तुम उपकार महंत ॥९३१॥
देव कह्यो बिरतंत सब, धरि मनमें उत्साह।
तब सुनिके हरषित भये, सिंहग्रीव बाराह ॥९३२॥

अडिल्ल।

तब बोले जुगदेव चारुदतजी सुनो।
हमहूँ करत बखान आपने जिअगुनो॥
हमकों अपनी टहल बतावो कोइ जू।
तब बपु होंय कृतार्थ स्वामि हम दोई जू॥ ९३३॥
सुनि देवनि के बैन चारुदत ने कही।
रुद्र आदि छह मित्र तिने ल्यावो सही॥
सुनि करि देव जु बात गये आकाश हैं।
ल्याये सबको बेगि चारुदत पास हैं॥ ९३४॥

चौपाई।

सातौ मित्र भये इक ठाँइ। मनमें सुख पायो अधिकाइ।
भुजा जोरि कंठ लगि मिले। करि असनेह चित्त सब खिले९३५
अर सबने पूंछी कुसलात। आँनंद कंद विनोद सु गात।
चारुदत्तसौं तब जुग देव। बोलत भये बचन स्वयमेव॥९३६
जेतो द्रव्य चाहिये तुम्हें। सोय प्रकासौ साहब हमें।॥
देहिं द्रव्य हम तुमको बीर। तुम परकारज करन गहीर॥९३७
सिंघग्रीव बाराहक जबै। नभचर सुरसौं बोले तबै।
हे स्वामी सुनिये हम बात। हमहीं इनकी इच्छा भ्रात॥९३८॥
पूरन करि हैं मनबचकाय। अरु चित सेवा धरि हैं आय।
बहुत द्रव्य देकरि हरषाइ। चंपापुर दे हैं पहुँचाय॥९३९॥

तब बहु सीख देइ करि देव। गये बेगि निज घरकौं एव।
पाछैं और सुनो विख्यात। खग अरु कुमर जहाँ वे भ्रात॥९४०॥

पद्धरि छंद।

तब सिंघग्रीव बाराहग्रीव। रचियो विचित्र तिनरथ अतीव।
मणिमय कंचन शोभा अपार। लागे घूंघर घनघंट सार॥९४१॥
लटकती पताका बहुत माल। रुनझुन करि शब्द करै विशाल॥
तब मुनिके वंदे चरन दोय। सबरे असवार विमान होय॥९४२॥
कीनो अकाशमैं तब पयान। पहुँचे नभचर निजनिकट थान॥
तब नगर तनी शोभा अपार। कीनी नभचर छायोबजार९४३॥
घर घर शोभा कीनी असेस। तब चारुदत्त कीनो प्रवेस॥
तहँ देखि महाउज्वल अवास। सुखपायो बहुछबि निरखितास॥
नभचर मंगल कीनों अपार। तब लेइ गयो अपने जु द्वार॥
तिनको सनमान कियो अत्यंत।इनहूमन आनँद बहुलहंत ९४५
तब चारुदत्त गुणवंत बाल। साधी अनेक विद्या रसाल।
अर जहाँ खगनकी शुभकुमारि। व्याही तिननैं बत्तीस नारि॥
अति रूपवंत गुणकरि प्रवीन। लक्षण उत्तम संयुक्त लीन।
अरु नूतन महल दिये कराय। तहँ अंतेवर सब रहेजाय॥९४७

चौपाई।

तियनसहित तहँ भुजैं भोग। पूरब पुण्य तनो संजोग॥
नारिन सहित सु क्रीड़ा करैं। भाँति भाँतिके सुख विस्तरैं ९४८
इंद्र समान करै सो भोग। व्यापै नहिं कछु पीड़ा रोग॥
सुख सागरमैं मगन जु रहैं। सब खग ताकी सेवा बहैं॥९४९॥
इस विध काल गमावैंसोइ। श्रीजिन भगति करैं मनलोइ॥
अरु बत्तीस भामिनी संग। चारुदत्त भुंजै बहुरंग॥९५०॥

एक रयन सोवत सुखपाय । चिंता भई ताहि मनआय ॥
चलिये वेगि आपने देश । बीते वासर इहां अशेश ॥९५१॥
मात नारि क्या जानै सही । कैसैं उपजंति होहै सही ॥
तातैं अब कीजिये विचार । वेगहि चलिये माता लार ॥९५२॥
इह चिंतत ही भयो प्रभात । सिंहग्रीवसौं विनयो तात ॥
हेराजनके शिरराजान । हमपर कीजे कृपा सुजान ॥९५३॥
हम घरचलैं सु आइसु देहु । इह जस शुभ पुहुमिपर लेहु ।
जिहँ सुनि करि नभचर दुखलह्यो । हे कुमार तुम अजगुतकह्यो

दोहा ।

राजभार सब लेहु तुम, हम सेवक तुम पाय ।
बहुरि बात कछुमति कहो, होत हमैं दुख भाय ॥९५५॥
चारुदत्त खगबचन सुनि, बोले तब हरषंत ।
अब हम ऊपर नेहकरि, विदा देहु गुणवंत ॥९५६॥
भाषैं बहुत कहा बचन, तुम आगे राजान ।
तुमप्रसाद हम सुखलह्यो, बहुत भाँति सु निदान ॥९५७॥
तब हठ जान्यो कुमरको, सब नभचरने संत ।
तब आइस दीनो तुरत, करि तैयारी तंत ॥९५८॥

चौपाई ।

फिरि नभचर बोले हरषाइ । सिंघग्रीव भ्राता शिरनाइ ॥
चारुदत्त बच सुनो सुजान । नीकेकरि मैं करौं बखान ॥९५९॥
मेरे कन्या रतन प्रमान । गुण लावण्य रूपकी खानि ॥
गंध्रबसेना ताको नाम । लक्षनवतं रूपकी धाम ॥९६०॥
वीनवादमैं बहुत प्रवीन । कला सहित गानेमें लीन ॥
ताने धरी प्रतिज्ञा एह । निहचै करानिज मनमैं नेह ॥९६१॥

१ गुजारा । २ आज्ञा ।

जो कोइ वीन वादमें मोय। जीतै सो मम भरता होय॥
देश देशके खगनृप आय। गुण पावै नहिं चलै खिसाय॥९६२॥
वीनावाद न कोई धरैं। हारैं सो खिसियाने परैं॥
ता जीतन को समरथ वीर। भयो न कोऊ इस थल तीर॥९६३॥
हियां खगनमैं इस्यो न कोय। वीना धरि परने इस जोय॥
एक दिनाकी सुनिये नाथ। पूछी निमतीकौं नामिमाथ॥९६४॥
गंध्रव सेनाकौं को वरै। कौन वाद वीनाकौं धरै॥
तिननै मोसौं कही विचार। चारुदत्त जो सेठि कुमार॥९६५॥
जब वह अपने घरकौं जाय। वीनवाद नर मिलि है ताहि॥
सो व्याहै गो कन्या भ्रात। इह मोसौं भाषी तिन वात॥९६६॥
सो तुम बड़े पुरुष हो वीर। परके कारज करन गहीर॥
तातैं तुम याकौं लेजाउ। वीना सहित आपने गांउ॥९६७॥
ऊंच वंश शुभ लक्षण चाहि। दीज्यो तुमही तिसहि विवाहि॥
जोबनवंत भई परवान। पावत कामबिरह दुख जान॥९६८॥
इह कहि सौंपी सो तिसघरी। चलिबेकी तब त्यारी करी॥
भामिनि पीहर दई पठाइ। बिदा मागिबेको बिहसाइ॥९६९॥
खगपतिको मन पायो तबै। भानुदत्त सुत चलियो जबै॥
चलत सेठ खग सब बिहसंत। निज २ कन्या समधीतंत॥९७०॥

अडिल्ल।

काहू हय गय अधिक दिये दल साज हैं।
काहू दासी दास जु रथन समाज हैं॥
करकंकन मनिजड़ित सु मुक्ता हार हैं।
छत्र चमर गजराज दिये भंडार हैं॥९७१॥

भूषन रतनन जड़ित बहुत आभरन हैं।
दीनों याविध जोर छत्र छवि करन हैं॥
काहू दिये सिंहासन रतननसौं जरे।
काहू मुकुट विशाल दिये मणिमय खरे॥९७२॥
दीने नग अनमोलक भर जु बिमान हैं।
बस्त्र अनूपम बहु पाटंबर थान हैं॥
दियो सैन्य बहु ताहि जु सुंदर बस्त हैं।
अरु करि निज अरदास जोरि जुग हस्त हैं॥९७३॥
बाजे बहुत निसान बजे गलगाज हैं।
दीने बहु चंडोल लगे नग साज हैं॥
जेतो शोंबो दियो खगन मन आन है।
तेतो भारामल किमि कहैं बखान है॥९७४॥

दोहा।

निज निज पुत्रिन की बिदा, करत भये खगईश।
बहु भूषन आभरन दे, बहु सनमान करीस॥९७५॥
सिंघग्रीव बाराह तसु, तिलक कीन नर नाह।
गंध्रबसेनाकी बिदा, करत भये उत्साह॥९७६॥
चलत देखि माता सुता, उमग्यो हियो बनाइ।
कंठ लागि अलंबियो, बारबार बिलखाइ॥९७७॥
अहो सुता परदेसिनी, भई करै दुख छोह।
बहुरि जु कब मिलिहै हमैं, कब देखोंगी तोह॥९७८॥
इह कहि कहि विलखति अधिक, कंठ लागि अकुलाइ।
सो उर माता मोह करि, रोवति बहु अकुलाइ॥९७९॥

१ दहेज।

निज निज पुत्रिनि सीख तिनि, दीनी करि सनमान।
हे पुत्री! कुलरीति गहि, चलियो यही सयान ॥१८०॥

चौपाई।

चारुदत्त चलियो तिस वार। सबके मनदुख भयो अपार॥
नगरलोग सब रुदन कराहिं। वारवार मनमें विलखाहिं १८१
भरि भरि अंक भेंटि परिवार। चारुदत्त चलियो तिहँवार॥
चढ़ेविमान मुकट धारिशीश। पायक भये सबै खगईश ॥१८२॥
विद्याधर निजसेना लेइ। सिंघग्रीव आदिक गुणगेहि॥
चवरंगहि दललेइ अपार। चले सबहि आकाश मझार ॥१८३॥
अति गंभीर बजैं सु निसान। बात न और सुने कोउकान॥
इतनोविभौ लिये निजसंग। ताकी गिनतीनाहि अभंग १८३
बहुत बात को कहे बनाय। पहुंचे चंपापुर ढिगजाय॥
सर्व मित्र विद्याधर संग। तिनको दलबहु नानारंग ॥१८४॥
गहिरे शब्द बजैं सु निसान। उतरे निकट नगरके थान॥
सुनि ताके दलको कुहराव। आयो मिलन नगरको राव १८६
भूप बिमलबाहन तसु नाम। महाविवेकी गुणको धाम॥
आयो चारुदत्तके पास। मिलत भये दोनों गुणरासि॥१८७॥
चारुदत्त तब सेठ कुमार। बस्तु अनूपम लै तिहि बार॥
कीनी नजर भूपकी तबै। राजा खुसी भयो बहु जबै १८८॥

अडिल्ल।

देखि नजर बहु भांति भूप हरषित भयो।
चारुदत्त गुण निरखि सुक्ख मनमें लयो॥
तब आसनपर थापि तिलक निजकर कियो।
आधो राजऽरु पाट चारुदतकौं दियो॥१८९॥

हरषित भयो नरेश विमलवाहन तव।
कीनी शोभा नगर बहुत विध निज तबै॥
पाटंबर जरवाफ बजार जु छाइयो।
रोपी बंदनवार सबन सुख पाइयो ॥११०॥

चौपाई।

बाजे तहँ बाजें अधिकार। भेरी तूर पटह सहनार॥
बाजनके जहँ बजैं समाज। और निसान बजैं गलगाज ११९॥
हरष कियो सबने असमान। जाचकजनको दीनों दान॥
नगरमाहिं कीनों परवेश। चतुरंगनिदल सहित अशेश ११२॥
नगर उछाह भयो बहु जबै। लोग परस्पर जंपै सबै॥
देखौ पुण्यतनों परभाव। आयो चारुदत्त सुखराव ॥११३॥
भानुदत्त श्रेष्ठी को नंद। घरतैं कढ़िकरि गयो जु मंद॥
लायो सो जु विभूति अपार। देखौ पुण्यतनो विवहार ॥११४
पुण्य महातम कह्यो न जाय। पुण्य महातम शुभगतिपाय॥
पुण्य एक त्रिभुवनमें सार। पुण्य महातम विभव अपार ११५॥
पुण्य महातम शिरधरि छत्र। पुण्य महातम नाशै सत्रु॥
पुण्य महातम जस विस्तरै। पुण्य महातम सुख बहु करै ११६॥
पुण्यप्रसाद दास बहु रहैं। पुण्यप्रसाद भली सब कहैं॥
पुण्यप्रसाद शोक सब भजै। पुण्यप्रसाद सबनिशिर गजै ११७
पुण्यप्रसाद काम छबि धरै। पुण्यप्रसाद बुद्धि विस्तरै॥
पुण्यमहातम बिधिकौ[1] नाश। पुण्य महातम ज्ञान प्रकाश ११८
पुण्य महातम को बहु कहै। पुण्य महातम शिवपुर लहै॥
पुण्य बड़ो या जगमें जोय। तातैं पुण्यकरो सबकोय ॥११९॥

१ कर्मोंका।

चारुदत्त पुर कियो प्रवेश। तब सुख मनमें लियो अशेश॥
सब अंतेवर संग लिवाय। जिनमंदिर सो पहुंच्यो जाय१०००
गहने मेल्यो हतो जु धाम। लियो छुड़ाइ ताहि दे दाम॥
तामैं माता भामिनि आइ। पहुंच्यो चारुदत्त तहँ जाय १००१॥
नमसकार करि वंदी मात। मिलत भयो सो करि कुशलात
तिन देख्यो सुत लोचन लाय। दई असीस चित्त विगसाय॥
चारुदत्त देखी तब भाम। बहु प्रमोद लीनो तन ताम॥
मातहि सिंघासन बैठाइ। प्रथमनारि तिह तलैं रहाइ॥१००२
सब अंतेवरनें हरषाइ। वंदे चरन दुहुन के आइ॥
तिन मनमैं बहुतै सुख लयो। मानों जनम सुफल तब भयो॥

सोरठा।

पट बांध्यो तब शीश, नारि सुमित्राके जबै।
सबपरि कीनी ईश, अवर कथा आगें सुनों॥१००५॥

दोहा।

वह बसंततिलका जबै, जो गणिकाकी धीय।
रही प्रतिज्ञा करि तहां, वेश्या अपने जीय॥१००६॥
या भव तौ मेरे सही, चारुदत्त भरतार।
और तातसम जानिये, यौं करि रही विचार॥१००७॥
तब राजादिक लोग बहु, चारुदत्त पै जाइ॥
गणिकाकी अरदास करि, अंगीकार कराइ॥१००८॥
राजादिक सबके कहें। कीनी अंगीकार॥
बहु प्रमोद आनंद सौं, दूजी करि पटनारि॥१००९॥
अरु नभचरकी कन्यकां, ब्याहीं जो जिस भांति॥
तिनकौं पट दे तीसरो, करि सनमान जु ख्याति॥१०१०

चौपाई।

चारुदत्त शुभराज कराइ। सुख निवसै दुख गयो भुलाइ॥
विलसै विभव चित्तसुखधरै। कामभोग मनबाँछित करै॥१०११
जे नभचर आये थे संग। तिनसौं नेह कियो बहुरंग॥
अरु सबको कीनों सनमान। हरषे सबै चित्त जनवान॥१०१२॥
पंचामृत दीनी ज्योंनार। बहु व्यंजन बनवाये सार॥
अरु सबको बहुआदर कियो। या विध सब संतोस्यो हियो॥
सिंघ जु ग्रीव ग्रीव बाराह। चारुदत्त जान्यो नरनाह॥
पल पल तिस विसरैं नहिं नेह। रहैं जु सरब एकही गेह॥
दिन दिन प्रीति बढ़ै चौगुनी। करैं राजनिधि भोगैं घनी॥
एकदिना नभचरके ईश। चारुदत्तकों नायो शीश॥१०१५॥
जोरि हाथ खगबोलै सोइ। अब हमकौं प्रभु आयसु होय॥
हमहूं चलैं आपने देश। बहुत दिना इहँ भये नरेश॥१०१६॥
चारुदत्त सुनि खगके बैन। कहत भये तासौं बच ऐन॥
यह मति कहो फेरि खगबात। होय दुःख हमको तुमजात॥
तब खगपति हट कीनो घनो। लई विदा साजि दल आपनो॥
चले देश अपनेकौं सोय। करि मनुहारि हरषबहु होय॥१०१८
चारुदत्तसौं फिरि कहि ताहि। गंध्रबसेना दीज्यो व्याहि॥
खगपति निजथानक सब गये। चारुदत्तघर आवत भये १०१९
रची स्वयंबर शाल बनाइ। देश देश कौं दूत पठाइ॥
तिनसौं कह्यो सबहि व्योहार। दूत गये राजनदरबार॥१०२०
दूतन करी जाय तहँ टेर। सबकौं यही जनाई हेरि॥
चलिकरि वीणावाद जु करौ। गंध्रबसेना नृपधी बरौ॥१०२१

यह सुनि देशदेशके भूप। आये इकतैं एक अनूप॥
तहँ आये वसुदेव कुमार। जादोंबंश काम उनिहार॥१०२२
बैठे सब शालामें आय। अब यह कथन कुमरिपै जाय॥
दासीकही कुमारिसों बात। चलिये बाल बेगि अवदात१०२३
देशदेशके आये भूप। देख एकतैं एक अनूप॥
वीनावाद करन तुमसंग। शालमाहिं सबआनँदरंग॥१०२४
तब कुमारि बोली स्वयमेव। सुनि दासी मेरे बच एव॥
कोइ न जीतै वीना बरों। तब हौं जिनकी दीक्षा धरों॥१०२५

दोहा।

यह कहिकें ठाढ़ी भई, वीणा लीनी पानि।
चली तबहि शाला विषैं, रूपकलाकी खानि॥१०२६॥
निकसी मारगके विषैं, पुरजन देखी सोय।
रूपरंग अवलोकि करि, कहत भये सब लोय॥१०२७॥
कोई मुखतैं इमि कहैं, सुरकन्या है एव।
कोई नागसुता कहैं, देखि रूपकी टेव॥१०२८॥
कोई विद्याधर सुता, भाषैं देवी जोय।
जोवन करि संयुक्तसो, रूप न पूजे कोय॥१०२९॥

अड़िल्ल।

जाको सोहे बदन जु पूनम चंद है।
कनककांति समगात मनो मकरंद है॥
लोचन अरुण विशाल सुखद आतिही बने।
चंचल मीनसमान जिसे सारँग[1] तने॥१०३०॥

चौपाई।

करै कटाक्ष दृष्टि जनवान। भ्रकुटी कुटिल जु मनो कमान॥
माथैंमांग विराजैं बार। अतिकोमल बहुश्याम सुढार॥१०३१॥

---

१ मृग के समान।

ऊंचीनाक इसी उनहारि। मनु कंचनकी धरी सम्हारि ॥
दशनपांति दीखत चमकांति। कुंदकली दाड़िमकी भांति ॥
काननकुंडल रतनानि जड़े। मानो आप विधाता घड़े ॥
सोहैकंठ मोतियनमाल। जाकी जगमग जोति विशाल ॥
उर उरोज घटकनक सुढार। केहरिकी समलंक निहार ॥
कोमल कमलपानि ता बाल। बाहुजुगल सोभियो विशाल ॥
जंघा जुगल प्रबल अभिराम। मानो कोमल कदलीथाम ॥
अरुणमहा अतिकोमल पाय। हंसचालिसम चालचलाय ॥
अतिसुगंध ताको जु शरीर। आबैलपट जु चलै समीर ॥
दिव्याभरण जु पहरेअंग। बहुतभांति आभूषण रंग ॥
मंदमंद पगधरती बाल। लियें सोय कर वीन रसाल ॥
गंध्रवसेना आई तहां। सबरेभूप जुरे हैं जहां ॥१०३७॥
देखि कुमारिको महासरूप। अचरजवान भये सब भूप ॥
एक जु दृष्टिपरें गिरिजांइ। वीना गहिकर खरे रहांय ॥१०३८
एक जु भाजि पिछारे परैं। लज्जित होके आंसू भरैं ॥
वीनाले इक सन्मुखजांय। गुणपावे नहिं चले खिसियांइ १०३९
एक कहैं यह धन्य कुमारि। ऐसोव्रत जिन धर्यो विचारि॥
ऐसैं बहुत वितीत्योकाल। जीते कोउ न वीणाख्याल ॥१०४०॥
तब बोले वसुदेव कुमार। जान्यो नहीं रागधुनिसार ॥
करती कहावाद तुमनारि। जा वीणागुण कहो विचार॥१०४१
कै पंकतिको वीणा होय। कौनसमय बाजे कहि कोय ॥
लज्जितह्वै बोली सु कुमारि। वीणाके गुणलहे न सार॥१०४२॥
अहोनाथ! तुमही उच्चरो। वीनराग कीरति विस्तरो ॥
केतीभांति सुनी गुरुपास। सो कहिये मो पूजेआस ॥१०४३॥

तब बोले वसुदेवकुमार। इकदश भांति वीन गुणसार॥
सबविध ताहि बताईतबै। कीरति महिपर प्रगटीजबै॥१०४४
तब कुमारि लज्जित हुइगई। घूंघटकाढ़ि जु ऊभी भई॥
तब वसुदेव लियो करवीन। कियो रागनाना परबीन १०४५॥
पशुपंछी सबमोहे सोय। कालभुजंग विषम जो होय॥
मोहे सबनर नरपतितीव। विकलत्रय मोहे सब जीव॥१०४६॥
मांगीविदा लोग सब गये। चारुदत्त गृह उत्सव ठये॥
पंचशब्द बाजें अनिवार। ढोल मृदंग तूर सहनारि॥१०४७॥
हरे वसनसौं मंडप छाय। चारों कंचनखंभ लगाय॥
मुक्ताफलकी बंदनवार। निरमोलिक नगलागे सार॥१०४८॥
वरन चरनकी कनी अपार। तिनको पूरो चौक सम्हार॥
अतिउज्वल देखियेअभंग। शोभाकहत बने नहिरंग १०४९॥
जुवतीगावैं मंगलाचार। विप्र वेदधुनि करैं अपार॥
दुलहा ब्याहनचलियो जबै। पहरेभूषण पट तिन तबै १०५०॥
रतनजड़ित शिर राजैछत्र। ढुरेचमर ऊपर जु पवित्र॥
आयो वेदीमाहिं कुमार। सबमन आनँद भयो अपार॥१०५१॥
सोहैं कामदेव छवि धारि। उत खगकन्या रतिउनहारि॥
अगिनिसाखि दै कीनो ब्याह। दोनौं तरफ भयो उच्छाह॥
करि विवाह समदी सुंदरी। शोबोबहुत दयी तिस घरी॥
करकंकन मणिमंडित हार। दीने चमर छत्र भंडार १०५३॥
हय गय पट्टन दिये अपार। अरु अपनी कीनी मनुहार॥
करि सनमान विदा तब दई। होत भये सबही सुखमई १०५४

दोहा।

चारुदत्त राजहि करै, पालै परजा न्याय।
चौंतीस भामिनिसहित करहि भोग अधिकाय॥१०५५॥

कीनो जस सब लोकमैं, सकल जीव हितकार ।
राज करै विलसै विभौ, चारुदत्त नृप सार ॥१०५६॥
नाना सुख भुंजै अतुल, दयादानपर चित्त ।
करै उछाह अनेकविध पूजै जिनवर नित्त ॥१०५७॥
महा सुक्ख जस लोकमै, होय मिटै सब सल्ल ।
एक पुण्यतैं जानिये, भाषैं भारामल्ल ॥१०५८॥
राज कियो बहु दिवसतिन, बढ्यो बहुत परिवार ।
कीरति प्रगटी लोकमैं, चारुदत्तकी सार ॥१०५९॥

पद्धड़िछंद ।

इक दिना आप हरख्यो नरेश । बैठो सिंहासन सुख अशेश
ताकी छवि है अतिही अनूप । अर पायक ठाढ़े सकल भूप ॥
मणिमुकुट महारवितैं प्रकास । राजे तसु शीश महा उचास॥
सोहैं बहु भूषन अंगमाहिं । राजे सो इम जिम इंद्र आहि ॥
बहु चमरढुरैं शुभतायशीश । अलवेस साहित सोहै नरीश॥
तब कोई एक निमित्त पाय । उपज्यो उरमैं वैराग्य आय ॥१०६२
तब चारुदत्त चिन्त्यो सु भूप । अब त्यागीजे संसार कूप ॥
कीजै मुनिसंगति भली आहि।लीजै संजमव्रत चित्तचाहि१०६३

चालछंद ।

सबराजभार तिहँवार । सौंप्यो ततखिन परिवार ॥
आपन वनको पग धार्‌यो । निजमत अंगीकृत कार्‌यो १०६४
बहुजीव सहित नृपधीर । पहुंचे वनमैं गुरुतीर ॥
भवभोगसों विरकत होय । दीक्षाधारी मलखोय ॥१०६५ ॥
त्याग्यो जिन कपट कषाय । प्रगट्यो समता रस भाय ॥
छाड़ियो राग अरु दोष । हिंसा अदया भई मोष ॥१०६६॥

किये मास मास उपवास । कीनो सम्यक उरवास ॥
धनिधन्य मुनी उपगार । जान्यो अपनो सुखसार ॥१०६७॥

चौपाई ।

दर्शन ज्ञान चरित तपधार । चारुदत्त आराधै सार ॥
तीनकालके योग सु धरै । अधिक तपस्या मनवच करै १०६८
पालै दशधा धर्म विचार । अंतसमाधि भाव उरधारि ॥
और सरन जियको कोउनाहिं । पंचपरम गुरुसरन कहाहिं ॥
निज आतमको ध्यावै सोय । तातैं कर्म निर्जरा होय ॥
रागदोष ताजि समताआनि । अंतसमाधि थकी तजिप्रान१०७०
निर्मलसार समाधि उपाय । अहिमिंदरपद पायोजाय ॥
सर्वारथसिधिके जु विमान । महापुण्यके उदय प्रमान १०७१॥
दिव्यमहा उतपाद सुजान । मणिमय सेज जहां शुभथान ॥
अंतमुहूरत माहिं सुभाय । पूरन जौवन तिहिंठां पाय१०७२॥
भूषन वसन सहित शृंगार । रतनमयी नाना परकार ॥
भयो जु चारुदत्त अहमिंद्र । पूरवपुण्य तनोफल वृंद ॥१०७३॥

अडिल्ल ।

श्रेनिक निज करजोरि भूप लागे कहन ।
हे गुरु ! सुखकी रासि सवनि संशय दहन ॥
अहिमिंदर पदमाहिं होति किहँ रीति है ।
सो कहिये विस्तार मोहि धरि प्रीति है ॥१०७४॥

चौपाई ।

गणधर कहैं सुनो नरराय । अहिमिंदर गुण चित्तलगाय ॥
एकहाथको जान शरीर । सप्तधातु वर्जित गुणधीर ॥१०७५॥
जौवन सदा स्वच्छ शुभसार । मालादिक पहरैं सिंगार ॥
लोक नाडिके सोय प्रमान । ज्ञानवान राजत है जान१०७६॥

ताहीके जु समान विचार। तिनहिं विक्रिया तनो विथार॥
वीतराग भावनपरसाद। करै न सो विक्रया सु वाद॥१०७७॥

दोहा।

जानि विपाक सु धर्मको, सबहि धर्म सेवंत।
नित्य शुद्ध जियद्रव्यको, जहाँ विचार लहंत॥१०७८॥

सवैया इकतीसा।

जा विमानगेहमैं जिनेंद्रधाम शोभित हैं,
तहां जिनराजकी सु पूजा करैं चावसों।
मूलथान छोड़िके न तीनलोकके मझार,
जात न जिनेशथान तीर्थबंदै भावसों॥
जबै ढाईदीपमैं कल्यान प्रभुके जु होइ,
आसनादि कंपत नमैं तहां उछावसों।
माहो अहमिंद्र मिलैं धर्महूकी गोष्टि करैं,
शेष कर्मबंध खिरै आतमा स्वभावसों १०७९॥

अडिल्ल।

आयु तहां तेतीस उदधिकी जानिये।
साढ़े सोरह मास उसास बखानिये॥
बरष गये तेतीस सहस्र अहारकी।
मनसा उपजनिमात्र तृपति बलभारकी॥१०८०॥
लेश्या सुकल सुभाव विशुद्धभनी महा।
इत्यादिक महिमा निदान पदसो कहा॥
धन्य जती तप ठानि भये अहमिंद्रजी।
कलमष सबं निवार पुनीत अबंधजी॥१०८१॥

दोहा।

अवर जहां अहमिंद्र बहु, सम्यक वान पुनीत।

धर्मगोष्टि तिन साहित सो, करहिं परस्पर मीत ॥१०८२॥
परमप्रीति राखैं सकल, ऐसो सार सुथान।
महासुक्खकर जानिये, महिमा धर्म महान ॥१०८३॥
चारूदत्त मुनींद्रसो, अहमिंदरपद होइ।
तिनकौं हम सुमिरैं सदा, करि आनँद चित जोइ ॥१०८४॥
तहां थकी सो भव्य चय, निरमल नरभव पाय।
जिनमुद्रा तपधारिके, करम खेपि शिवजाय ॥१०८५॥

चौपाई।

अवर जीव बहु ताके संग। लीनी तिन दीक्षा मनरंग॥
ते सब निज निज तप अनुसार। पद पायो तिननै सुखकार॥
सकल मूल यह ग्रंथ सु भाय। जानो भविजन मनबचकाय॥
दयाधरम मनकीजे चित्त। जीवसुखातम ध्याय पवित्त १०८७॥
धर्म समान न सुखदातार। धर्म भवोदधि तारनहार॥
यह लखि कीजै धर्म सदीव। जामैं गर्भित सर्व अतीव॥१०८८॥
चारुदत्त बहु पुण्य उपाय। ताफल अहमिंदरपद पाय॥
अब सोई चय तहतैं बीर। निरमल नरभव पाय शरीर॥
धरि तपसार करमगण जार। बसि हैं शिवपुर सिद्धमझार॥
धर्म तनी महिमा जु अपार। कहत न आवै ताको पार॥

सवैया तेईसा।

चारुजुदत्त मुनिंदतनो विरतंत रच्यो संछेप बनाइ।
पुण्य उपाय महीपर सोई लह्यो फल तास महाअधिकाइ॥
और कहा अधिकार कहैं अब मोक्ष लहै एकहि भवपाइ।
जे पढ़िहैं सुनिहैं जु चरित्र लहैं सुख संपति सो अधिकाइ१०९१

अड़िल्ल।

आगें बुधिधर भये सु आचारज महा।

सोमकीर्ति गुणराशि चरित यह तिन कहा ॥
तिनहीके अनुसार अरथ कौं लाय कैं ।
सँघई भारामल्ल जु कियो बनाय कैं ॥१०९२॥

चौपाई ।

फरकाबाद नगर हम तनो । धरम करमकरि सुंदर बनो ।
तहां हमारो वास सुथान । जाति खरौवा कुल शुभवान१०९३
दूजो देश भदावर वास । जहां धरमको महा प्रकास ॥
भिंड जु नगर दिपै शुभतहां । वसत लह्यो हम बहुसुख जहां ॥
एक दिवस चिंत्यो मन एह । चरित जु चारुदत्त गुणगेह ॥
कीजे भाषा सुखदातार । तब कीनो चौपई विचार १०९५॥
भन्यो चरित यह चित विकसाय । पुण्यहेत जानो भवि भाय॥
अवर सुनो यह जाविध भयो । सो कारन भाषत निहचयो ॥
नगर जहानाबाद रहांय । पदमावतिपुरबार कहांय ॥
विश्वनाथ संगति शुभपाय । तब यह कीनो चरित बनाय१०९७

दोहा ।

होनहार कारण मिल्यो, तिनहीको उपदेश ।
कारन बिना न भव्यजन, काज होय लवलेश ॥१०९८॥

चौपाई ।

सँगही परसराम गुणवान । तिनसुत भारामल्ल सु जान ॥
तासम हीनबुद्धि नाहिं आन । तिन कीनो चौपई बखान ॥
छंद भेद कछु जान्यो नहीं । पिंगल मैं न देखियो कहीं ॥
नाममाल व्याकरन सुभाव । पढ्यो न काव्य एकहू भाव ११००
अक्षर अर्थ भंग तुक होय । लेहु सम्हारि तहां बुधि लोय ॥
बार बार जंपौं करजोरि । बुधिजन देहु मोहि मति खोरि ११०१

संबत बिक्रमराय सु जान। बरस अठारहसै परवान।
तेरह ऊपर बर्ष पवित्र। श्रावनबदी पंचमी मित्र॥११०२॥
शुक्र सुवार नखत शुभसार। तादिन कियो पूर्न हितधार॥
जो यह कथा सुनै धरि भाव। बहुसंपाति सुख पावै ठांव ११०३
पुत्र जन्म शुभ ताकैं होय। महिमा आन बतावै कोय॥
बार बार कहा कहौं बढ़ाय। पालो जीव दया सुखदाय ११०४
भारामल्ल कहै चितलाइ। ते ज्ञानी समझें निज पाय।
शुद्धातम लौ लावत भ्रात। अशुभ करम सबही मिट जात॥

कुंडलिया।

गणिका संगति दोष करि, चारुदत्त गुणखानि।
बहु दुखको प्रापति भयो, गूंथे चमरा जान॥
गूंथे चमरा जान लोभ करि वेश्या मंडित।
प्रीति लगावति बहुत औरसों गुण करि खंडित॥
निंद्य महा जगमाहिं जाहि जिय दया न तानिका।
तातैं भविजन जानि जोग्य तजि दीजै गनिका॥११०६॥
साईं जो सर्वज्ञने भाषें बचन जु सार।
धर्म दया संयुक्तसो, कह्यो परम हितकार॥
कह्यो परम हितकार गुननिकी निधिसो जानौ।
जो कोई नर याहि करत अंगीकृत मानौ॥
पुरुष तेइ जगमाहिं सबनि शिरऊपर भाई।
गुनसौं प्रीति लगाइ सदा सो पूजहु साँई॥११०७॥

दोहा।

चारुदत्त नृपकी कथा, पढ़ै सुनै जो कोइ।
पहिलै पावै देवपद, पाछें शिवसुख होइ॥११०८॥

छप्पय।

इति श्रीसेठिकुमार चारुदत्तोऽपि चरित्तर।
सोमकीर्ति गुणराशि विरचितिन कियो प्रथम वर॥
तिह अनुसार विचार करी भाषा बुधिसारू।
सँघई भारामल्ल कहत सबकौं सुखकारू॥
चारुदत्त संपति विभौ अहिमिंदरपद कहि वरन।
इस भांति चरित बाँचौ सुनौ सकल संघ मंगल करन॥११०९

जैसी पुस्तक मो मिली तैसी छापी सोय।
शुद्ध अशुद्ध जु होय कहुं दोष न दीजै मोय॥

श्रीचारुदत्तचरित्र भाषा समाप्त।



लावनी

मत करो प्रीति वेश्या विषबुझी कटारी, है यही सकल रोगोंकी खानि हत्यारी ॥
औपधि अनेक है सर्प डसेकी भाई, पर इसके काटेकी नाहीं कोइ दवाई ॥
तनलगे बान तो जीवित हू बच जाई, पर इसके नैनके बानसे होय सफाई ॥
है रोम रोम विषभरी करो ना यारी, है यही सकल रोगोंकी खानि हत्यारी ॥
यह तन मन धन हर लेय मधुर बोलीमें, बहुतोंका करे शिकार उमर भोलीमें ॥
कर दिये हजारों लोट पोट होलीमें, लाखों का मन कर लिया कैद चोलीमें ॥
गई इसी कर्ममें लाखोंकी जिमिदारी, है यही सकल रोगोंकी खानि हत्यारी ॥
हो गये हजारों के बल वीरज छारा, लाखोंका इसने वंशनाश कर डारा ॥
गठिया प्रमेह आदिकने देश बिगारा, भारत गारत हो गया इसीका मारा ॥
कर दिये हजारों इसने चोरअरु ज्वांरी, है यही सकल रोगोंकी खानि हत्यारी ॥
इसही ठगनीने मद्यमांस सिखलाया, सब धर्म कर्मको इसने धूर मिलाया ॥
अरु दया क्षमा लज्जाको मार भगाया, ईश्वरकी भक्तिका मूलनाश करवाया ॥
हैं इसके उपासक रौरव(नर्क)के अधिकारी, है यही सकल रोगोंकी खानि हत्यारी
वह नव युवकों को नैन सैन से खावे, अरु धनवानोंको चट्ट गट्ट कर जावे ॥
धन हरण करे अरु पीछे राह बतावे, करे तीन पांच तो जूते भी लगवावे ॥
पिटवाकर पीछे लावे पुलिस पुकारी, है यही सकल रोगोंकी खानि हत्यारी ॥
फिरकियापुलिसनेखूबअतिथि सत्कारा, हो गईसजा मिलामजाइश्कका सारा ॥
जो झूठ होय तो सज्जन करो विचारा, दो त्यागझूठ करोसत्यवचन स्वीकारा ॥
अवतजो कर्मयहअतिनिंदित दुखकारी, है यही सकल रोगोंकी खानि हत्यारी ॥

समाप्त ।